राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 ओडिशा ट्रेन हादसा:हादसे के बारे में सुनकर बहुत दुख हूं...

रूस जल्द ही तैयार करेगा सुरक्षा संबंधी नई रूपरेखा, पुतिन बोले- मॉस्को ... 12

वर्ष : 11 | अंक : 24 | पटना, रविवार, 04 जून, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 41°C

न्यूनतम तापमान 28.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,995
चांदी	72,500
सेंसेक्स	57,635
निफ्टी	16,986

पूर्णिया में सड़क दुर्घटना में पांच बारातियों की मौत, चार की हालत गंभीर

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया। बिहार में पूर्णिया जिले के मरंगा थाना के पास सड़क दुर्घटना में तीन बच्चों समेत पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि नौ लोग घायल हो गए। घायलों में चार की हालत गंभीर है। पुलिस के मुताबिक जोकीहाट भंसिया गांव निवासी हासिम के पुत्र असलम की शादी शनिवार को खगड़िया बंधेरा गांव में थी। बारातियों से भरी कार अररिया के भटगामा से खगड़िया जा रही थी। कार में मो. जलील, अब्दुल सम्मद, सोनी और सोनी के बच्चे और ससुर सवार थे। घटना के चश्मदीद नेरुल सलाम ने बताया कि बारातियों से भरी कार गुलाबबाग साइड से आ रही थी। कार की रफ्तार बहुत तेज थी। कार मरंगा थाना से 50 मीटर की दूरी पर मरंगा बाईपास के किनारे खड़े ट्रक के पीछे से जा टकराई। कुछ शव गाड़ी में ही फंस गए। शव को उन्होंने अपने हाथों से

निकाला जबकि घायलों की हालत काफी नाजुक बनी हुई है। सभी को जीएमसीएच इलाज के लिए भेजा गया है। कार में 14 लोग सवार थे। दुर्घटना की सूचना पर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इधर, मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

मुख्यमंत्री ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की: मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूर्णिया जिले के मरंगा थाना क्षेत्र के बाइपास पर हुये भीषण सड़क हादसे में 5 लोगों की मौत पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने इस घटना को काफी दुखद बताया है। मुख्यमंत्री ने शोक संतप्त परिवारों को दुख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री ने इस सड़क हादसे में घायल लोगों के समुचित इलाज के भी निर्देश दिए हैं, साथ ही उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की है।

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री ने कबीर जयंती के अवसर पर दी शुभकामनाएं

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कबीर जयंती के अवसर पर बिहारवासियों एवं देशवासियों को हार्दिक शुभकामनायें दी हैं। मुख्यमंत्री ने अपने संदेश में कहा है कि संत कबीर हिन्दी साहित्य के भक्ति कालीन युग में ज्ञानाश्रयी - निर्गुण शाखा की काव्य धारा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आन्दोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया। जब भी भारत में धर्म, भाषा एवं संस्कृति की चर्चा होती है तो कबीर दास जी का नाम सबसे पहले आता है क्योंकि कबीर दास जी ने अपने दोहों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को दशार्या है।

मुख्यमंत्री ने रेल हादसे पर जताया दुख

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ओडिशा के बालासोर में बहनागा रेलवे स्टेशन के पास हुई भीषण रेल दुर्घटना में 200 से अधिक लोगों की मृत्यु को अत्यंत दुखद बताया है। मुख्यमंत्री इस दुखद घटना से मर्माहत हैं। मुख्यमंत्री ने इस हादसे में मृत लोगों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है एवं दुख की इस घड़ी में मृतक के शोक संतप्त परिजनों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। की है। मुख्यमंत्री ने दुर्घटना में घायल हुये लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी ईश्वर से कामना की।

बचाव एवं राहत कार्यों में तेजी लाने की जरूरत :तेजस्वी

पटना। उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने ओड़िसा के बालासोर में हुई भीषण रेल दुर्घटना पर गहरी चिंता व्यक्त किया और इस दुर्घटना में हताहत लोगों के प्रति गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है । श्री तेजस्वी यादव ने कहा कि रेल मंत्रालय को रेल परिचालन में अधिक सतर्कता और सावधानी बरतने की आवश्यकता है। उपमुख्यमंत्री ने रेल प्रशासन एवं ओड़िसा सरकार से अनुरोध किया है कि वे बचाव एवं राहत कार्यों में तेजी ला कर पीड़ितों की समुचित सहायता करें। इस दुख की घरी में मे शोक सम्पद परिवार के साथ खड़ा हूं।

रेल हादसे पर प्रधानमंत्री व रेल मंत्री से कई सवाल बनते हैं: कांग्रेस

नईदिल्ली। कांग्रेस ने ओडिशा के बालासोर जिले में हुए भीषण रेल हादसे पर दुख जताते हुए शनिवार को कहा कि इस दुर्घटना से यह बात भी उजागर हुई है कि रेलवे में सुरक्षा हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। मुख्य विपक्षी दल ने कहा कि इस हादसे को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से कई सवाल बनते हैं, लेकिन फिलहाल पहली प्राथमिकता राहत और बचाव कार्य की है। पार्टी ने स्थिति का जायजा लेने के लिए अपने दो वरिष्ठ नेताओं अधीर रंजन चौधरी और ए चेल्ला कुमार को घटनास्थल पर भेजा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पार्टी के सभी नेताओं को निर्देश दिया है कि वह अपने स्तर पर हर संभव मदद करें।

शिवानंद तिवारी की धर्मपत्नी के श्राद्धकर्म में शामिल हुये मुख्यमंत्री

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पूर्व सांसद श्री शिवानंद तिवारी की धर्मपत्नी स्व बिमला देवी के श्राद्धकर्म में शामिल हुए । बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर के 3 देशरत्न मार्ग स्थित सरकारी आवास पर आयोजित श्राद्धकर्म में शामिल मुख्यमंत्री ने स्व बिमला देवी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस दौरान बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर, राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव, महाधिवक्ता पीके शाही सहित अन्य जन प्रतिनिधिगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के पूर्व तैयारियों की समीक्षा की, अधिकारियों को दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

बाढ़ और सुखाड़ को लेकर पूरी तरह रहें अलर्ट : नीतीश

बोलें- नदियों के गाद की उड़ाही एवं शिल्ट हटाने को लेकर तेजी से काम करें

मुख्य बिन्दु

- जिलाधिकारी सभी प्रकार की तैयारियां पूर्ण रखें।
- हर घर नल का जल योजना को पूरी तरह मेंटेन रखें।
- जल जीवन हरियाली अभियान की सतत निगरानी करें और बेहतर ढंग से क्रियान्वित करें।
- निजी मकानों में भी लोगों को छतवर्षा जल संचयन के लिए प्रेरित करें।

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को लोक संवाद में संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के पूर्व तैयारियों की समीक्षा की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुये कहा कि बाढ़ और सुखाड़ दोनों की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए सभी विभाग के अधिकारी और जिलाधिकारी पूरी तरह अलर्ट रहें आपदा प्रबंधन विभाग सतत अनुश्रवण करते रहे कि और क्या-क्या करने की जरूरत है ताकि लोगों को कोई दिक्कत नहीं हो। उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी नदियों को आपस में जोड़ने की कार्ययोजना बनाएं नदियों के गाद की उड़ाही एवं सिल्ट हटाने को लेकर तेजी से कार्य करें इससे बाढ़ का खतरा भी कम रहेगा और नदियों की जल संग्रहण क्षमता भी बढ़ेगी, साथ ही सिंचाई कार्य में और सुविधा होगी। उन्होंने कहा कि भू-जलस्तर पर नजर रखें और पेयजल का इंतजाम रखें। हर घर नल का जल योजना से लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है, इसे पूरी तरह मेंटेन रखें। मुख्यमंत्री ने कहा कि जल जीवन हरियाली अभियान के तहत जल संरक्षण को लेकर कार्य किए जा रहे हैं, इसकी भी सतत निगरानी करें और इसे बेहतर ढंग से क्रियान्वित करें। निजी मकानों में भी लोगों को छतवर्षा जल संचयन के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि पिछले वर्षों की तुलना में इस वर्ष गर्मी ज्यादा है। इसे ध्यान में रखते हुये सभी प्रकार की तैयारी रखें और लोगों को सचेत करें। आग लगने की घटनाएं भी सामने आ रही हैं, उससे बचाव के लिए त्वरित कार्रवाई करें लू से बचाव के लिए भी सभी व्यवस्था रखें और लोगों को अलर्ट करें।

हर चीज पर नजर रखनी है और पूरी तरह से सतर्क रहना है। मुस्तैदी के साथ सभी लोग लगे रहेंगे तो आपदा की स्थिति में लोगों को राहत मिलेगी। सभी संबद्ध विभाग जिलाधिकारियों के साथ बैठक कर वस्तु स्थिति की जानकारी लें और उसके आधार पर कार्य करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिलाधिकारी अपने-अपने जिलों की स्थिति का आकलन करें उसके अनुसार सभी प्रकार की तैयारियां पूर्ण रखें। जिलाधिकारी क्षेत्रों में जाएं और वस्तु स्थिति की जानकारी लें ये प्रखंड स्तर पर लोगों से मीटिंग करें और उन्हें सतर्क करें। जिलाधिकारी क्षेत्र में लोगों से बात करें और पिछले वर्षों में आपदा की स्थिति में किए गए कार्यों को भी ध्यान में रखते हुए आपदा से निपटने हेतु कार्ययोजना बनाएं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बाढ़ और सुखाड़ की स्थिति में प्रभावितों को हरसंभव मदद करती है। इसे ध्यान में रखते हुये सभी संबद्ध विभाग और अधिकारी सतर्क रहें। बैठक में मुख्यमंत्री ने आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तिका बाढ़ आपदा प्रबंधन के लिए मानव संचालन प्रक्रिया- 2023 का विमोचन किया। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलों के जिलाधिकारियों ने मुख्यमंत्री को अपने-अपने जिलों में संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के पूर्व तैयारियों के संबंध में जानकारी दी साथ ही आश्वस्त किया कि अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर लोगों से मिलेंगे, जमीनी स्थिति का आकलन करेंगे और उसके अनुसार समस्याओं का समाधान करेंगे।

ये रहें मौजूद: बैठक में उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, आपदा प्रबंधन मंत्री शाहनवाज, वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्यमंत्री विजय कुमार चौधरी, ऊर्जा सह योजना एवं विकास मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव, जल संसाधन मंत्री संजय कुमार झा, खान एवं भूतत्व मंत्री डॉ रामानंद यादव, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री ललित कुमार यादव, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री लेशी सिंह, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार कृषि मंत्री कुमार सर्वजीत, लघु जल संसाधन मंत्री जयंत राज, पंचायती राज मंत्री मुरारी प्रसाद गौतम, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष उदयकांत मिश्रा मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, पुलिस महानिदेशक आरएस भट्टी, विकास आयुक्त विवेक कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, संबद्ध विभाग के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव, सचिव, अन्य वरीय पदाधिकारीगण एवं एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के पदाधिकारी उपस्थित थे, जबकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलों के जिलाधिकारी, वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक जुड़े हुए थे।

प्रदेश में औसत 952 मिलीमीटर वर्षा होने का पूर्वानुमान

बैठक में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के निदेशक ने इस वर्ष मॉनसून सत्र के दौरान वषार्पात के पूवानुर्मान की जानकारी देते हुए बताया कि मॉनसून के दौरान देश में सामान्य से कम, 06 प्रतिशत औसत वर्षा होने का पूवानुर्मान है। बिहार में औसत 952 मिलीमीटर वर्षा होने का पूवानुर्मान है जो कि सामान्य से थोड़ा कम है। जून माह में बिहार में पहले होनेवाले वर्षा के अनुपात में इस बार 35 से 55 प्रतिशत ही वर्षा होने की संभावना है। जून के तीसरे सप्ताह में बिहार में मॉनसून के प्रवेश करने की संभावना है। बैठक में आपदा प्रबंधन सह जल संसाधन विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संभावित बाद, सुखाड़ एवं अन्य आपदाओं की पूर्व तैयारियों से संबंधित मुख्य बातों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के अनुसार बाढ़ पूर्व सभी आवश्यक तैयारियां की जा रही है। सभी जिलों एवं संबद्ध विभागों को विस्तृत दिशा-निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने नाव संचालन, पॉलिथिन शीट, राहत सामग्री की उपलब्धता, दवा, पशुचारा, बाढ़ आश्रय स्थल, सामुदायिक रसोई, ड्राई राशन पैकेट्स / पैकेट्स, जिला आपातकालीन संचालन केंद्र आदि के संबंध में भी विस्तृत जानकारी दी। बैठक में स्वास्थ्य विभाग सह पथ निर्माण विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत नगर विकास एवं आवास विभाग के अपर मुख्य सचिव अरुनीश चावला, लघु जल संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव रवि मनु भाई परमार, कृषि सह पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के प्रधान सचिव डॉ बी राजेन्दर ऊर्णा सह लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के प्रधान सचिव संजीव हंस, ग्रामीण कार्य विभाग के सचिव पंकज कुमार पाल, भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि, पंचायती राज विभाग की अपर सचिव प्रीति पोंगरिया ने अपने-अपने विभागों द्वारा संभावित बाढ़ एवं सुधार की स्थिति से निपटने को लेकर की गई तैयारियों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी।

केन्द्र सरकार ने रेल को चौपट कर दिया : लालू

रेल हादसे की उच्च स्तरीय जांच की मांग की

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। ओडिशा के बालासोर के समीप शुक्रवार की देर शाम हुए भीषण रेल हादसे पूर्व रेल मंत्री और राजद सुप्रीमो लालू यादव ने लापरवाही का कारण बताया है। उन्होंने शनिवार को पटना में बयान देते हुए कहा कि लापरवाही की वजह से भीषण रेल हादसा हुआ है। साथ ही केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि इन लोगों ने रेल को चौपट कर दिया है। लालू यादव ने अपने अनुभव शेयर करते हुए कहा कि कोरोमंडल ट्रेन चेन्नई जाती है। मैंने भी उस ट्रेन से यात्रा की है। इस ट्रेन बड़ी संख्या बिहार और पश्चिम बंगाल के लोग सफर करते है। हादसे में बड़ी संख्या में यात्री हताहत हुए हैं। पूरी तरह से लापरवाही बरती गई है। सावधानी नहीं बरता गया, जिस कारण कैजुअलिटी हुई है। जानकारी मिली है कि 800 लोगों की मौत हुई है। पूर्व रेल मंत्री लालू यादव ने इसकी उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। उन्होंने कहा है कि इस हादसे के लिए जो लोग जिम्मेवार है उन पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। मृतकों के आश्रितों को 10-10 लाख का मुआवजा और घायलों को पांच लाख मुआवजा दिया जाये।

डॉ शकील अहमद खान चुने गए कांग्रेस विधानमंडल दल के नेता

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के मुख्यालय सदाकत आश्रम में पार्टी के विधायकों और विधान पार्षदों की अहम बैठक का आज आयोजन किया गया। इस बैठक में सर्वसम्मति से कांग्रेस विधानमंडल दल के नेता के रूप कदवा के विधायक और अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के राष्ट्रीय सचिव डॉ शकील अहमद खान को कांग्रेस विधानमंडल दल का नेता चुना गया। बैठक के शुरूआत में उड़ीसा में हुए ट्रेन हादसे में मृतकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई और उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन भी धारण किया गया। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व बिहार प्रभारी राज्यसभा सांसद शक्ति सिंह गोहिल पर्यवेक्षक के तौर पर उपस्थित रहें। साथ ही इस बैठक में बिहार कांग्रेस के प्रभारी भक्त चरण दास सहित एआईसीसी के महासचिव तारिक अनवर और प्रदेश अध्यक्ष राज्यसभा सांसद डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह मौजूद रहें। बताते चले कि विधायकों व विधान पार्षदों द्वारा सर्वसम्मति से लिए गए इस फैसले के कारण चुनाव के बगैर ही डॉ शकील अहमद खान को निर्विरोध विधानमंडल दल का नेता चुन लिया गया। कांग्रेस के विधानमंडल दल के पूर्व नेता अजीत कुमार शर्मा के कार्यकाल की सभी उपस्थित सदस्यों ने तारीफ की। इस बैठक में विधान परिषद में दल के नेता व पूर्व अध्यक्ष डॉ मदन मोहन झा, डॉ शकील अहमद खान, मंत्री मुरारी प्रसाद गौतम, विधायक विजयशंकर दूबे, राजेश कुमार, विधान पार्षद डॉ समीर कुमार सिंह, प्रेमचंद मिश्र, आनंद शंकर, अजय कुमार सिंह, सिद्धार्थ सौरभ, इजहारूल हुसैन, संतोष कुमार मिश्र, नीतू कुमारी, राजीव कुमार, छत्रपतियादव, विश्वनाथ राम सहित मौजूद रहें।

रेल हादसा : प्रदेश के यात्रियों की मदद के लिए जाएगी चार सदस्यीय टीम

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। ओडिशा के बालासोर जिले में शुक्रवार को हुए रेल हादसे के शिकार हुए प्रदेश वासियों को मदद के लिए वरीय अधिकारियों की चार सदस्ययीय टीम उड़ीसा जाएगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर अधिकारियों की एक टीम भेजी जा रही है जो ओडिशा सरकार, रेलवे तथा बालासोर जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित करेगी । मुख्यमंत्री के निर्देश पर वरीय अधिकारियों की एक चार सदस्यीय टीम गठित की गयी है जिसमें भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी एवं श्रम संसाधन विभाग के निदेशक श्याम बिहारी मीणा, मुजफ्फरपुर के रेल एसपी डॉ कुमार आशीष, आपदा प्रबंधन विभाग के विशेष कार्य पदाधिकारी अविनाश

कुमार एवं एसडीआरएफ के डिप्टी कमांडेंट शहरयार शामिल हैं। सचिव आपदा प्रबंधन विभाग संजय कुमार अग्रवाल द्वारा इसका अनुश्रवण किया जा रहा है। आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा इस हादसे से संबंधित आवश्यक सूचना एकत्रित करने के लिये हेल्पलाइन नम्बर- 0612-2294204 / 205 तथा 7070290170 जारी किया गया है । इस भीषण रेल दुर्घटना में सुरक्षित बचे बिहार के राज्य के यात्रियों को वापस लाने की कार्रवाई बिहार सरकार द्वारा शुरू कर दी गयी है। इस क्रम में प्रथम बैच में राज्य के 40 यात्रियों को बस के द्वारा बिहार वापस लाया जा रहा है। जिसमें अररिया के 24, किशनगंज और सीतामढ़ी के 2-2, दरभंगा के 9 एवं समस्तीपुर के 3 यात्री शामिल हैं।

रेल हादसे में बिहार के तीन मजदूरों की मौत: ओडिशा के बालासोर में हुए रेल हादसे में बिहार के लोग भी शिकार हुए हैं। बिहार से केरल जा रहा मजदूरों का जत्था इस हादसे का शिकार हुआ है। अब तक तीन मजदूरों की मौत होने की सूचना है, जिसमें एक मजदूर की पहचान हुई। अन्य दो मजदूरों के पहचान अभी तक नहीं हो पाई है जबकि आठ लोग घायल हैं। इनमें दो की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक मोतिहारी जिले के रामगढ़वा प्रखंड के चिकनी गांव के भुवन पटेल के बेटे राजा पटेल (25) की मौत हुई है। घायलों में विजय पासवान, संजय पासवान, अंजीत पटेल, उमेश पासवान, नितेश महतो, विशाल पासवान, गौरीशंकर गिरी और सूरज राउत हैं। इनमें विजय पासवान और अंजित पटेल की हालत गंभीर है। इसके अलावा मोतिहारी के बनकटवा प्रखंड के भी चार लोग घायल हैं लेकिन अभी उनकी पहचान नहीं हो पाई है। सभी घायलों की उम्र 26 से 32 साल के बीच की है। बताया जा रहा है कि चिकनी गांव के नौ मजदूर एक जून को मिथिला एक्सप्रेस से हावड़ा के लिए निकले थे। इसके बाद सभी ने हावड़ा से चेन्नई के लिए कोरोमंडल एक्सप्रेस पकड़ा। उन्हें चेन्नई से केरल जाना था लेकिन इसी बीच बालासोर में सभी मजदूर रेल हादसे का शिकार हो गये।

ओडिशा रेल हादसा घटना स्थल पर पहुंच कर प्रधानमंत्री ने स्थिति का लिया जायजा, रेल मंत्री रहें मौजूद

अब तक 261 यात्रियों की मौत, 1000 से अधिक घायल, जांच के दिए गए निर्देश

प्रात : किरण /एजेंसी

बालासोर। ओडिशा के बालासोर जिले में शुक्रवार की शाम तीन ट्रेनों की भिडंत से हुए भीषण हादसे में कम से कम 261 लोगों की मौत हो गयी और 1000 से अधिक घायल हो गये हैं। उक्त जानकारी रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को सैन्य हेलीकॉप्टर से ओडिशा में बालासोर जिले के घटनास्थल पहुंचे और उन्होंने राहत कार्यों की समीक्षा की। उनके साथ रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और रेलवे तथा राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर उपस्थित थे। आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार श्री मोदी ने मौके पर स्थानीय अधिकारियों, आपदा राहत बलों के कर्मियों और रेलवे अधिकारियों के साथ बातचीत की। उन्होंने इस भीषण त्रासदी से निपटने और इसकी पीड़ा कम करने के लिए पूरे सरकारी तंत्र में पूर्ण तालमेल का दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया। रेल मंत्री वैष्णव ने दुर्घटना की उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिये हैं। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने इस हादसे में मारे गये लोगों के दुख में राज्य में एक दिन के राजकीय शोक की घोषणा की है। श्री वैष्णव ने कहा कि दुर्घटना स्थल पर बचाव एवं राहत कार्य पूरा कर लिया गया है। पटरियों की मरम्मत का कार्य शुरू कर दिया गया है। मौके से क्षतिग्रस्त कोच हटाने का काम भी प्रारंभ हो गया है। रेल मंत्री ने दुर्घटनास्थल पर एकत्र हुए लोगों से अपील की कि पटरी से दूर रहें ताकि मरम्मत कार्य शुरू किया जा सके। इससे रेलवे अधिकारियों को रेल सेवा सुचारू रूप से बहाल करने में मदद मिलेगी।

गौरतलब है कि बालासोर जिले में बहगना स्टेशन के निकट कल शाम करीब सात बजे यह दुर्घटना उस वक्त हुई जब चेन्नई की दिशा से अप लाइन पर आ रही 12841 कोरोमंडल एक्सप्रेस को थ्रू यानी सिग्नल मिला था और उसके पहले ही बहनगा स्टेशन पर एक मालगाड़ी आयी थी जो अप लूप लाइन पर खड़ी थी। थ्रू सिग्नल होने के कारण

कोरोमंडल अपनी पूरी गति यानी करीब 125 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से चली आ रही थी। तभी किसी स्थान पर वह पटरी से उतर गयी। कोरोमंडल एक्सप्रेस के इंजन लूप लाइन पर खड़ी मालगाड़ी से टकराया तो 21 कोच पटरी से उतर गये जबकि तीन डिब्बे बगल की डाउन लाइन पर उसी समय निकल रही 12864 डाउन हावड़ा से यशवंतपुर जा रही दूरंतो एक्सप्रेस से जा टकराये और इस कारण दूरंतो एक्सप्रेस के आखिरी दो कोच बेपटरी हो गये।

पीएम मोदी बोले- दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा

बालासोर/नई दिल्ली। ओडिशा के बालासोर में हुई भीषण दुर्घटना ने देश की आँखे नाम कर दी कोई अपने से दूर जा रहा होगा उस समय उनके घर वालो को ये जरा भी नहीं लगा होगा की अब ये अपना कभी वापिस नहीं आना। मौतों की संख्या सेकड़ा पार कर गई है और घायलों की संख्या हजारो के करीब हो सकती है। घटना स्थल पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहुंच कर स्थिति का जायजा लिया उसके बाद घायलों से मिले। प्रधानमंत्री दी ने शनिवार को कहा कि ओडिशा के बालासोर में ट्रेन दुर्घटना की जांच के निर्देश दिए गए हैं, जिसमें 260 से अधिक यात्री मारे गए थे और जो भी दोषी पाया जाएगा उसे बख्शा नहीं जाएगा। पीएम मोदी की यह टिप्पणी उनके बालासोर के

फकीर मोहन अस्पताल के दौरे के दौरान आई, जहां शुक्रवार को तीन ट्रेनों के बीच हुई दुर्घटना में घायल हुए कुछ यात्रियों को भर्ती कराया गया था। यह एक दर्दनाक घटना है। सरकार उन्हें वापस नहीं ला पाएगी, जिन्होंने (दुर्घटना में) अपनी जान गंवा दी, लेकिन सरकार इस दुख में उनके परिजनों के साथ है। यह घटना सरकार के लिए बहुत गंभीर है ह्व घायलों के इलाज में कोई कोर कसर नहीं छोड़नी है. हर तरह की जांच के निर्देश दिए गए हैं और जो भी दोषी होगा उसे बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा, मैं ओडिशा सरकार और यहां के प्रशासन के सभी अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने सीमित संसाधनों के साथ लोगों की मदद करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि रेलवे ट्रैक बहाली की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने ओडिशा के लोगों को भी धन्यवाद दिया, जो दुर्घटना में जीवित बचे लोगों की मदद के लिए आगे आए, चाहे रक्तदान करके या बचाव अभियान में सहायता प्रदान करके। पीएम ने 2 जून की घटना स्थल पर स्थिति की समीक्षा करने के बाद अस्पताल का दौरा किया, जिसमें कम से कम 261 लोग मारे गए थे और 1,000 से अधिक लोग घायल हुए थे।

संक्षिप्त खबरें

गौरव बनें भाजपा आईटी सेल के विधानसभा संयोजक

फतुहा।भाजपा आईटी सेल के बाढ़ जिला संयोजक जन्मजय कुमार पंकज ने पदाधिकारियों की सूची जारी की है।जिसमें फतुहा के कल्याणपुर निवासी गौरव कुमार गुप्ता को आईटी सेल फतुहा विधानसभा संयोजक बनाया गया।आईटी सेल संयोजक बनने पर, भाजपा जिला उपाध्यक्ष भास्कर लाल पटवा,भाजपा नगर अध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी, नगर महामंत्री अनामिका अग्रवाल, रंजना गुप्ता, आनंद पाठक, गोपाल शरण मिश्र, पिंकी देवी, बबलू सिंह, रामजी प्रसाद, सुरजीत पाण्डे एवं कई लोगों ने फोन पर बधाई दी है।

रेल हादसे पर शोक

फतुहा। ओड़िशा भीषण रेल हादसे में हुई सैकड़ों लोगों की मौत पर फतुहा नगर भाजपा अध्यक्ष श्याम सुंदर केशरी ने शोक प्रकट करते हुए हादसे में मृतकों के परिजनों को इस दुःख की घड़ी में हिम्मत देने और घायलों को जल्द स्वास्थ लाभ की कामना ईश्वर से की है।

श्री हरगोविंद सिंह के प्रकाश पर्व पर रखा गया अखंड पाठ

पटना सिटी (प्राकि)।तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में सिख पंथ के छठे गुरु श्री हरि गोबिंद साहिब जी महाराज के 428वां प्रकाश पर्व को लेकर शनिवार को अखंड पाठ रखा गया। मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह की देखरेख में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अखंड पाठ रखा गया है। इसका समापन पांच जून को होगा और उसी दिन विशेष दीवान सजेगा। इसमें शबद कीर्तन और कथा प्रवचन के साथ अन्य धार्मिक आयोजन होगा। इसके लिए कमेटी की ओर से तैयारी की गयी है।

ट्रेन दुर्घटना पर तख्तश्री कमेटी ने जताया दुख

पटना सिटी (प्राकि)।तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी ने ओड़िशा में हुए ट्रेन हादसा पर दुख जताया है।कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, महासचिव इंद्रजीत सिंह, वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह, सचिव हरवंश सिंह, कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह, सदस्य महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन, राजा सिंह और सूरज सिंह नलवा ने दुख जताया है। दरबार साहिब में अरदास कर मृतकों की आत्मा की शांति और जख्मी के जल्द स्वस्थ होने की कामना की गई।

भाजयुमो गायघाट मंडल की कार्यसमिति घोषित

पटना सिटी (प्राकि)। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा पटना महानगर के गायघाट मंडल के कार्यसमिति घोषित कर दी गई है।अध्यक्ष अमित कुमार पांडेय के द्वारा जारी सूची के अनुसार उपाध्यक्ष के पद पर रवि कुमार, शोभा सत्यम, सौरभ साहा, नवीन कुमार चौधरी, महामंत्री प्रह्लाद कुमार, मंत्री चुन्नू कुमार उर्फ बबलू ठाकुर, पंकज पंडित, शिव शंकर सिंह, विप्रो दास, कोषाध्यक्ष अजीत शर्मा को बनाया गया है। कार्यसमिति में सुमित कुमार, परमजीत कुमार, मनीष कुमार, अतुल कुमार, रंजन कुमार, अमित कुमार और अवधेश शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय सेमिनार-सह-जागरूकता कार्यक्रम का होगा आयोजन

पटना।नेहरू युवा केन्द्र संगठन, पटना एवं यूनिसेफ बिहार के सौजन्य से 05 जून को स्थानीय चन्द्रगुप्त प्रबंधन संस्थान, पटना के ऑडिटोरियम में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बिहार के समस्त 38 जिलों से नेहरू युवा केन्द्र के 10 प्रतिभागी एवं अधिकारीगण, एन.एस.एस. केप्रतिभागी कुल 500 युवा प्रतिभागी भाग लेंगें।इस अवसर पर जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय सेमिनार-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन होगा।कार्यक्रम का उद्घाटन मंत्री वन एवं पर्यावरण विभाग, बिहार सरकार द्वारा किया जाएगा'मौके पर प्रधान सचिव वन एवं पर्यावरण विभाग, सी.एफ.ओ. यूनिसेफ, प्रशिक्षकगण एवं संसाधन व्यक्ति उपस्थित होकर युवाओं को सम्बोधित करेंगें।जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले राज्य स्तर पर चयनित छः युवाओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

सर्राफ रीयल इंफ्रा के वार्षिक डीलर डिस्ट्रीव्यूटर मीट का आयोजन

पटना।देश की प्रतिष्ठित इस्पात कम्पनी कामधेनु स्टील के विभिन्न उत्पाद कामधेनु कलर मैक्स, कलर कोटेड रूफींग शीट कामधेनु श्रेष्ठ जीसीशीट, कामधेनु श्रेष्ठ जीपी शीट, कामधेनु स्क्रू एवं कामधेनु (प्री इंजीनिर्यड बिल्डींग) के अधिकृत उत्पादक सर्राफ रीयल इंफ्रा के तत्वाधान में वार्षिक डीलर डिस्ट्रीव्यूटर मीट का स्थानीय मौर्या होटल में आयोजन किया गया। कामधेनु ब्रांड के उत्पाद अपनी उच्च गुणवता बेहतर सर्विस एवं ग्राहकों के निकटतम उचित मुल्य पर उलब्धता के कारण तेजी से ग्राहकों में लोकप्रिय हो रहे है।इसमें डिस्ट्रीव्यूटरों डीलरों कर्मचारियों को उनके उत्कृट प्रदर्शन एवं विशिष्ट योगदान के लिए पुस्कृत कर प्रोत्साहित किया गया।

हरविंदर सिंह गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप प्रमुख गुरुद्वारे को भेंटा दिए

2014 से अबतक छह स्वरूप लिखें व नगर कीर्तन के साथ भेंट दिया

आनंद केसरी/प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। उत्तर प्रदेश के कानपुर के रहने वाले हरविंदर सिंह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अब तक छह स्वरूप लिख चुके हैं। इन सभी स्वरूपों को वे कानपुर से नगर कीर्तन के रूप में चलकर विभिन्न गुरुद्वारों में भेंटा दे चुके हैं। इस संबंध में पृथीपाल सिंह ने बताया कि हरेंद्रपाल सिंह ने 2004 में गुरु ग्रंथ साहिब जी के स्वरूप को लिखना शुरू किया और मई, 2003 तक इन्होंने छह स्वरूप लिख डाले हैं।

इन्होंने पहला स्वरूप श्री पोंटा साहिब, दूसरा स्वरूप अमृतसर के श्री अकाल तख्त साहिब, तीसरा स्वरूप नांदेड़ के श्री हजूर साहिब, चौथा स्वरूप बाबा गुरनाम सिंह महंगापुर, पांचवां स्वरूप श्री अमृतसर हर की पौड़ी और छठा स्वरूप तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में दो जून को सौंपा है। इन सभी स्वरूपों को कानपुर से नगर कीर्तन के रूप में निकाल कर संबंधित गुरुद्वारे में जाकर प्रदान किया गया है। करीब 77 साल के हरविंदर सिंह ने वर्ष 2004 में हस्तलिखित स्वरूप लिखना शुरू किया और मई, 2003 तक इन्होंने छह स्वरूप लिख डाले हैं। छठा हस्तलिखित स्वरूप को तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में भेंटा देने के लिए नगर कीर्तन के रूप में दो जून को यहां पहुंचे। यहां गुरु गोविंद पथ के मंगल तालाब के पास पंज प्यारे के नेतृत्व में निकले नगर कीर्तन का स्वागत किया गया। नगर कीर्तन के रूप में करीब 300 संगत भी आई है। यहां पहुंची संगत सुबह में दरबार साहिब में मत्था टेकने के बाद पटना और आसपास के गुरुद्वारों का दर्शन करने निकल गई। इन छह स्वरूपों में से श्री अमृतसर हर की पौड़ी में सौपे गए स्वरूप का वजन करीब 85 से 90 किलो का था। वहीं तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में सौंपे गए स्वरूप का वजन करीब 35 किलो है। पटना साहिब के दरबार साहिब में देर शाम गुरु ग्रंथ साहिब जी के छह स्वरूप लिखने वाले हरविंदर सिंह जी को सम्मानित किया गया और उन्हें गुरु घर का आशीर्वाद सरोपा आदि प्रदान किया गया। इस दौरान तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह, गुरुविंदर सिंह, महासचिव इंद्रजीत सिंह, सचिव हरबंश सिंह, सदस्य राजा सिंह, महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन के अलावा अन्य लोग और संगत मौजूद थी। कानपुर से आई संगतों के साथ बाबा गुरनाम सिंह महंगापुर वाले, गोविंद सिंह लाडी, पृथ्वी पाल सिंह उर्फ बिल्ला, नीतू सिंह, बाबा नामदेव आदि भी मौजूद थे। यह सभी तख्तश्री कमेटी के विभिन्न रिहाइश में ठहरे थे। वहीं गुरुद्वारा बाललीला मैनी संगत की ओर से बाबा सुखबिंदर सिंह, बाबा गुरबिंदर सिंह, बाबा गुरबंत सिंह, राजन सिंह आदि ने हरविंदर सिंह आदि का स्वागत किया। इन सबों के यहां आने, ठहरने, व्यवस्था और प्रस्थान की जिम्मेवारी प्रशासक बलबीर सिंह और सीनियर मैनेजर हरजीत सिंह ने किया।

अपर मुख्य सचिव ने वैकल्पिक मार्ग के प्रस्ताव पर दिया आश्वासन : नंदकिशोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गुरु गोविंद सिंह सदर अस्पताल के दक्षिण स्थित टिकिया टोली रास्ते को प्रशासन द्वारा बंद कर दिया गया है। इसे लेकर एक शिष्टमंडल पूर्व मंत्री सह पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के विधायक नंदकिशोर यादव से संजय चंद्रवंशी के नेतृत्व में मिला। इस रास्ता को प्रशासन के द्वारा बंद किए जाने को लेकर उत्पन्न हुई समस्या के समाधान के लिए मिल कर होने वाली समस्याओं से अवगत कराया गया। संजय चंद्रवंशी ने बताया कि पटना सिटी अनुमंडल पदाधिकारी को गुरुवार को एक ज्ञापन भी सौंपा गया, जिसमें उनसे वैकल्पिक मार्ग दिये जाने का आग्रह किया गया। इस पर अनुमंडल पदाधिकारी ने विचार करने का आश्वासन दिया है। शिष्टमंडल ने पूर्व मंत्री नंदकिशोर यादव से आग्रह किया कि आप अपने स्तर से इस वैकल्पिक मार्ग के समाधान के लिए वरीय अधिकारी से बात कर उचित कार्यवाही करें। शिष्टमंडल के इस आग्रह पर तत्काल नंदकिशोर यादव ने स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत से बात की और उन्हें शिष्टमंडल द्वारा अनुमंडल पदाधिकारी को प्रेषित वैकल्पिक मार्ग के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि आप अपने परिसर से हट कर एक रास्ता आने-जाने के लिए देने पर विचार करें, ताकि एक बड़ी आबादी के समक्ष उत्पन्न हुई समस्या को दूर किया जा सके। अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने कहा कि अनुमंडल पदाधिकारी को ज्ञापित कॉपी भेज दी जाए, जिसे तत्काल पूर्व मंत्री नंदकिशोर यादव ने अपर मुख्य सचिव को भेज दिया। शिष्टमंडल में संजय कुमार के साथ जय ठाकुर, भूषण माली, प्रवीण चंदेल, राजा सिन्हा, रामबाबू, झुना, आदित्य कुमार, बंटी शामिल थे।

राधे श्याम परिवार उपलब्ध करा रहा मेडिकल सुविधा

50 रुपए में फिजियोथेरेपिस्ट, होमियो, एलोपैथ व कम कीमत पर पैरों जांच

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

फिजियोथेरेपी कैंप का आयोजन राधेश्याम परिवार सेवा संस्थान द्वारा चौक स्थित मिरचाई गली में किया गया है। यह कैंप मिरचाई गली में मेडिकल कार्यालय में किया गया।

अत्याधुनिक मशीन द्वारा मरीजों का निःशुल्क इलाज एवं परामर्श भी दिया जा रहा है। सबों को एक्सरसाइज की व्यवस्था यहां पर की गई है। यह व्यवस्था हर माह की एक से सात तारीख तक निःशुल्क उपलब्ध है। सात तारीख के बाद महीने में मरीज यह सुविधा मात्र पचास रुपया में ले सकते हैं। डॉ अंकित और डॉ मंटू के नेतृत्व में यह शिविर किया जा रहा है। संस्थापिका श्रीमती शोभा गुप्ता ने बताया कि मरीजों की सेवा ही परम सेवा है। आज बाजार में फिजियोथेरेपी कराने का चार्ज ढाई से तीन सौ रुपया है। संस्था ने सहयोग राशि के रूप में 50 रुपया ही एक सेशन के लिए लिया जा रहा है। इसके साथ ही डाक्टर परामर्श की सुविधा भी उपलब्ध है। बहुत ही जल्द पटना सिटी वासियों के लिए ईसीजी सुविधा भी महज 50 रुपए के सहयोग राशि में उपलब्ध होगी। कार्यक्रम में चक्रेश अग्रवाल, आलोक गुप्ता, संजय गोलवारा, पंकज लोयलका, राजाराम शर्मा, रणजीत मित्तल, उज्जल चौधरी, विपुल जगनानी आदि सक्रिय हैं। यहां संस्थान के कार्यालय में रोजाना अपराह्न में चिकित्सक से परामर्श की भी सुविधा है।

अस्पताल परिसर से रास्ता का विकल्प दें, वर्ना आंदोलन

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। श्री गुरु गोविंद सिंह सदर अस्पताल के दोनों तरफ (दक्षिण टिकिया टोली और पूरब में उमाशंकर लेन) गेट बंद कर दिए जाने एवं सिटी अस्पताल बोरिंग के मुख्य मार्ग को बंद कर दिए जाने से वार्ड 60 की जनता को पानी का संकट हो गया है। इसे देखते हुए निगम पार्षद शोभा देवी ने नाराजगी जतायी है। उन्होंने कहा है कि बिना सूचना दिए जलापूर्ति पंप को अनुमंडल प्रशासन के द्वारा बंद कर देना कही से न्यायसंगत नहीं है। उन्होंने कहा कि दो दिन पूर्व अस्पताल प्रशासन के द्वारा दोनों गेट बंद कर दिए जाने से लगभग 50 हजार की आबादी को संकट का सामना करना पड़ रहा है। यह रास्ता काफी पुराना है। आगजनी जैसी घटना होने एवं सौ वर्ष पुराना प्राचीन मंदिर में पूजा पाठ में हो रही उत्पन्न समस्या को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग एवं जिला प्रशासन से मांग की है कि समस्या का समाधान यथाशीघ्र निकाला जाए। ऐसा नहीं होने पर उग्र आंदोलन कर सरकार को फैसला बदलने को बाध्य किया जाएगा। पूर्व पार्षद बलराम चौधरी ने भी बड़ी आबादी के समक्ष उत्पन्न हुई रास्ते की समस्या को दूर करने की मांग की है।

निदेशक प्रमुख एनएमसीएच पहुंच ली जायजा

पटना सिटी (प्राकि)। एनएमसीएच में शनिवार को स्वास्थ्य विभाग की निदेशक प्रमुख डॉ निहारिका शरण निरीक्षण को पहुंचीं। इस दौरान मिशन परिवर्तन के तहत होने वाले कार्य को लेकर जायजा लेते हुए आवश्यक निर्देश दिया गया। निरीक्षण के दौरान आई बैंक की व्यवस्था को देखा और जाना। निरीक्षण के दौरान कुछ जगहों पर गंदगी दिखने से नाराज होकर सफाई एजेंसी के कर्मियों को बुला कर फटकार लगाते हुए बेहतर सफाई कराने का निर्देश दिया। इसके बाद वो अस्पताल का निरीक्षण भी किया। निरीक्षण में बुनियादी सुविधाओं, चिकित्सा सेवा, दवाइयां, आधारभूत संरचना व संसाधन की जानकारी लेते हुए आवश्यक निर्देश दिया। निरीक्षण में अस्पताल अधीक्षक डॉ राजीव रंजन और उपाधीक्षक डॉ अजय कुमार सिन्हा चिकित्सा पदाधिकारी समेत अन्य उपस्थित थे।

शनिवार को खिचड़ी महाप्रसाद, वितरण से मिलता पुण्य

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भूखे को भोजन और प्यासे को पानी मिल जाए, तो इससे बड़ी मानव सेवा कुछ नहीं है। मारवाड़ी समाज के द्वारा विभिन्न स्थानों पर पीने का पानी स्थाई कार्यक्रम के तहत जलधारा की स्थापना की जा रही है। महाराजा अग्रसेन जी ने अपने संदेश में कहा अपने देश में आने वाले हर व्यक्ति को एक ईंट और एक रुपया देकर उसे मजबूती प्रदान करने का संदेश दिया था। उन्होंने कहा कि हमारे हिन्दू समाज में शनिवार के दिन खिचड़ी को महाप्रसाद कहा गया है और उसका वितरण करने से पुण्य मिलता है। उक्त बातें आज बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सिटी शाखा द्वारा आयोजित महाराजा श्री अग्रसेन जी की रसोई महाप्रसाद के शुभारंभ पर सम्मेलन के संरक्षक और समाजसेवी गिरधारी लाल सराफ ने कही। जनता होटल के समीप बड़ी संख्या में लोगों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिव प्रसाद मोदी, मंच संचालन सचिव संजीव देवड़ा और आगत अतिथियों का स्वागत राजेश चौधरी ने किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष ईश्वर लाल अग्रवाल, प्रभात भरतिया, कृष्णा सराफ, कन्हैया लाल डोकानिया, पप्पू मोदी, ललित अग्रवाल, सुभाष पोद्दार, राजकुमार सराफ, राजकुमार गोयनका, रोहित सराफ आदि सक्रिय थे।

एनएमसीएच में नवजात की मौत पर परिजनों का हंगामा

प्रसव के बाद निकूमें भेजा, डॉ ने मृत घोषित किया

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

एनएमसीएच के महिला एवं प्रसूति विभाग में शनिवार की सुबह जन्म के बाद हुए नवजात की मौत पर परिजनों ने हंगामा किया। चौक थाना क्षेत्र के हुमाद गली निवासी पीड़ितों ने बताया कि काली देवी नाम की महिला को शुक्रवार की रात प्रसव के लिए महिला प्रसूति विभाग में भर्ती कराया गया था। यहां सुबह पांच बजे गर्भवती का प्रसव हुआ। इसके बाद नवजात की तबीयत बिगड़ने की बात कह चिकित्सकों ने निकू में ले जाकर उपचार कराने को कहा। वहां पर जांच के बाद चिकित्सकों ने नवजात को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद वापस प्रसूति विभाग पहुंचे परिजनों ने लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल कर्मियों ने उनसबों के साथ हाथापाई और मारपीट की। हंगामा की सूचना मिलते ही मौके पर आलमगंज और एनएमसीएच टीओपी की पुलिस पहुंची और आक्रोशित परिजनों को समझा-बुझा कर मामले को शांत कराने का काम किया। पीड़ितों का कहना है कि उसे इंसाफ मिलनी चाहिए। इसके लिए लिखित शिकायत अधीक्षक के समक्ष दर्ज कराई गई है। विभाग के चिकित्सकों का कहना है कि परिजनों ने भी इंटर्न कर रही डाक्टर के साथ हाथापाई की है। विभागाध्यक्ष डॉ उषा कुमारी ने बताया कि प्रसव में लापरवाही नहीं हुई है। सुरक्षित प्रसव कराया गया था। नवजात की तबीयत बिगड़ने पर निकू भेजा गया। यहां उसकी मौत हो गई। इस मामले में अधीक्षक डॉ राजीव रंजन का कहना है कि दोनों तरफ से लिखित में आवेदन मिला है। इस आधार पर जांच-पड़ताल कराई जा रही है। दोषियों पर कार्रवाई होगी। हंगामा की वजह से सुबह में विभाग में कुछ देर के लिए अफरा-तफरी की स्थिति मच गई थी।

परिवहन के साधन के रूप में साइकिल को चुने और इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाए : निदेशक डॉ. गोपाल कृष्ण पाल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। विश्व साइकिल दिवस मनाते हैं, हम अपने स्वास्थ्य, पर्यावरण और व्यक्तिगत कल्याण पर साइकिल चलाने के अत्यधिक लाभों को पहचानते हैं। इस दिन को पहली बार 2018 में मनाया गया था, जब संयुक्त राष्ट्र ने इसे साइकिल चलाने के कई फायदों का जश्न मनाने के लिए एक आधिकारिक अंतरराष्ट्रीय दिवस घोषित किया था। साइकिल चलाना सिर्फ एक साधारण गतिविधि नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। यह परिवहन का एक स्थायी और स्वस्थ तरीका है जो शून्य कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा देता है, जिससे यह आने-जाने का पर्यावरण के अनुकूल तरीका बन जाता है। इसके अलावा, यह एक कम प्रभाव वाला व्यायाम है जो मांसपेशियों को मजबूत करता है और हृदय, फेफड़े और समग्र हृदय स्वास्थ्य को बढ़ाता है, जिससे पुरानी बीमारियों का खतरा कम होता है। पर्यावरण और स्वास्थ्य लाभों के अलावा, साइकिल चलाना स्वतंत्रता और स्वतंत्रता की भावना देता है, जिससे सवार को नई जगहों का पता लगाने और उनके मानसिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने की अनुमति मिलती है। इस विश्व साइकिल दिवस पर कार्यकारी निदेशक डॉ. गोपाल कृष्ण पाल ने लोगों से परिवहन के साधन के रूप में साइकिल को चुनने और इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का आग्रह किया। इसके अलावा, चिकित्सा अधीक्षक डॉ सी एम सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि लोगों को सुरक्षित और आराम से साइकिल चलाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए हमें समर्पित बाइक लेन, साइकिल पथ और सुरक्षित पार्किंग सुविधाओं जैसे साइकिल-अनुकूल बुनियादी ढांचे का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। ट्रॉमा सर्जरी प्रमुख के अतिरिक्त प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि परिवहन के एक स्थायी और स्वस्थ माध्यम के रूप में साइकिल को बढ़ावा देकर ही हम यातायात की भीड़, वायु प्रदूषण को कम कर सकते हैं और जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। उन्होंने अडावे और निरामया सहित कई बच्चों के साथ साइकिल की सवारी को प्रोत्साहित करने के लिए आम लोगों को जागरूक करने के लिए कई नारे भी जोड़े। (साइकिल चलाना है - प्रयावरण को बचानी है, साइकिल चलाने में लगता है दम-बीपी, शुगर, तनाव होता है कम, ग्रीन साइकिल बनाए रखने के लिए हमें साइकिल चलानी चाहिए, फिट एंड फाइन फ्यूचर के लिए), हमें साइकिल और रीसायकल करनी चाहिए)। कई वरिष्ठ फैकल्टी डॉ प्रेम कुमार, रेडियोडायग्नोसिस के प्रमुख और अनुसंधान डीन, डॉ क्रांति भावना, डॉ सुदीप कुमार, डॉ बिनोद पति, डॉ प्रदीप कुमार ने साइकिल चलाने के अपने अनुभव और लाभ साझा किए और प्रोत्साहित किया कि राज्य के प्रत्येक नागरिक को अपनी जीवन शैली में बदलाव लाना चाहिए। .इस साइकिल रैली में फैकल्टी, सुरक्षा स्टाफ, अस्पताल स्टाफ, मेडिकल छात्रों, रेजिडेंट्स, नर्सिंग छात्रों और नर्सिंग अधिकारियों सहित 200 से अधिक लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। हर दिन को विश्व साइकिल दिवस बनाएं और अधिक से अधिक लोगों को साइकिल चलाने को जीवन के तरीके के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

अनियंत्रित वैन डिवाइडर से टकराई चालक गंभीर रूप से घायल

प्रात : किरण संवाददता

फतुहा। शनिवार को थाना क्षेत्र के वाटर पार्क के पास फोरलेन पर उस समय अफरा-तफरी मच गई जब एक आम लदा पिकअप वैन एकाएक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गयी और चालक केबिन का भाग बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। चालक केबिन के मलवे में फंस कर बुरी तरह से जख्मी हो गया। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से किसी तरह चालक को बाहर निकाला तथा अस्पताल भेजा। प्राथमिक उपचार के बाद उसे पटना के लिए भेज दिया गया लेकिन उसकी स्थिति वहां भी गंभीर बनी हुई है। गंभीर रुप से जख्मी व अचेत रहने के कारण उसकी पहचान नहीं हो पाई है। आम लदे पिकअप वैन को सुरक्षा के दृष्टिकोण से पुलिस थाने ले आई है। खबर लिखे जाने तक उसकी पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस वैन में मिले कागजात के आधार पर वैन मालिक से सम्पर्क करने में जुटी है ताकि उसकी पहचान हो सके। पिकअप वैन कहां से कहां जा रही थी, वह भी स्पष्ट नहीं हो सका है।

बाइक सवार बदमाशों ने 5 लाख रुपैया झपट्टा मारकर हुए फरार

प्रात : किरण संवाददता

दानापुर। नगर के रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत गोला रोड स्थित एसबीआई बैंक से 5 लाख रुपए निकालकर प्लाई खरीदने जा रहे एक बिल्डर से बाइक सवार बदमाशों ने रुपए से भरा थैला झपटकर फरार हो गये। इस संबंध में पीड़ित बिल्डर राजीव नगर निवासी वकील कुमार ने स्थानीय थाने में बदमाशों के खिलाफ लिखित शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है। घटना की जानकारी देते हुए पीड़ित बिल्डर वकील कुमार ने बताया कि वह और उनका दोस्त राकेश तिवारी दिव्या इंटरप्राइजेज नामक कंपनी चलाते है जो बिल्डिंग व अपार्टमेंट बनाने की काम करती है। शनिवार की दोपहर वह कंपनी से संबंधित प्लाई खरीदने के लिए गोला रोड स्थित एसबीआई बैंक से 5 लाख रुपए निकाले थे। सभी रुपए को एक थैले में रख कर अपने साथी के साथ बैंक के बाहर खड़ी उनकी कार की तरफ जाने लगे। तब ही कार के दरवाजे पर पहुंचे ही थे की एक बाइक पर सवार दो बदमाश झपट्टा मारकर थैली झपट लिया। हम दोनों संभल पाते तब तक बदमाश तेज गति से बाइक चलाते हुए फरार हो गये। उन्होने बताया कि बदमाश की बाइक तेज रफ्तार से दौड़ने वाली थी। उन्हे समझ में नही आ रहा कि बदमाश को कैसे मालूम हुआ कि उनके झोले में रुपए है। उन्होने रूपसपुर थाने पहुंचकर बाइक सवार बदमाशों की पहचान करने व कार्रवाई करने का मामला दर्ज कराया है। वहीं स्थानीय पुलिस लिखित शिकायत मिलने के बाद बैंक एवं आसपास लगे सीसीटीवी फूटेज खंगाले में जुट गई है। ताकी झपटमारों की पहचान की जा सके।

गौरीशंकर न्यास ने एसडीओ के पास आय-व्यय का ब्योरा रखा

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। अनुमंडल पदाधिकारी सह अध्यक्ष श्री गौरी शंकर मंदिर न्यास समिति के साथ अनुमंडल कार्यालय में प्रथम बैठक गौरी शंकर मंदिर न्यास समिति के सदस्यों के साथ हुआ। इस बैठक में मंदिर के बारे में जानकारी ली गई। साथ ही आय और व्यय का ब्योरा के बारे में चर्चा की गई। आगमी श्रावण मास के बारे में भी चर्चा की गई। इस बार सावन दो माह मनाया जाएगा। इससे आयोजन भी दो माह का होगा। इसके बाद गौरी शंकर मंदिर के सदस्यों के द्वारा अनुमंडल पदाधिकारी गुंजन सिंह को बुके देकर सम्मानित किया गया और मंदिर का प्रसाद भी प्रदान किया गया। बैठक में सचिव विश्वनाथ चौधरी, उपाध्यक्ष राजेंद्र यादव, कोषाध्यक्ष दिलीप कुमार गुप्ता, सदस्य विनय केसरी, चुन्नू चंद्रवंशी, अवधेश कुमार, संजय कुमार और शंकर चौधरी मौजूद थे।

वर्तमान में प्रासंगिक है सद्गुरु कबीर का दर्शन : आचार्य किशोर कुणाल

पटना। कबीरपंथी आश्रम मीठापुर में शनिवार को सद्गुरु कबीर जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आश्रम के महंथ ब्रजेश मुनि ने मुख्य अतिथि महावीर मंदिर के सचिव आचार्य किशोर कुणाल, विशिष्ट अतिथि तख़्त हरिमंदिर साहिब गुरुद्वारा से पधारे जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के पुलिस महानिरीक्षक नरेंद्र सिंह, नागाबाबा ठाकुरबाड़ी के कोषाध्यक्ष रतन लाल अग्रवाल, वरिष्ठ पत्रकार अरुण कुमार पांडेय, योग विशेषज्ञ ह्रदय नारायण झा को अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया।

महंथ ब्रजेश मुनि ने बीजक सहित कबीर वाणी का पाठ किया। आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि सद्गुरु कबीर का जीवन दर्शन वर्तमान में जाति धर्म के भेदभाव से मुक्त समरस समाज निर्माण के लिए प्रासंगिक और व्यावहारिक है। इसलिए कबीर दर्शन का अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए। ज्ञानी रणजीत सिंह ने कहा कि सद्गुरु नानक देव और कबीर साहेब ने अंधविश्वास आडम्बर को मिटाकर सत्य नाम को धारण करके इहलोक और परलोक को सुधारने की सीख दी उनकी वाणी सही जीवन जीने की राह बताता है। कबीर सत्संग करते हुए ह्रदय नारायण झा ने कहा सद्गुरु कबीर साहेब ने कहा कि दूसरो के दुगुर्णो को नहीं देखना चाहिए सबमे सद्गुण ही देखना चाहिए, इस आशय की वाणी है -

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलाया कोई। जो दिल खोजा अपना मुझसा बुरा न कोई।। ब्रजेश मुनि ने कहा कि मानवता की रक्षा के लिए सद्गुरु कबीर साहेब का उपदेश अत्यंत कारगर है। विधान सभा परिसर में कबीर वाटिका निर्माण के लिए राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार साधुवाद के पात्र हैं। इस अवसर पर आश्रम के श्रद्धालुओं ने कबीर भजन की प्रस्तुति भक्ति भाव का अलख जगाया।

तकियापर से बाइक हुई चोरी

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत तकियापर खगडी रोड निवासी मंजू देवी का तकियापर से चोरों ने बाइक चोरी कर फरार हो गया है।मंजू ने स्थानीय थाना में लिखित शिकायत करते हुए बताया है कि रामाशीष बाइक लेकर तकियापर गया था और तकियापर गाडी खडा कर सामान खरीदारी करने गया था।थोडी देर बाद आया तो गाडी गायब था.दो दिन पूर्व थाने के आदमपुर निवासी महादेव चौधरी के दरवाजे के बाहर खडी बाइक को चोरों ने चोरी कर लिया ।इस संबंध में महादेव चौधरी ने स्थीनय थाना में अज्ञात चोरों के विरूद्ध मामला दर्ज कराया है.पिछले 28 मई को बीबीगंज मैदा चंद्रशेखर वकील गली निवासी अरविंद कुमार का मार्शल बाजार मोड के पास खडी बाइक को चोरों ने चोरी कर फरार हो गया ।नगर में बाइक चोरी की यह कोई पहली घटना नही है।नगर में लगातार बाइक चोरी की घटना घट रही है.बाइक चोरी के अधिकांश मामलों में पुलिस का हाथ खाली नजर आ रही है।

मैं मन की बात नहीं बल्कि काम की बात करता हूं : अखिलेश

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने जिला अध्यक्षों को दिये-टास्क

● नेता कार्यकर्ता बनकर काम करें तभी सबका भला

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि व्यवहारिक तौर पर मेरी पारी की शुरूआत आज होती है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि पारी कितनी लम्बी है यह महत्वपूर्ण नहीं, पारी असरदार होनी चाहिये तभी यादगार बनती है। और बिहार में कांग्रेस को एक असरदार पारी की बेहद जरूरत है। मैं आपलोगों के सहयोग से इस पारी को यादगार बनाना चाहता हं। डा सिंह शनिवार को यह बात पार्टी मुख्यालय सदाकत आश्रम में आयोजित नवनियुक्त जिला अध्यक्षों की पहली बैठक को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि मैं मन की बात नहीं बल्कि काम की बात करना चाहता हूं और साफ बात करना चाहता हूं। उन्होंने जिला अध्यक्षों को हिदायत दी कि अगर काम में किसी तरह की कोताही बरती गयी तो किसी को भी बक्शा नहीं जायेगा चाहे उसकी पहुंच कही तक हो। डा सिंह ने एक पांच सदस्यीय निगरानी कमिटी के गठन की बात की जो जिला अध्यक्षों के कार्यो को एवं उनके क्रियाकलापों पर पैनी नजर रखेगी। उन्होंने दुख जताया कि आज लोग नेता बनना चाहते हैं कार्यकर्ता नहीं। उन्होंने कहा कि अगर नेता कार्यकर्ता बन जाय तो देश,समाज एवं पार्टी सबका भला होगा। उन्होंने कहा कि बिहार में कांग्रेस इसलिए कमजोर हुई क्योंकि हमसे जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने में चूक हो गयी। पार्टी आलाकमान की ओर से आये राष्ट्रीय महासचिव श्री तारिक अनवर, पर्यवेक्षक के रूप में आये अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के महासचिव श्री शक्ति सिंह गोहिल, बिहार के राष्ट्रीय प्रभारी श्री भक्त चरण दास खासतौर की उपस्थिति में बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने जिला अध्यक्षों को माला पहनाकर नियुक्ति पत्र सौंपा। पार्टी जिला अध्यक्षों को सम्बोधित करते हुए बिहार प्रभारी भक्त चरण दास ने कहा कि बिहार में कांग्रेस नम्बर-1 पार्टी बनेगी और इसलिए सारे जिला अध्यक्षों को प्रदेश अध्यक्ष के साथ पूरी ताकत के साथ खड़ा रहना चाहिए। जिला अध्यक्षों को सम्बोधित करते हुए कांग्रेस के महासचिव तारिक अनवर ने कहा कि राजनीति में मतभेद होना एक स्वभाविक बात है लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। इस अवसर पर बिहार कांग्रेस अध्यक्ष ने प्रदेश से पंचायत की ओर कांग्रेस कार्यक्रम की शुरूआत की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के अलावे नवनियुक्त विधायक दल के नेता डॉ. शकील अहमद खान, विधान परिषद् में कांग्रेस दल के नेता डॉ. मदन मोहन झा,पूर्व मंत्री कृपा नाथ पाठक, विधान पार्षद प्रेम चन्द्र मिश्र, विधायक इजहारूल हुसैन, अजय कुमार सिंह, ब्रजेश कुमार पाण्डेय, निर्मल वर्मा सहित प्रदेश के सभी जिलाध्यक्ष मौजूद थे।

इतनी बड़ी लापरवाही की जिम्मेदारी तय हो : उमेश कुशवाहा

● रेल हादसे पर प्रदेश जदयू अध्यक्ष ने जताया शोक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश जदयू अध्यक्ष श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने उड़ीसा की रेल दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि इस दयविदारक घटना से मैं निःशब्द हूं और समस्त देशवासियों के साथ मेरी भी सभी मृतकों के परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएं हैं, जिन्होंने इस हादसे में अपना सब कुछ खो दिया। ईश्वर से मैं प्रार्थना करता हूं कि उन परिवारों को इस असह्य दुख को सहने की शक्ति दे और इस घटना में घायल सभी लोग शीघ्र स्वस्थ हों। श्री कुशवाहा ने कहा कि इतनी बड़ी चूक और लापरवाही की जवाबदेही निश्चित ही तय होनी चाहिए। सरकार लाख मुआवजा दे ले, लेकिन क्या उससे किसी परिवार का खोया सदस्य दुबारा लौटकर आ जाएगा? उन्होंने कहा कि सरकार की नाकामी पर पर्दा डालने के लिए गोदी मीडिया पर लगातार मुआवजे की खबर चलाना और भी शर्मनाक है। हमारी मांग है कि देश के रेलमंत्री नैतिकता के आधार पर तत्काल अपने पद से इस्तीफा दें और इस घटना की उच्चस्तरीय जांच हो। जांचोपरान्त दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। श्री कुशवाहा ने आगे कहा कि 1956 में तमिलनाडु के अरियालपुर में हुए रेल हादसे के बाद तत्कालीन रेलमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री ने नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे दिया था। इसी तरह 1999 में असम के गैसल में हुई रेल दुर्घटना के बाद तत्कालीन रेलमंत्री नीतीश कुमार ने अपना पद त्याग दिया था। लेकिन नैतिकता के ऐसे उच्चतम उदाहरण की उम्मीद केन्द्र की मौजूदा सरकार से करना बेकार है। यह सरकार न केवल हर मोर्चे पर नाकाम है, बल्कि संवेदनशून्य भी है।

रेल दुर्घटना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण, निष्पक्ष जांच हो : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ओड़िसा में हुई रेल दुर्घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने इस घटना के शिकार हुए लोगों के प्रति अपनी संवेदनायें व्यक्त की हैं। उन्होंने कहा कि ओड़िसा में हुआ दर्दनाक रेल हादसा मन को झकझोर देने वाला है। इस घटना पर केवल संवेदना व्यक्त करने से काम नहीं चलने वाला। सरकार को इसके कारणों की गहन जांच करवानी चाहिए तथा जिनकी गलती से यह हादसा हुआ है, उन्हें कड़ी सजा देनी चाहिए। इसके अलावा घटना में मरे लोगों के परिजनों को सरकारी नौकरी और घायल हुए लोगों को मुआवजा देना चाहिए।

भाजपा पर घड़ियाली आंसू बहाने का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि एक तरफ देश इस हादसे के शिकार हुए लोगों के लिए शोक मना रहा है, दूसरी तरफ भाजपा अपनी सरकार के 9 साल पूरे होने का जश्न मना रही है। केवल दिखावे के लिए इन्होंने सिर्फ एक दिन के लिए अपने कार्यक्रम स्थगित किये हैं, लेकिन उसे भी यह लोग ऐसे पेश कर रहे हैं कि मानो उन्होंने जनता पर कोई अहसान कर दिया हो। भाजपा से हमारी मांग है कि घड़ियाली आंसू बहाने की बजाए इस घटना के कारणों का पता लगाए और रिपोर्ट को जनता के सामने पेश करे। कहीं ऐसा न हो कि गुजरात के मोरबी में हुए पुल हादसे की तरह इसकी रिपोर्ट भी दब जाए। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि एक जमाना था कि जब ऐसी घटनाओं की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए रेलमंत्री इस्तीफा दे दिया करते थे। याद करें तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रेलमंत्री के पद पर रहते हुए, असम में अगस्त 1999 में हुई गैसल ट्रेन दुर्घटना के लिए नैतिक आधार पर अपना पद छोड़ दिया था। लालबहादुर शास्त्री के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दूसरे रेलमंत्री थे, जिन्होंने ऐसी मिसाल पेश की थी। लेकिन वर्तमान सरकार में ऐसा संभव ही नहीं है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में रेलमंत्री का पद सिर्फ नाम भर के लिए रह गया है। न तो उन्हें बजट पेश करने का अधिकार प्राप्त होता है और न ही नई ट्रेनों के उद्घाटन करने का। ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने का काम प्रधानमन्त्री करते हैं और बजट वितमंत्री पेश करती हैं। ऐसे में भाजपा यह तय ही नहीं कर सकती कि इस्तीफा कौन देगा।

बालासोर रेल हादसा :विभिन्न राजीनितिक दलों ने घटना पर जताया शोक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

विप सभापति ने जताया शोक

बिहार विधान परिषद् के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर ने ओडिशा में हुए ट्रेन हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया है। सभापति ने कहा कि इस हादसे में अपने प्रिय जनों को खोने वालों के साथ हमारी संवेदनाएं हैं तथा घायलों के जल्द ठीक होने की प्रार्थना करता हूं।

मृतकों के आश्रितों को मुआवजे के साथ सरकारी नौकरी दे केंद्र : मांझी

हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा से के संस्थापक बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने बालासोर ट्रेन हादसे पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि यह ट्रेन हादसा इस दशक का सबसे बड़ा रेल हादसा है । दिल दहला देने वाले इस रेल हादसे में उन सभी मृतकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए, उनकी आत्मा की शांति का प्रार्थना करता हूं । मृतकों के परिजनों को ईश्वर दुख सहने की शक्ति प्रदान करें । मांझी ने कहा कि इस सदी का दुनिया का सबसे बड़ा रेल हादसा बालासोर में हुई । रेल मंत्रालय द्वारा यह कहीं ना कहीं लापरवाही के कारण ही बड़ा रेल हादसे में बड़ी संख्या में लोगों की जान गई । केंद्र सरकार और रेल मंत्रालय बालासोर रेल हादसे को गंभीरता से लेने की जरूरत है। उड़ीसा के बालासोर रेल हादसे की समुचित जांच हो ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाएं दोबारा ना हो । मुआवजा के साथ मृतकों के परिजनों को सरकारी नौकरी देने की मांग केंद्र सरकार से की। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार सरकार में अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण मंत्री डॉ संतोष कुमार सुमन ने बालासोर ट्रेन हादसा पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि यह हादसा हृदय विदारक है । ईश्वर से प्रार्थना है कि सभी दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें । डॉक्टर संतोष कुमार सुमन मृतकों के परिजनों को मुआवजे के रूप में 50 लाख और घायलों को 10 लाख मुआवजा देने की मांग की।

बिहार के लोगों के लिए हेल्प लाइन नंबर जारी करे सरकार : आप

ओडिशा के बालासोर में हुए भीषण रेल हादसे में साकडों यात्रियों की मौत हो चुकी है। 900 से ज्यादा लोग घायल हैं। इसमें बड़ी संख्या बिहार के लोग भी शामिल हैं क आप के मीडिया प्रभारी राजेश सिन्हा एवं प्रदेश प्रवक्ता बबलू प्रकाश ने मृतकों के परिवार जनों के प्रति अपनी गहरी सम्वेदना प्रकट करते हुए बिहार सरकार से मांग की है की मृतकों के परिवार जनों की सुविधा के लिए अलग से एक हेल्पलाइन नबर जारी करे। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार घटना के कारणों की जाँच करवाकर इसमें शामिल लोगों को अविलंब सजा दे।

ओडिशा रेल हादसे की सूचना पाकर मर्माहत हूं: मंगल

पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने ओडिशा के बालासोर में हुए भीषण रेल हादसे में मृत लोगों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है। उन्होंने कहा कि अब तक लगभगं 288 लोगों के मृत व हजारों लोगों के घायल होने की सूचना मर्माहत करती है। सभी मृतकों के प्रति दुख व्यक्त करता हूं। बालासोर में बहनागा रेलवे स्टेशन के पास हुई भीषण रेल दुर्घटना में मृतकों के परिजनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। दुर्घटना में घायल हुये लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी ईश्वर से कामना करता हूं। केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस उड़ीसा के बालासोर में कोरोमंडल एक्सप्रेस ट्रेन दुर्घटना का समाचार सुनकर काफी स्तब्ध एवं मर्माहत हैं उन्होंने मृतकों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की तथा ईश्वर से घायलों की शीर्घ स्वस्थ होने की कामना की।

मामले की उच्चस्तरीय जांच हो : सहनी

विकासशील इंसान पार्टी के प्रमुख और पूर्व मंत्री मुकेश साहनी ने ओडिशा में हुए ट्रेन दुर्घटना पर गहरा दुख और शोक व्यक्त किया है। मुकेश सहनी ने कहा कि संकट की इस घड़ी में उनकी पार्टी पीड़ित परिवार के परिजनों के साथ खड़ी है। ईश्वर पीड़ित परिवार के परिजनों को हिम्मत दें। श्री साहनी ने अपने शोक संदेश में कहा कि यह बहुत दुखद है कि एक साथ तीन ट्रेन आपस में भिड़ गए। जिसके कारण इतने लोग हताहत हो गए। उन्होंने कहा कि हमारी ओडिशा सरकार के साथ ही केंद्र सरकार से अपील है कि पीड़ितों को जल्द से जल्द और बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाए। मुकेश सहनी का यही कहना था कि यह वक्त राजनीति करने का नहीं बल्कि इस वक्त में पीड़ितों के साथ खड़े होने का है। उनका यह भी कहना था कि इस मामले की उच्च स्तरीय जांच करने की जरूरत है तथा दोषियों को सजा देने की भी जरूरत है। क्योंकि इस घटना में न जाने कितने लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है। भारतीय रेल भी इस पूरे मामले को बारीकी से देखें और हर एक बिंदु की गहराई से जांच करें।

बिंदेश्वर राम सहित कई कांग्रेस में हुए शामिल

पटना। अनुसूचित जाति एवं जनजाति विकास मंच के प्रदेश अध्यक्ष डा बिन्देश्वर राम ने अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ बिहार प्रदेश कांग्रेस कमटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह के समक्ष शनिवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। डा राम के साथ शामिल होने वाले नेताओं में राज कुमार पासवान, संतोष पंडित, दीनवन्धु राम, कृष्णा राम, प्रमोद राम, सुकेश राम सहित सैकड़ो नेता एवं कार्यकर्ता थे। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि डा विन्देश्वर राम के कांग्रेस में आने से पार्टी को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के विचारधारा से प्रभावित होकर डा विन्देश्वर राम कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए हैं। हम डा विन्देश्वर राम एवं उनके साथियों का कांग्रेस पार्टी में स्वागत करते हैं। इस अवसर पर डा विन्देश्वर राम ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी एवं राहुल गांधी के विचारधारा से प्रभावित होकर कांग्रेस पार्टी का सदस्यता ग्रहण किया हूं।

सम्पूर्ण क्रांति दिवस के दिन छात्र राजद करेगा राजभवन मार्च : गगन

पटना। नई शिक्षा नीति, शिक्षा का निजीकरण, बाजारीकरण, महंगाई, सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग, सरकारी संपत्तियों का निजीकरण भारतीय इतिहास के साथ छेड़-छाड़ एवं देश में फैले आराजकता के विरोध में सम्पूर्ण क्रांति दिवस के दिन छात्र राजद ने राजभवन घेराव का ऐलान किया है। इस संदर्भ में प्रदेश अध्यक्ष गगन कुमार ने कहा कि देश के छात्र एवं युवा केंद्र सरकार की जन विरोधी नीतियों से परेशान है एक तरफ जहाँ शिक्षा व्यवस्था को केंद्र सरकार ने पहले से चैपट कर रखा है। वहीं नई शिक्षा नीति में शिक्षा गरीबों के पहुँच से दूर होता दिख रहा है। देश में महँगाई अपने चरम पर है लेकिन सरकार के कान में जूं तक नहीं रेंग रहा है। केंद्र सरकार छात्र एवं युवा विरोधी सरकार है और उस सरकार के खिलाफ हम लोग आंदोलन करने को पूरी तरह तैयार हैं। मौके पर मौजूद प्रदेश प्रधान महासचिव बेलाल खान ने कहा कि इस सरकार ने सिलेबस में पहले ही मुगल काल को हटा दिया है एवं शहरों के नाम बदलने के अलावा इनके पास करने को कोई काम नही है। ज्ञात हो की बेरोजगारी दर के आंकड़े पेश करने वाले एजेंसी को भी आंकड़े पेश करने से मना कर दिया है। सरकार को ना ही किसानों की परवाह है, ना महिलाओं की और न ही छात्र युवाओं की ऐसे तानाशाह सरकार के खिलाफ बिहार फिर से एक बार संपूर्ण क्रांति के लिए तैयार है ।

जॉर्ज साहब प्रखर समाजवादी नेता थे : सम्राट

जॉर्ज फर्नांडिस की जयंती पर प्रदेश अध्यक्ष ने दी श्रद्धांजलि, श्रद्धासुमन अर्पित किए

● बोलें - ओडिशा रेल हादसे पर भाजपा परिवार मर्माहत, सभी कार्यक्रम स्थगित

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

समाजवादी नेता जॉर्ज फर्नांडिस की जयंती के मौके पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया गया। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने जार्ज फर्नांडिस की जयंती के मौके पर उनकी तस्वीर पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर उन्होंने कहा कि जार्ज साहब प्रखर समाजवादी नेता थे वे राजनीति में कभी समझौता नहीं किया और गरीबों के लिए लड़ते रहे। उन्होंने कहा कि जॉर्ज एक ऐसे नेता थे जो मुंबई से आकर बिहार में लंबे समय तक राजनीति करते रहे। बिहार के लोगों ने भी उन्हें कभी पराया नहीं समझा। लेकिन उनके ही लोग अंतिम समय में उनका साथ छोड़ दिए। श्री चौधरी ने इसके बाद पत्रकारों से चर्चा करते हुए ओडिशा रेल हादसे की घटना पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि इस घटना से पूरा भाजपा मर्माहत है। उन्होंने कहा कि रेल मंत्री और राज्य के मुख्यमंत्री खुद घटनास्थल पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि मृतक के परिजनों के साथ भाजपा खड़ी है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने पूरे देश में आज के सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। इस मौके पर भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री भिखूभाई दलसानिया पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नंदकिशोर यादव बिहार सरकार के पूर्व मंत्री नितिन नवीन प्रदेश मुख्यालय प्रभारी सुरेश रुंगटा प्रदेश उपाध्यक्ष राधा मोहन शर्मा सिद्धार्थ शंभू राजेश वर्मा प्रदेश मंत्री सजल झा अजय यादव प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश कुमार सिंह अशोक भट्ट सोशल मीडिया के संयोजक मनन कृष्ण सहसंयोजक शुभम राज सिंह रितेश रंजन भाजपा नेता नरेश महतो अनुग्रह नारायण ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

लोजपा-(रा) ने अपने संगठन का किया विस्तार

पटना। लोजपा-(रा) अपने मिशन 2024-25 के तैयारी में युद्धस्तर पर संगठनात्मक कार्य कर रहा है। शनिवार को पार्टी के राज्य मुख्यालय में लोजपा-(रा) संसदीय बोर्ड ने अपने संगठन का विस्तार किया है। उक्त आशय की जानकारी संसदीय बोर्ड के प्रदेश प्रवक्ता अमन कुमार ने दिया। बताया कि कमलेश कुमार देव को पटना महानगर संसदीय बोर्ड का सचिव नियुक्त किया गया है। संसदीय बोर्ड की कमिटी राज्य,जिला,प्रखंड और पंचायतों में बनकर तैयार हो गया है। पूरे संगठन की समीक्षा बैठक 9 जुलाई को पटना के किसी बड़े सभागार में किया जायेगा। प्रदेश संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष हुलास पाण्डेय, उपाध्यक्ष कमलेश यादव,सोनू सिंह और युवा लोजपा के राष्ट्रीय महासचिव सह संसदीय बोर्ड के सदस्य अनिल कुमार पासवान इसके तैयारी में लगें है। कार्यक्रम में संसदीय बोर्ड के पटना महानगर अध्यक्ष माधव सिंह,प्रदेश सचिव अंकित कुमार, पटना पश्चिमी जिलाध्यक्ष प्रशांत कुमार, पूर्वी जिलाध्यक्ष सोनू कुशवाहा, प्रदेश प्रवक्ता अमन कुमार, संजय चौधरी उपस्थित थे।

मिशन चकाचक अभियान : रात्रि में विशेष सफाई एवं बैनर-पोस्टर हटाने का काम जारी

● पटना नगर निगम द्वारा शहर के सभी प्रमुख सड़कों एवं मार्केटों में चलाया जा रहा अभियान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना नगर निगम द्वारा मिशन चकाचक के अंतर्गत विशेष सफाई एवं जन जागरूकता की जा रही है। 3 आर सेंटर, कचरे के सेग्रीगेशन एवं विशेष सफाई अभियान के साथ रात्रि में टीम द्वारा सड़कों से अतिक्रमण, निर्माण सामग्रियां एवं यूनिपोल हटाने का कार्य किया जा रहा है। शहर की सुंदरता को खराब करने वाले अवैध रूप से लगे यूनिपोल से आमजन को आंधी तूफान के दौरान नुकसान भी पहुंचाते है। इससे आमजन के जीवन पर भी खतरा होता है। ऐसे में पटना नगर निगम द्वारा सभी यूनिपोलो को चिन्हित कर उनपर कार्रवाई की जा रही है। शहर के मुख्य मार्ग, बाजार एवं सार्वजनिक स्थलों पर निगम की टीम प्रत्येक दिन रात्रि में युनिपोल हटाने का कार्य किया जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण पर जागरूकता के लिए स्कूली छात्रों ने निकाली रैली

सहयोगी संस्था द्वारा स्कूली बच्चों के साथ पर्यावरण संरक्षण पर हुई चर्चा

पटना। पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर जागरूकता लाने, कार्बन उत्सर्जन तथा प्लास्टिक को कम करने और प्लास्टिक के इस्तेमाल को को लेकर नीतिगत बदलाव, बंजर भूमि पर जंगल तैयार करने, राष्ट्रीय राजमार्गों सहित नदियों, नहरों आदि जगहों पर पेड़ लगाने सहित जल स्त्रोतों का बचाव और को लेकर काम किया जा रहा है। पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस को लेकर सहयोगी संस्था द्वारा शनिवार को उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय में रैली निकाली गई। इस रैली में स्कूल के अध्यापक, शिक्षक तथा बड़ी संख्या में स्कूली छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। रैली को संबोधित करते हुए सहयोगी संस्था की निदेशिका रजनी जी ने कहा धरती को सुरक्षित रखना सभी की नैतिक जिम्मेदारी हैं। उन्होंने कहा कि हम धरती और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए संकल्प करें। इस रैली के दौरान बच्चों के साथ पर्यावरण के महत्व पर जानकारी और विचार साझा किये गये। बच्चों के साथ पर्यावरण के कारण होने वाले नुकसार और सबसे अधिक प्रभावित होने वाले समूहों पर चर्चा की गयी। बच्चों ने बताया कि बढ़ती गर्मी के कारण जीव-जंतु सहित मानव जीवन काफी प्रभावित होता है। साथ ही पेड़ों के कटने और बहुत अधिक खनन से जल की सतह का नीचे जाना, आसानी से पानी नहीं मिलन जैसी समस्याएं बहुत अधिक देखने को मिलती है। इस दौरान सहयोगी संस्था के साथ रजनी, उषा, धर्मेंद्र, उन्नति, लाजवंती, शारदा, मनोज, नीतीश, कुलसुम, प्रियंका, रूबी, सपना, रिंकी शामिल थे।

भाजपा का महिला विरोधी चेहरा बेनकाब:दीपंकर

● महिला पहलवानों के समर्थन में महागठबंधन का पटना में कैंडल मार्च

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़क भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग पर आज पटना में महागठबंधन के आह्वान पर आयोजित कैंडल मार्च में भाकपा-माले महासचिव का। दीपंकर भट्टाचार्य सहित महागठबंधन के अन्य दलों के कई नेताओं के साथ-साथ कार्यकताओं ने कैंडल मार्च किया। इनकम टैक्स से शाम 6 बजे शुरू होकर यह मार्च डाकबंगला चौराहा होते हुए स्टेशन गोलबंर तक गया। इंसाफ की इस लड़ाई को अग्रगति देते हुए महागठबंधन ने बिहार में अपना मोर्चा खोल दिया है. मार्च में महागठबंधन के कई विधायक भी उपस्थित थे। झंडे-बैनर और तख्तियां लेकर बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल थीं। माले महासचिव का. दीपंकर भट्टाचार्य ने कहा है कि विगत 28 मई को एक तरफ आज दिल्ली में संसद के नए भवन का उद्घाटन एक राजा के राज्याभिषेक की तरह हो रहा था, ठीक उसी समय उसी दिल्ली में इंसाफ के लिए महिला सम्मान पंचायत में एकत्रित महिला पहलवानों और नागरिकों पर बर्बर दमन ढाए गए। उन्होंने कहा कि पूरे देश में बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग जोर पकड़ने लगी है, लेकिन मोदी सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही है। उन्होंने अपील की है कि बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी व महिला पहलवानों के इंसाफ के सवाल पर बिहार में चौतरफा आंदोलन का विस्तार दें। भाजपा का महिला विरोधी चेहरा पूरी तरह से आज बेनकाब हो चुका है।

जॉर्ज साहब ने गैर बराबरी के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया :लोजपा रा

पटना। जॉर्ज फर्नांडिस ने गैर बराबरी के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया। समाजवादी चिंतक रहें जॉर्ज साहब का पूरा जीवन संघर्ष का रहा है। देश और दुनिया जानता है कि देश मे आपातकाल के दौरान उन्हें यातना का शिकार कैसे बनाया गया। यह बात शनिवार को लोजपा-(रा) के राज्य मुख्यालय में आयोजित जॉर्ज फर्नान्डिस के जयन्ती समारोह में अपने संबोधन भाषण में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी ने बोलते हुए कहा कि समाजवादी आंदोलन का लम्बा इतिहास रहा है। जॉर्ज साहब को समाजवादी आंदोलन को विश्व में फैलाने का कृतिमान प्राप्त है। बिहार में जिन लोगों को भी अपने प्रभाव संगठन क्षमता से नेता बनाया वे लोग ही जॉर्ज साहब को अन्तिम दिनों में प्रताड़ित किया और अपमानित किया। ऐसे लोग जो आज अपने को समाजवादी कह रहें है, उनका नाम इतिहास के पन्नों में काले अक्षरों में लिखा जायेगा। इस अवसर पर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सत्यानंद शर्मा, युवा लोजपा-(रा) के राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार पासवान, पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष विष्णु पासवान, संजय कुमार सिंह,अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव शंकर कुमार शर्मा,कार्यालय प्रभारी ओम प्रकाश भारती,सुरेश पासवान, अजय कुमार, छात्र नेता ऋषि कुमार,रमेश मुसहर, ललन यादव,राजीव कुमार ने अपने विचार व्यक्त किये। उक्त आशय की जानकारी पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दिया।

लंबित मामलों को संवेदनशीलता के साथ ससमय निष्पादित करें : डीडीसी

● एससी,एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत जिला सतर्कता एवं अनुश्रवण समिति की बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जिला पदाधिकारी, पटना डॉ. चन्द्रशेखर सिंह के निदेश पर उप विकास आयुक्त तनय सुल्तानिया की अध्यक्षता में शनिवार को समाहरणालय स्थित सभागार में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 नियम 1995 के तहत गठित जिला सतर्कता एवं अनुश्रवण समिति की बैठक हुई। उन्होंने कहा कि प्रशासन अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के सफल क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के प्रति अत्याचार के विरूद्ध शून्य सहिष्णुता के सिद्धान्त का अक्षरशः अनुसरण किया जा रहा है। अत्याचार निवारण प्रक्रिया में सम्पूर्ण तंत्र संवेदनशील, तत्पर एवं सजग है। बैठक में समिति के सदस्य सचिव सह जिला कल्याण पदाधिकारी राणा वैद्यनाथ प्रसाद सिंह द्वारा विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। डीडीसी ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 नियम-1995 के अन्तर्गत आयोजित विगत बैठक के अनुपालन स्थिति की समीक्षा की तथा अद्यतन प्रगति का जायजा लिया । अधिनियम अंतर्गत दर्ज मामलों की समीक्षा की गई। पुलिस द्वारा प्रतिवेदित एवं निष्पादित कांडों, समर्पित आरोप पत्रों, गिरफ्तारियों एवं मुआवजा भुगतान से संबंधित मामलों के भौतिक एवं वित्तीय प्रतिवेदन पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में जन-प्रतिनिधियों एवं अन्य सदस्यों द्वारा अपना-अपना सुझाव दिया गया। डीडीसी सुल्तानिया ने कहा कि सुझावों पर नियमानुसार अपेक्षित कार्रवाई की जाएगी। डीडीसी ने कहा कि अधिनियम के तहत लंबित कांडों के निष्पादन हेतु त्वरित अनुसंधान एवं पर्यवेक्षण करने तथा ससमय राहत अनुदान की राशि उपलब्ध कराने के लिए सभी कार्रवाई की गयी है। राज्य सरकार के संकल्प के उपबंधों के अनुसार अत्याचार के पीड़ितों, उनके परिवार के सदस्यों और आश्रितों को 24 घंटा के अंदर मुआवजा भुगतान सुनिश्चित किया जाता है। साथ ही उक्त योजना के तहत अन्य सुविधाएं निर्धारित समय में उपलब्ध करायी जाती है। डीडीसी श्री सुल्तानिया ने कहा कि सुसंगत धाराओं के तहत निर्धारित अवधि में अन्वेषण और आरोप पत्र दाखिल करने के लिए अपेक्षित कार्रवाई सुनिश्चित की जाती है। डीडीसी श्री सुल्तानिया ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत लंबित मामलों का शीघ्र निष्पादन करने का निदेश दिया। उन्होंने अधिनियम के तहत प्राप्त होने वाले मामलों को संवेदनशीलता के साथ ससमय निष्पादित करने का निदेश दिया।

शिकायतों का ससमय तथा गुणवत्तापूर्ण निवारण आवश्यक : डीएम

लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम : डीएम ने किया12 मामलों की सुनवाई एवं समाधान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जिलाधिकारी डॉ चंद्रशेखर सिंह ने शनिवार को अपने कार्यालय-कक्ष में बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 के तहत द्वितीय अपील में तथा बिहार सरकारी सेवक शिकायत निवारण नियमावली, 2019 के तहत प्रथम अपील में शिकायतों की सुनवाई की और उसका निवारण किया। डॉ. सिंह ने लोक शिकायत एवं सेवा शिकायत के कुल 12 मामलों की सुनवाई की गई एवं उसका समाधान किया। सेवा शिकायत के एक मामले में बाढ़ प्रखंड के सेवानिवृत पंचायत सचिव ब्रज किशोर सिन्हा ने प्रथम अपील में जिलाधिकारी के समक्ष परिवाद दायर किया था। अपीलार्थी की शिकायत है कि वेतन वृद्धि के पश्चात बकाया अंतर राशि का भुगतान नहीं किया गया है। साथ ही वेतन वृद्धि के पश्चात पेंशन बढ़ोतरी हेतु अग्रेतर कार्रवाई नहीं की गई है। सुनवाई में जिलाधिकारी ने पाया कि अपीलार्थी के शेष बकाया भुगतान हेतु आवंटन जिला पंचायत राज पदाधिकारी, पटना द्वारा लोक प्राधिकार प्रखंड विकास पदाधिकारी, बाढ़ के कार्यालय को उपलब्ध कराया गया है। भुगतान

संक्षिप्त खबरें

पुलिस ने किया 6 कार्टन शराब बरामद, कारोबारी फरार

विभूतिपुर थाना क्षेत्र के पतैलिया स्थित बांसवाड़ी से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर 46.110 लीटर विदेशी शराब बरामद की है। वहीं कारोबारी भागने में सफल रहा। जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष संदीप कुमार पाल ने बताया कि शुक्रवार को शराब की गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस सहायक अवर निरीक्षक रविशेखर तुलित के नेतृत्व में छापेमारी की गई। जहां से कुल 6 कार्टन में, 29 बोतल एवं 177 टेट्रा पैक शराब बरामद किया गया। वहीं स्थानीय चौकीदार के पहचान व पुलिस सहायक अवर निरीक्षक रविशेखर तुलित के बयान पर फरार कारोबारी पतैलिया निवासी शुभम कुमार उर्फ मन्नु तथा साखमोहन निवासी मोनू कुमार को नामजद एवं तीन चार अज्ञात के विरुद्ध मध निषेध अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

5 जून को होगा प्रखंड स्तरीय खरीफ कर्मशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

विभूतिपुर प्रखंड पंचायत समिति भवन विभूतिपुर के प्रांगण में 5 जून 2023 को दिन के 11:00 बजे से खरीफ कर्मशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम निदेशक कृषि बिहार पटना के पत्रांक-144/बामेती/2023-24/1294 दिनांक 17 मई 2023 एवं जिला कृषि पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक आत्मा समस्तीपुर के ज्ञापांक 305 दिनांक 23 मई 2023 के आलोक में किया जाएगा। कार्यक्रम को लेकर प्रखंड कृषि पदाधिकारी ने स्थानीय विधायक, प्रखंड प्रमुख एवं उप प्रमुख, जिला परिषद सदस्य, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी, पंचायती राज पदाधिकारी, प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी, सहकारिता पदाधिकारी, प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी, प्रखंड उद्यान पदाधिकारी, मुखिया, पंचायत समिति सदस्य एवं प्रगतिशील कृषक को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। साथ ही कृषि समन्वयक, किसान सलाहकार, सहायक तकनीकी प्रबंधक को सूचित करते हुए निर्देश दिया गया है कि अपने अपने पंचायत के सभी जनप्रतिनिधियों को जानकारी देते हुए 5-5 प्रगतिशील कृषक के साथ ससमय कार्यक्रम में भाग लेंगे।

मारपीट की घटना में दो गंभीर रूप से जख्मी

कल्याणपुर, समस्तीपुर। चकमेहसी थाना क्षेत्र के नमापुर दरियापुर गांव में आपसी विवाद में हुई मारपीट की घटना में 2 लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से जख्मी लोगों को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कल्याणपुर में भर्ती कराया गया। वहीं प्राथमिक उपचार के बाद दोनों जख्मी को सदर अस्पताल समस्तीपुर भेज दिया गया। वहीं जख्मी व्यक्ति की पहचान नामपुर दरियापार गांव निवासी ललन कुमार एवं रूबी कुमारी के रूप में हुई है। वहीं थानाध्यक्ष चन्द्र किशोर टुडू ने बताया कि जख्मी के परिजन द्वारा आवेदन देने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बैगलेश डे पर पर्यावरण संरक्षण हेतु बच्चों ने किया सांस्कृतिक कार्यक्रम

आदापुर। प्रखंड क्षेत्र के भवानीपुर पंचायत अंतर्गत राजकीय नवसृजित प्राथमिक विद्यालय सोनारटोला चैनपुर में बैगलेश डे पर शनिवार को पर्यावरण संरक्षण हेतु बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक उमेशचंद्र सहनी ने किया। प्राप्त सूचना के अनुसार उक्त विद्यालय में बच्चों ने पेड-पौधे के संरक्षण,जल संरक्षण आदि के लिए कार्यक्रम के माध्यम से शेष बच्चों को जागरूक किया। हालांकि अगले सोमवार को विश्व पर्यावरण दिवस है। उक्त बाबत विद्यालय के प्रधान शिक्षक शिव शंकर गिरि ने बताया कि जीवों का अस्तित्व, पर्यावरण संरक्षण पर्यन्त ही सुरक्षित है। उदाहरणार्थ, अर्द्ध सजीव कोरोना की भयावहता को दुनिया देख चुकी है। उक्त त्रासदी में दवाओं के साथ पेड़-पौधे भी जीवन के रक्षा के लिए उपयुक्त माने गये थे। विश्व पर्यावरण दिवस ग्रीष्मावकाश में है।अतएव बच्चों को पर्यावरण की रक्षा हेतु कर्तव्यबोध कराना जरूरी है। मौके पर शिक्षिका रींकी कुमारी, रसोईया मैना देवी, विभा देवी, उदन राय सहित प्रसून कुमार गिरि, आशीष कुमार, रुपेश कुमार, प्रिंस कुमार, संजीव कुमार, सज्जन कुमार, निधी कुमारी, विनीति कुमारी, अंजली कुमारी, नेहा कुमारी,अन्नु कुमारी, पूनम कुमारी, काजल कुमारी, सृष्टि कुमारी, सुधा कुमारी सहित सैकड़ों बच्चे मौजूद थे।

सेल टैक्स डिपार्टमेंट की छापेमारी में 15 लाख का सामान जब्त

स्टॉक वेरिफिकेशन में पायी गई थी अनियमितता, माल खरीद संबंधी कोई कागज नहीं दिखा पाए व्यवसायी

समस्तीपुर, प्रात: किरण संवाददाता

एसजीएसटी कैश में टैक्स का भुगतान नहीं कर शत-प्रतिशत आईटीसी के माध्यम से भुगतान करने वाले व्यवसायियों के विरुद्ध समस्तीपुर सेल टैक्स डिपार्टमेंट ने कड़ा रुख अख्तियार कर लिया है। इसी कड़ी में जिले के ईलमासनगर स्थित साहू ट्रेडर्स पर सेल टैक्स डिपार्टमेंट के द्वारा कड़ी कार्रवाई करते हुए कुल 15 लाख रुपए के सामानों की जब्ती की गई है। मिली जानकारी के अनुसार समस्तीपुर अंचल के प्रभारी राज्य कर संयुक्त आयुक्त प्रमोद कुमार के निर्देश पर शनिवार को सेल टैक्स डिपार्टमेंट के तीन सदस्ययी पदाधिकारियों के टीम के द्वारा साहू ट्रेडर्स के बही-खातों व स्टॉक का निरीक्षण किया गया। जिसमें अनियमितता पायी गई। वहीं स्टॉक के भौतिक सत्यापन में व्यवसायी के द्वारा क्रय व विक्रय संबंधी कोई भी कागज नहीं प्रस्तुत किया गया। जिसके बाद कुल 15 लाख रुपए के सामानों को विभाग के द्वारा जब्त कर लिया गया। बताया गया कि साहू ट्रेडर्स का छड़, गिट्टी, लोहा व सीमेंट का व्यवसाय है। विभागीय निर्देश के बाद किए गए निरीक्षण में टैक्स संबंधी अनियमितता पायी गई। जिसके बाद विभाग के द्वारा कार्रवाई की गई है। विभाग के अनुसार साहू ट्रेडर्स के द्वारा अपने कर का भुगतान एसजीएसटी कैश में कर का भुगतान के बजाय शत-प्रतिशत आईटीसी के माध्यम से किया जा रहा था। वहीं बताया गया कि साहू ट्रेडर्स के विरुद्ध अग्रतर कार्रवाई को लेकर विभाग को प्रतिवेदन प्रेषित किया गया है। सेल टैक्स डिपार्टमेंट की छापेमारी टीम में राज्य कर सहायक आयुक्त मुनेश्वर प्रसाद, राज्य कर सहायक आयुक्त आबिद सुबहानी एवं राज्य कर सहायक आयुक्त रौशन कुमार शामिल थे।

विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर पीएचसी शिवाजीनगर से निकाली गई साइकिल रैली

शिवाजीनगर, प्रात: किरण संवाददाता

शिवाजीनगर प्रखंड अंतर्गत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर स्थानीय लोग और बच्चों के द्वारा साइकिल रैली निकाला गया। हेल्थ मैनेजर राकेश रंजन के द्वारा साइकिल के उपयोग के फायदे को बताया गया। उन्होंने बताया कि साइकिल से हर किसी का बचपन जुड़ा है, मगर आज पर्यावरण बचाने के साथ खुद के शरीर को फिट करने के लिए साइकिल मददगार है। साइकिलिंग व्यायाम करने का सबसे आसान और मजेदार तरीका है। बस रोजाना आधे घंटे के लिए साइकिल की सवारी करने से करीब 300 किलो कैलोरी बर्न की जा सकती है। आज साइकिल के पहिये पर जिंदगी दौड़ रही है। इससे वजन घटने के साथ हृदय संबंधी जोखिम कम हो जाते हैं। विश्व साइकिल दिवस हर साल 3 जून को मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को साइकिल चलाने के फायदों के बारे में जागरूक करना है। भारत पूरी दुनिया में साइकिल के निर्माण में दूसरे नंबर पर आता है। साइकिल का प्रयोग हमें प्रदूषण से भी बचाता है। 2018 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 3 जून को विश्व साइकिल दिवस के रूप में घोषित किया। प्रोफेसर लेस्जेक सिबिल्स्की ने विश्व साइकिल दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। इस दिन को मनाने के लिए तुर्कमेनिस्तान समेत 56 देशों ने सहयोग किया था। साइकिल चलाने से शरीर स्वस्थ रहता है और स्टैमिना भी बढ़ता है, हाइपरटेंशन सहित अन्य रोग होने की संभावना काफी कम रहती है। मौके पर डॉ सुभाष कुमार सिंह, हेल्थ मैनेजर राकेश रंजन, बीएचएम, सुनील, सीसीएच नवीन कुमार सिंह, रेशमा कुमारी, बीसीएम रंजना कुमारी, सहित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कर्मी रैली में उपस्थित थे।

स्मार्ट क्लास बच्चों के लिए होगा बेहतर साबित : डीपीओ

सरायरंजन, प्रात: किरण संवाददाता

सरायरंजन प्रखंड के अल्फा मध्य विद्यालय विशंभरपुर एलौथ में शनिवार को स्मार्ट क्लास का उद्घाटन हुआ। स्मार्ट क्लास का विधिवत उद्घाटन डीपीओ मानवेंद्र कुमार राय ने फीता काटकर किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि स्मार्ट क्लास बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता में बेहतर सिद्ध होगा। कहा कि शिक्षा विभाग की तरफ से दिए गए सभी ऐप को स्मार्ट क्लास द्वारा आसानी से बच्चों को पढ़ाया जा सकता है। वहीं उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए जिला प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष अनंत कुमार राय ने कहा कि स्मार्ट क्लास आज के समय की मांग है। स्मार्ट क्लास की सहायता से बच्चों का नामांकन बढ़ाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि आप शिक्षकों पर ही समाज निर्माण की जिम्मेदारी है। इसलिए शिक्षा विभाग को मानव संसाधन विभाग कहते हैं। उन्होंने शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की नसीहत दी। मौके पर मुख्य पार्षद विद्या कुमारी, खुर्शीद आलम, डॉ० विनय कुमार चौधरी, प्रधानाध्यापक रवींद्र कुमार चौधरी, वरीय शिक्षिका अमिता कुमारी सहित विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं विद्यालय शिक्षा समिति के सभी सदस्य मौजूद रहे।

शहीद संजीत कुमार के 18वें शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि सभा सह मेगा टेस्ट का हुआ आयोजन

विभूतिपुर, प्रात: किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत निशुल्क शिक्षण संस्थान शहीद संजीत स्मृति क्लब द्वारा यूनिक चिल्ड्रंस एकेडमी के प्रांगण में शहीद संजीत कुमार का 18वां शहादत दिवस सह श्रद्धांजलि समारोह मनाया गया। इस अवसर पर एक मेगा टेस्ट आयोजित किया गया। जिसमें कुल 500 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, जिसमें से टॉप 30 लड़का एवं टॉप 15 लड़कियों को पुरस्कृत किया गया। जिसमें लड़के वर्ग में प्रथम स्थान रोसड़ा की कोमल कुमार राज, दूसरा स्थान समस्तीपुर के संदीप कुमार और तीसरा स्थान ढट्ठा के राज कुमार ने प्राप्त किया, वहीं लड़की वर्ग में प्रथम स्थान खदियाही की कल्पना कुमारी, दूसरा स्थान बसोटोल की समा प्रवीण और तीसरा स्थान मालपुर की सुष्मिता कुमारी ने प्राप्त किया। इस मौके पर शहीद संजीत स्मृति क्लब के 100 से अधिक उपस्थित सफल मेंबरों को सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम शहीद संजीत कुमार के छोटे भाई सह क्लब संचालक अमरदीप कुमार के निर्देशन में किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता यूनिक चिल्ड्रंस एकेडमी के डायरेक्टर अर्जुन कुमार ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन सचिन कुमार (जूनियर इंजीनियर, रेलवे समस्तीपुर) ने किया। इस मौके पर सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण की मुखिया ममता देवी, विभूतिपुर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी, नवीन कुमार, पत्रकार मनोरंजन मिश्र, पीएन झा, चंदन कुमार, रामयतन प्रसाद, शिक्षक अनिल कुमार, राम शिक्षक पुकार महतो, भोला प्रसाद सिंह, रोसड़ा के शिक्षाविद मुकेश राय, बटहा के शिक्षाविद कैलाश सर, नीरज कुमार, विभूतिपुर के सब इंस्पेक्टर चौधरी सहित क्लब के वरिष्ठ मेंबर चंदन कुमार, संजय कुमार सिंह, लोको चालक शंभू कुमार, विकास भारती, ओम प्रकाश, विमलेश कुमार विमल, प्रियंका प्रिया, एसआई मनीष पंडित, संजीत कुमार, गोपाल कुमार, सुधीर पंडित वरिष्ठ मेंबर प्रमोद कुमार, संजय कुमार, सुमंत कुमार, अजय कुमार आदि उपस्थित थे।

सुपारी किलर डब्ल्यू झा को विभूतिपुर पुलिस लेगी रिमांड पर

विभूतिपुर, प्रात: किरण संवाददाता

विभूतिपुर दोहरे हत्याकांड के सुपारी लेने वाला शूटर सप्लायर डब्ल्यू झा को विभूतिपुर पुलिस लेगी रिमांड पर। रिमांड पर लेकर करेगी पूछताछ। पूछताछ के बाद सही शूटर का पता चल सकेगा। बता दें कि 20 फरवरी 2023 सोमवार की सुबह को सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण पंचायत के पूर्व मुखिया सुरेंद्र प्रसाद सिंह एवं उनके सहयोगी सतनारायण सिंह उर्फ मंत्री को मरडीहा कचहरी के निकट तिनवटिया सड़क पर बदमाशों ने अंधाधुंध फायरिंग कर हत्या कर दिया। वे प्रतिदिन की भांति चोचाही भरपूरा चौर स्थित चिमनी पर जा रहे थे। दोहरे हत्याकांड का उद्भेदन करते हुए पुलिस ने पूर्व विधायक के भाई लालबाबू सिंह एवं पूर्व विधायक रामबालक सिंह सहित अन्य सहयोगी लाइनर को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। वहीं सूटर की पुलिस को अभी तक तलाश जारी था। जैसे हैं सुपारी किलर डब्लू झा शुक्रवार को आत्मसमर्पण किया। खबर मिलते ही विभूतिपुर थाना भी दलसिंहसराय पहुंची थी। क्योंकि सुपारी किलर डब्लू झा भी पूर्व मुखिया सुरेंद्र प्रसाद सिंह एवं उनके सहयोगी दोहरा हत्याकांड के अप्राथमिक अभियुक्त था। वहीं बिभूतिपुर थाना अध्यक्ष संदीप कुमार पाल ने बताया कि डब्ल्यू झा को रिमांड पर लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

लावारिस हालत में मोटरसाइकिल बरामद

शिवाजीनगर, प्रात: किरण संवाददाता

शिवाजी नगर प्रखंड क्षेत्र से गुजरने वाली रोसड़ा-हथौड़ी मुख्य सड़क के रहटौली गांव के पास शुक्रवार देर रात लाल रंग का ग्लैमर मोटरसाइकिल जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर 33-एआर 4512 नंबर की मोटरसाइकिल लावारिस हालत में पड़ी मिली। इसकी सूचना मिलने के साथ ही थानाध्यक्ष मनू राय वहां पहुंचकर बाइक को जब्त कर थाना ले गये। साथ ही उक्त बाइक के मालिक की तलाश शुरू कर दी है। खबर लिखे जाने तक मोटरसाइकिल किसकी है और वहां कैसे पड़ी थी इसकी जानकारी नहीं हो सकी है। बताया जाता है कि शुक्रवार रात करीब साढ़े एक बजे राहगीरों ने रहटौली गांव के समीप उक्त मोटरसाइकिल को लावारिस हालत में देखा। वहां बाइक देखकर लोगों को लगा कि कोई सड़क दुर्घटना में गिर गया होगा। लोगों ने आसपास बाइक चालक की खोज की लेकिन वहां कोई नहीं था। तभी लोगों को लगा कि कहीं सड़क लूट की घटना को अंजाम देनेवाले गिरोह के लोगों ने लूट की घटना को अंजाम देने के लिए जाल तो नहीं बिछाया है। राहगीरों ने यह आभास होते ही सड़क किनारे पड़ी मोटरसाइकिल के बारे में थानाध्यक्ष को सूचना दी। थानाध्यक्ष पुलिस बल के साथ पहुंचकर मामले की पड़ताल शुरू कर दी। वे आसपास खोजबीन बाइक चालक की तलाश की। वहां कोई नहीं मिला तो बाइक को जब्त कर थाना ले जाया गया। थानाध्यक्ष मोनू राय ने बताया कि अभी तक किसी ने मोटरसाइकिल पर दावेदारी पेश नहीं की है। बाइक के नंबर से पता लगाया जा रहा है कि यह किसकी है।

लोहिया आश्रम में मनाई गई पूर्व केंद्रीय मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस की जयंती

समस्तीपुर, प्रात: किरण संवाददाता

समस्तीपुर शहर स्थित लोहिया आश्रम में शनिवार को देश के महान समाजवादी मजदूर नेता, समता पार्टी के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारत सरकार के पूर्व उद्योग, रेल एवं रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस के जयंती के अवसर पर उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए उनको श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं जदयू के प्रदेश महासचिव डॉ दुर्गेश राय ने जार्ज साहब को याद करते हुए कहा कि जार्ज साहब का जीवन संघर्षों से भरा रहा है। उन्होंने एक मजदूर नेता के रूप में मुंबई महानगर में अब तक का सबसे बड़ा टैक्सी हड़ताल का नेतृत्व किया था। 1974 में दुनिया के सबसे बडे रेल हडताल का भी नेतृत्व किया था। 1977 में जनता पार्टी की सरकार में उद्योग मंत्री रहते विदेशी कंपनी कोको कोला को देश से बाहर किया था। 1990 में रेल मंत्री रहते समस्तीपुर डीजल शेड के लिए रेल बजट में आवंटन करके इसके निर्माण का मार्ग भी उन्होंने ही खोला था। जार्ज साहब का संघर्ष और उनके काम आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत रहेगा। इस अवसर पर जिला जदयू के मीडिया प्रभारी अनस रिजवान, जिला सचिव राजकुमार शाह, रविंद्र ठाकुर, सरायरंजन के जदयू प्रखंड अध्यक्ष रामाश्रय सिंह, राम शोभित राय नंदकिशोर राय, शिव नारायण राय सहित कई साथी ने श्रद्धांजलि अर्पित किया।

बीडीओ सह प्रखंड नियोजन इकाई सचिव ने शिक्षक पर की अनुशासनिक कार्रवाई

शिवाजीनगर, प्रात: किरण संवाददाता

शिवाजीनगर प्रखंड विकास पदाधिकारी सह प्रखंड नियोजन इकाई सचिव हरि ओम शरण ने उत्क्रमित मध्य विद्यालय मधुरापुर के शिक्षक कुवर कन्हैया सिंह पर अनुशासनिक कार्रवाई करते हुए उनका स्थानांतरण प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय घिवाही में किया है। जहां सहायक शिक्षक कुवर कन्हैया सिंह ने प्रधानाध्यापक अरुण कुमार के पास जाकर विद्यालय में योगदान कर लिया। बीडीओ के कार्यालय आदेश में दशार्या गया है कि जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों, कर्मियों एवं विद्यालय के छात्र-छत्राओं से प्राप्त शिकायतों के आलोक में पदाधिकारियों के द्वारा किए गए जांच के क्रम में सेवा संगीता के विरुद्ध आचरण किए जाने का दोषी पाए जाने की स्थिति में सहायक शिक्षक कुवर कन्हैया सिंह पर अनुशासनिक कार्रवाई एवं सेवाशर्त नियमावली 2020 के कंडिका 15 (।।।) में निहित प्रावधानों के आलोक में प्रखंड नियोजन इकाई के द्वारा सर्वसम्मति से स्थानांतरण का निर्णय लिया गया और श्री सिंह को नियोजन इकाई के द्वारा कड़ी चेतावनी दी गई है कि भविष्य में कर्तव्य के प्रति निष्ठा नहीं रखने निर्धारित आचरण संहिता का निर्वहन नहीं करने की स्थिति में शिक्षक नियोजन नियमावली 2020 के आलोक में निलंबन व सेवा मुक्त करने की कार्रवाई की जाएगी। पत्र के आलोक में वे स्वतः विरमित कर दिए गए जहां शिक्षक ने 3 मई को अपना योगदान कर लिया। अब उनकी अनुपस्थिति विवरणी उत्क्रमित मध्य विद्यालय घिवाही के प्रधानाध्यापक के द्वारा ही दी जाएगी।

बाइक की चपेट में आने से वृद्ध की मौत

सरायरंजन, प्रात: किरण संवाददाता

सरायरंजन थाना क्षेत्र के मनिका गांव स्थित एसएच 88 पर शुक्रवार की शाम साईकिल सवार एक वृद्ध के बाइक की चपेट में आने से गंभीर रूप से जख्मी हो गया। उक्त व्यक्ति को जख्मी हालत में इलाज के लिए समस्तीपुर भेजा गया। बेहतर चिकित्सा के लिए चिकित्सा पटना रेफर कर दिया। पटना ले जाने के क्रम में रास्ते में ही वृद्ध की मौत हो गई। मृतक की पहचान घटहो थाना क्षेत्र के मनिकपुर गांव निवासी रामचंद्र साह (75) के रूप में की गई है। घटना के संबंध में लोगों ने बताया की उक्त वृद्ध शुक्रवार को दिन में साईकिल से मनिका गांव में अपने किसी रिश्तेदार के यहां से शाम में घर लौट रहे थे। इसी दौरान उक्त जगह पर अज्ञात बाइक चालक ने ठोकर मार दी। जिससे बुरी तरह घायल हो गये थे। पुलिस व ग्रामीणों के सहयोग से उक्त जख्मी व्यक्ति को इलाज के लिए समस्तीपुर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालत को गंभीर देखते हुए चिकित्सकों ने बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया लेकिन रास्ते में ही दम तोड़ दी। मौत की सूचना पाते हीं परिजनों में मातमी सन्नाटा पसर गया। मृतक के परिजनों का रोरोकर बुरा हाल था। घटना के बाद थानाध्यक्ष रविकांत कुमार ने मृतक के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए समस्तीपुर सदर अस्पताल भेज दिया पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने मृतक के शव को परिजनों के हवाले कर दिया है। मृतक के परिजनों के प्रति मुखिया हितेश कुमार ने शोक व्यक्त किया है।

भूख हड़ताल का लगातार पांचवा दिन जारी, बिगड़ रही सेहत

प्रात: किरण संवाददाता

रक्सौल। आन्दोलन के दसवें दिन एवं भूख हड़ताल पांचवें दिन लगातार जारी रहा। अनुमंडलीय अस्पताल के डॉक्टरों के जांच में भूख हड़ताल पर बैठे दोनो व्यक्तियों का स्वास्थ्य अब कमजोर हो रहा है, इसलिए रेल के स्थानीय पदाधिकारियों ने आन्दोलन बंद करने का निवेदन किया है। इस संबंध में रंजित सिंह ने कहा कि रक्सौल से सुबह 6.15 में और जिला मुख्यालय से लगभग 7.00 बजे भाया सुगौली-रामगढ़वा रक्सौल ट्रेन चलाने की बात कर रहे हैं, जिस पर अभी कोई सहमति बनती नहीं दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि जब कोरोना काल से पूर्व पांच जोड़ियां ट्रेनें रक्सौल से मुजफ्फरपुर और पाटलिपुत्रा के लिए चलती थी, जो आज महज तीन जोड़ी ट्रेन चल रही है, जो रक्सौल और रामगढ़वा वासियों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। श्री सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य में दिन प्रतिदिन गिरावट हो रही है, अगर रेल प्रशासन ने जल्द से जल्द पहल नहीं किया तो आन्दोलन अनवरत जारी रहेगी। उक्त धारना स्थल पर अनशन कर्ता श्लोक कुमार के साथ कांग्रेस नेता प्रोफेसर अखिलेश दयाल, राजद महासचिव मदन प्रसाद गुप्ता, वशिष्ठ ठाकुर, प्रदीप कुमार,किशन साह, शंकर शर्मा, वकील अंसारी, मनोरंजन तिवारी, पवन कुमार तिवारी, महावीर सर्राफ सहित अनेकों गणमान्य उपस्थित थे।

टाटा साल्ट ने शुरू किया "तेज बच्चों से ही तो तेज देश बनता है" कैम्पेन

प्रात: किरण संवाददाता

पटना। भारत में आयोडीन युक्त नमक सेगमेंट में अग्रणी और मार्केट लीडर टाटा साल्ट ने तेज बच्चों से ही तो तेज देश बनता है कैम्पेन शुरू किया है। देश की सेहत, देश का नमक टाटा साल्ट ब्रांड की इस मूल अवधारणा के अनुरूप नया अभियान तैयार किया गया है। इस अभियान में बच्चों के सामान्य मानसिक और भावनात्मक विकास के महत्व पर जोर दिया गया है। अभियान ने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि बच्चों को पर्याप्त मात्रा में आयोडीन मिलता रहना चाहिए, जो बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक प्रमुख सूक्ष्म पोषक तत्व है। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स की प्रेसिडेंट, पैकेज्ड फूड्स - इंडिया, सुश्री दीपिका भान ने कहा, टाटा साल्ट राष्ट्र के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। हम मानसिक स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त आयोडीन के सेवन के महत्व को अच्छी तरह से समझते हैं। हर बच्चे के विकास के लिए उसे पर्याप्त मात्रा में आयोडीन मिलना जरूरी है यह हम जानते हैं और टाटा साल्ट के हर पैकेट में हम वह देते हैं क्योंकि हमारा मानना है कि श्तेज बच्चों से ही तो तेज देश बनता है। इस कैम्पेन में एक माँ और बेटी के बीच की बातचीत को दिखाया गया है। माँ अपनी बेटी के साइंस प्रोजेक्ट, स्कॉलरशिप, कंप्यूटर एग्जाम और स्कुल प्रतियोगिताओं के बारे में चिंतित हैं, लेकिन आत्मविश्वासी बेटी उन्हें सुकून भरी प्रतिक्रिया देती है। यह लड़की अपने स्कूल की कैप्टेन है और वह पूरे आत्मविश्वास के साथ माँ से कहती है - नो प्रॉब्लम मम्मी, नो प्रॉब्लम हर दिन के खाने में खाना पकाते हुए माँ टाटा नमक का उपयोग कर रही है, यह दृश्य हर दिन के खाने में पर्याप्त मात्रा में आयोडीन के सेवन से मिलने वाले उचित पोषण और तेज बुद्धि का प्रतीक है। इस अभियान में यह दृश्य बहुत ही खूबसूरत ढंग से दशार्या गया है। टाटा साल्ट ब्रांड को अपनी विशिष्ट, अत्याधुनिक प्रक्रिया पर बहुत गर्व है। इस प्रक्रिया से ही उपभोक्ताओं को टाटा नमक जिसमें डाला गया है ऐसे हर खाने से आवश्यक मात्रा में आयोडीन मिलता है। उचित आयोडाइजेशन के लिए ब्रांड की प्रतिबद्धता ने बच्चों में सामान्य तरीके से बेहतर मानसिक और बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करने और बच्चों के समग्र विकास में योगदान देने के प्रयासों को मजबूत किया है। ब्रांड का मानना है कि बच्चें अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर पाएं इसके लिए उन्हें सशक्त बनाने से एक मजबूत, तेज बुद्धि और उज्ज्वल भविष्य से संपन्न राष्ट्र का निर्माण होगा। मानो अपने ही घर का कोई किस्सा चल रहा हो ऐसा एहसास देने वाली यह म्यूजिकल फिल्म आपको खूब पसंद आएगी।

अष्टांग योग से शरीर और मन की होती है शुद्धि

सरायरंजन, प्रात: किरण संवाददाता

सरायरंजन, समस्तीपुर। सरायरंजन प्रखंड के मध्य विद्यालय गंगापुर में शनिवार को बैगलेस सैटरडे के अवसर पर योग गुरु आचार्य वीरेंद्र चौधरी ने अष्टांग योग के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने कहा कि अष्टांग योग से शरीर एवं मन की अशुद्धियां दूर होती हैं और उसके अभ्यास से आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त होने लगती हैं। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य जीवन को संवारना और समृद्ध करना है। मनुष्य की दैहिक, दैविक और भौतिक पीड़ा को दूर करने के लिए भारतीय ऋषियों ने योग विद्या को दीपक के रूप में प्रज्जवलित किया जो आज पूरी मनुष्य जाति को लाभ दे रही है। मौके पर प्रधानाध्यापक अखिलेश ठाकुर, राज कुमार, संजीत कुमार, नूतन कुमारी, ज्योति कुमारी, अंबिका कुमारी समेत सभी छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

समस्तीपुर में अपराधियों के हौसले बुलंद, पिस्टल के बट से चौकीदार को मारकर किया गंभीर रूप से घायल

समस्तीपुर, प्रात: किरण संवाददाता

समस्तीपुर में अपराधियों का मनोबल इस कदर बढ़ चुका है कि अब वह पुलिस विभाग पर ही प्रहार कर रहा है। मिली जानकारी के अनुसार समस्तीपुर मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के लगूनिया सूर्यकंठ में शुक्रवार की रात अपराधियों ने मुफ्फसिल थाना के चौकीदार को पिस्टल के बट से मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायल चौकीदार की पहचान सुनील पासवान के रूप में बतायी गई है। जिसके बाद आनन-फानन में परिजनों के द्वारा इलाज के लिए सुनील पासवान को समस्तीपुर सदर अस्पताल ले जाया गया। इस घटना को लेकर घर चौकीदार सुनील पासवान के द्वारा गांव के ही एक व्यक्ति को नामजद व पांच अन्य अज्ञात के विरुद्ध थाने में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज कर अविलंब दोषियों के ऊपर कार्रवाई की मांग की गई है। वहीं, इस बाबत मुफस्सिल थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि अपराधियों के हमले में गंभीर रूप से घायल हुए चौकीदार के द्वारा आवेदन दिया गया है। प्राथमिकी दर्ज करने की प्रक्रिया की जा रही है। उन्होंने बताया कि आरोपियों को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। घटना के संबंध में घायल चौकीदार सुनील पासवान ने बताया मुफस्सिल थाना से कार्य समाप्ति के उपरांत अपने घर जा रहे थे इसी दौरान लगनिया सूर्यकंठ में एक शादी समारोह में सड़क किनारे हथियार लेकर बारात में डांस कर रहे बदमाश का जब उन्होंने वीडियो बनाने का प्रयास किया तो अपराधियों ने उन्हें पिस्टल के बट से मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। जहां समस्तीपुर सदर अस्पताल में घायल चौकीदार का इलाज कराया गया और उसके सिर पर आंख के पास तीन टांके भी लगाए गए हैं। शादी समारोह में संभवत हर्ष फायरिंग करने को लेकर अवैध हथियार के साथ डांस कर रहे अपराधियों के द्वारा चौकीदार पर पिस्टल के बट से हमला किया जाना पूरे मुफ्फसिल पुलिस पर हमला माना जा रहा।

भगवान शिव द्वारा कही गई अमर कथा है श्रीरामचरितमानस : सत्यनारायण

सरायरंजन, समस्तीपुर। देवाधिदेव महादेव बाबा अमरनाथ द्वारा माता पार्वती को सुनाई गई दिव्य अमर कथा है रामचरितमानस की सुरम्य कथा। उससे बात करता हूं अखिल भारतीय रामचरित मानस प्रचार महासंघ के राष्ट्रीय सचिव आचार्य डॉक्टर सत्य नारायण मिश्र ने प्रखंड के चैनपुर गांव में आयोजित रामचरितमानस के 57 वा सम्मेलन को संबोधित करते हुए। मुजफ्फरपुर के क्ष

संक्षिप्त खबरें

श्रीपुर में जमीनी विवाद को लेकर मारपीट प्राथमिकी दर्ज

फुलवरिया। श्रीपुर ओपी क्षेत्र के गणेश डूमर गांव में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में खूनी संघर्ष हो गया। जिसमें एक पक्ष से दंपति गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास के लोगों ने इलाज के लिए स्थानीय मरछियां देवी रेफरल अस्पताल फुलवरिया में दाखिला कराया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद दोनों की स्थिति नाजुक देख बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गोपालगंज रेफर कर दिया। जहां इलाज जारी है। घायलों में गणेश डूमर गांव निवासी शंकर मांझी तथा उनकी पत्नी किरण देवी शामिल है। इस मारपीट के बाद घायल शंकर मांझी ने थाने में अपने ही गांव के महावीर मांझी सहित चार लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई है। जिसमें उनके द्वारा आरोप लगाया गया है कि जमीनी विवाद को लेकर उक्त लोग अचानक आए और बेवजह गाली गलौज करते हुए लाठी-डंडों से मारपीट कर मुझे घायल कर दिया। इसी बीच बीच-बचाव करने आई मेरी पत्नी किरण देवी को भी उक्त लोगों ने लाठी-डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया। इतना ही नहीं उक्त लोगों ने मेरे पत्नी के गले से मंगलसूत्र तथा कान का बाली जबरन तो लिया।

थावे दुर्गा मंदिर में मोबाइल चोरी करते दो महिला गिरफ्तार

थावे। प्रसिद्ध थावे दुर्गा मंदिर में पूजा अर्चना करने आयी महिला श्रद्धालु से मोबाइल की चोरी करने वाली दो महिलाओं को पुलिस ने शनिवार को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस गिरफ्तार महिलाओं से पूछताछ करने में जुट गयी है। बताया जाता है कि सिवान जिले के मुस्फिल थाने के सराव गांव की महिला रीमा देवी शुक्रवार को पूजा करने दुर्गा मंदिर में आई थी। जहां मंदिर परिसर में काफी भीड़ थी। इसी दौरान दो महिलाओं ने पर्स से मोबाइल की चोरी कर ली। महिला के द्वारा तत्काल इसकी सूचना थाने को दी गयी। पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुए दोनो महिलाओं की खोजबीन शुरू कर दी। काफी खोजबीन के बाद दोनो महिलाओं को दुर्गा मंदिर गोलंबर चैक के पास गिरफ्तार कर लिया गया। महिला पुलिस की तलाशी लेने पर बरौली थाने के सिसई गांव के शोभा देवी के पास दो मोबाइल बरामद हुआ। जबकी इसी गांव के ललीता देवी के पास एक मोबाइल बरामद किया गया। थानाध्यक्ष शशि रंजन कुमार ने बताया कि गिरफ्तार चोरी के आरोपित महिलाओं के विरुद प्राथमिकी कर शनिवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

अज्ञात बाइक की ठोकर से अधेड़ व्यक्ति घायल

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के भोरे भिंगारी मुख्य पथ पर पाखोपाली के समीप अज्ञात बाइक की ठोकर से एक अधेड़ व्यक्ति गंभीर रूप से जख्मी हो गए। राहगीरों द्वारा जख्मी अधेड़ को इलाज के लिए भोरे रेफरल अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद स्थिति को गंभीर देखते हुए सदर अस्पताल गोपालगंज के लिए रेफर कर दिया। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के खलवागांव निवासी हरिवंश मिश्र एक निमंत्रण में यूपी के देवरिया जिले के भाटपार रानी में गए थे।

झोपड़ी में आग लगा कर फंसाने की कोशिश का पुलिस ने किया खुलासा

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के जिगना गांव में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुए मारपीट के बाद झोपड़ी में आग लगने के वायरल वीडियो का पुलिस ने खुलासा कर लिया है। पुलिस की जांच में यह बात सामने आई है कि मारपीट की घटना के प्रथम पक्षकार अलगू राम द्वारा ही झोपड़ी में आग लगा कर दूसरे पक्ष को फंसाने की कोशिश की गई है। पुलिस जांच के अनुसार वायरल वीडियो में 45-50 सेकंड के अन्तराल में जो व्यक्ति वीडियो बना रहा है, वह खुद ही कह रहा है कि आग लगाये तो कोई देखा तो नहीं या कोई वीडियो नहीं न बनाया है। इससे स्पष्ट है कि आग झोपड़ी में प्रथम पक्ष के द्वारा ही लगाकर वीडियो को वायरल किया गया है। प्रथम पक्ष के अलगू राम द्वारा पुलिस के समक्ष कराई गई अपनी प्राथमिकी में भी झोपड़ी को आग के हवाले कर दिए जाने का आरोप लगाया था।

पड़ोसी के चूल्हे से निकली चिंगारी से आवासीय झोपड़ी जलकर राख

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के बगहवां मिश्र गांव में पड़ोसी के चूल्हे से निकली चिंगारी से एक आवासीय झोपड़ी जलकर राख हो गई। इस घटना में पीड़ित परिवार की पूरी संपत्ति जल गई और वह खुले आसमान के नीचे आ गया। समय रहते आग पर काबू पा लिया गया, नहीं तो कई और घर भी जलकर राख हो गए होते। बताया जाता है कि बगहवां गांव निवासी योगेंद्र राम के पड़ोसी के घर खाना बना था। जिनके चूल्हे से चिंगारी उड़कर उनके पलानी पर जा गिरी। देखते ही देखते उसकी पलानी धू-धू कर जलने लगी। आग की लपटों को देखकर ग्रामीणों ने इसकी सूचना फायर ब्रिगेड को दी। तब तक आग ने विकराल रूप ले लिया था। ग्रामीण आग बुझाने का प्रयास करने लगे। इसी बीच पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने आग पर काबू पा लिया।

वाहन जांच अभियान चला वसूला गया 6 लाख 31 हजार जुर्माना

परिवहन विभाग के द्वारा चलाये गये वाहन जांच अभियान से मचा हडकंप

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

प्रभारी डीएम अभिषेक रंजन के निर्देश पर जिले के विभिन्न जगहों पर परिवहन विभाग की टीम ने शनिवार को वाहन जांच अभियान चलाकर चार दर्जन वाहन चालकों से करीब 6 लाख 31 हजार रुपए जुमार्ना वसूला। इस दौरान परिवहन विभाग की टीम की कार्रवाई को देखकर कई वाहन चालक अपना रास्ता बदलते हुए नजर आए। बताया जाता है कि प्रभारी डीएम के निर्देश पर जिला परिवहन पदाधिकारी मनोज कुमार रजक के नेतृत्व में परिवहन विभाग के द्वारा शहर के आरार मोड, चैनपट्टी, सासामुसा

और जमुनहा बाजार के समीप वाहन जांच अभियान चलाया गया। वाहन जांच अभियान के दौरान करीब चार दर्जनो वाहनों को रोककर उनसे जुमार्ना वसूला गया। इस दौरान परिवहन विभाग की टीम ने बाइक के कागजात, हेमलेट, की जांच पड़ताल की। वाहन जांच के दौरान एमबीआई सुनील कुमार सिंह ने दर्जनों वाहनों से करीब 6 लाख 31 हजार रुपए जुमार्ना राशि के रूप में वसूल की। अभियान के दौरान कई चार पहिया वाहनों की भी जांच की गई। जांच के दौरान चार पहिया वाहन चालकों के सीट बेल्ट व प्रदुषण के कागजात को देखा गया। परिवहन विभाग के द्वारा पूरे दिन चले वाहन जांच के दौरान बाइक चालकों में हड़कंप दिखा। वाहन जांच अभियान में परिक्ष्यामान अपर जिला परिवहन पदाधिकारी शारदानंद राजू, नवेंदु शेखर, मोटरयान निरीक्षक, सभी परीक्ष्यमान प्रवर्तन अवर निरीक्षक मौजूद थे।

साइबर अपराधों की जांच के लिए जल्द खुलेगा साइबर थाना: एसपी

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

तकनीकि के जमाने में अपराधी भी हाईटेक हो गए हैं। क्राइम के तरीके भी बदल गए हैं। इंटरनेट, मोबाइल, बैंकिंग व ऑनलाइन ठगी पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस भी हाईटेक हो रही है। साइबर अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए जिले में पहला अत्याधुनिक थाना शहर के निकट खोला जाएगा। शासन से स्वीकृति मिलने के बाद भवन की तलाशी की जा रही है। ऑनलाइन, फेसबुक व बैंकिंग फ्रॉड के अलावा अन्य सोशल साइटों के माध्यम से ठग गाढ़ी कमाई को हड़प लोगों को कंगाल बना रहे हैं। जिले भर के थानों में इस तरह के दर्जनों फ्राड के मामले हर दिन सामने आते हैं। पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत तो कर लिया जाता है, लेकिन निपटारा में काफी दिक्कत का सामना करना पडता है। इसको लेकर साइबर थाने की स्थापना का प्रस्ताव शासन को भेजा गया था, इसे स्वीकृति मिल गई है। इसकी जानकारी देते हुए एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि जिले में जल्द ही साइबर थाना खुल जायेगा। इसको लेकर तैयारी शुरू कर दी गयी है। तत्काल नगर थाने के भवन में ही साइबर थाना खोला जाएगा। उन्होने बताया कि साइबर थाना खुलने से साइबर अपराधों की विवेचना में तेजी आएगी। शीघ्र कार्रवाई होने से साइबर अपराधियों पर अंकुश लगेगा।

तालाब खुदाई में मनमानी के विरुद्ध ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन, कार्य को रोका

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव प्रखंड के जमसड़ पंचायत अंतर्गत सिसवनिया गांव में मुख्य पथ के समीप मनरेगा मद से की जा रही तालाब खुदाई में एस्टीमेट के विरुद्ध योजना कराने पर ग्रामीणों ने जमकर प्रदर्शन किया। इस दौरान ग्रामीणों ने तालाब की चल रही खुदाई कार्य को रोक दिया। मामले में प्रखंड के सिसवनिया गांव निवासी पैक्स अध्यक्ष पप्पू पांडेय, सुनील पांडेय, मधुकर पांडेय, विनीत कुमार, शेखर गोड, सुभाष ठाकुर, बबलू मिश्रा, अरुण कुमार, अंकित कुमार, संतोष श्रीवास्तव सहित काफी संख्या में ग्रामीणों का कहना था कि एस्टीमेट के अनुसार तालाब की खुदाई पांच फीट करनी थी। परंतु स्थानीय मुखिया कैलाशी देवी द्वारा

पूर्व से ही इस गड्ढे नुमा भूमि से केवल घास की छिलाई कर बांध का निर्माण कर मनरेगा मद की इस सरकारी राशि को लुटने का प्रयास किया जा रहा है। योजना शुरू होने से पूर्व योजना की जानकारी देने वाली कोई सिलापट्ट भी नहीं लगाई गई है। इस दौरान ग्रामीणों ने मनरेगा विभाग के कर्मियों के भी मिलीभगत का आरोप लगाते हुए वरिय अधिकारियों से मामले में जांच कर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों ने गुरुवार के दिन मजदूरों द्वारा किए जा रहे कार्य को रोकते हुए जांच की मांग करते हुए दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है।वैसे देर शाम तक मामले में किसी पदाधिकारी ने जांच नहीं की थी। इस संबंध में मुखिया कैलाशी देवी ने कहा कि मुझे मनरेगा विभाग से तालाब खुदाई के लिए अभी तक कोई एस्टीमेट प्राप्त नहीं हुआ है। तालाब के चारों ओर बांध का निर्माण किया गया है। योजना अभी पूर्ण भी नहीं हुआ है। इसके पूर्व ही ग्रामीणों ने कार्य को रोक दिया है।

थावे दुर्गा मंदिर में पूजा करने आई सिवान की महिला से मापीट

थावे। प्रसिद्ध थावे दुर्गा मंदिर में शनिवार को सिवान जिले से पूजा अर्चना करने आयी एक महिला से पूजा के नाम पर 25 सौ रुपए की मांग की गयी। महिला के द्वारा रूपया नही देने पर मंदिर सजाने वाले माली ने महिला श्रद्धालू को मारपीट कर घायल कर दिया। इस मामले को लेकर सिवान जिले के मैरवा थाने के मैरवा गांव के पप्पु गुप्ता ने आवेदन पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज करते हुए आरोपी माली को गिरफ्तार कर लिया है। वही इस पूरे मामले को गंभीरता से लेते हुए सदर एसडीएम डॉ. प्रदीप कुमार ने सीसीटीवी फुटेज की जांच कर दोषियो पर कारवाई करने का निर्देश दिया है। बताया जाता है सिवान जिले के श्रद्धालू पप्पू गुप्ता अपने पूरे परिवार के साथ थावे मंदिर में पूजा अर्चना करने के लिए आए हुए थे।

केन्द्र सरकार की गलत नीतियों के कारण देश की जनता बेहाल: दिलीप

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

देश मे बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, जातीय जनगणना के खिलाफ साजिशें तथा केंद्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ संपूर्ण क्रांति दिवस के अवसर पर आगामी 5 जून को युवा राजद जिला मुख्यालय स्थित अम्बेडकर चैक पर विशाल धरना देगा। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतू राजद के जिलाध्यक्ष दिलीप सिंह, प्रधान महासचिव इम्तेयाज अली भुट्टो व युवा राजद के जिलाध्यक्ष संतोष यादव की अध्यक्षता में आज अलग-अलग बैठक का आयोजन किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए राजद के जिलाध्यक्ष दिलीप कुमार सिंह ने केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि केंद्र सरकार की गलत नीतियो के कारण देश में महंगाई और बेरोजगारी चरम सीमा पर है, देश का युवा बदहाल है।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार अम्बेडकर के सपनों को कुचलने का सपना देख रही है जिसे किसी भी सूरत में राजद पूरा नही होने देगा। युवा राजद के जिलाध्यक्ष संतोष यादव ने कहा कि युवाओं की टीम गांव गांव जा कर केंद्र सरकार की जनविरोधी नीतियों से लोगों को अवगत कराएगी तथा भाजपा का पदार्फाश करेगी।

चोरों ने हाई वोल्टेज तार की चोरी की

उचकागांव। उचकागांव थाना क्षेत्र के नवादा परसौनी गांव में चोरों ने साढे तीन किलोमीटर लंबे हाई वोल्टेज तार और कुछ वी क्रॉस आर्म की चोरी कर लिया गया है। घटना 31 मई के रात की बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि परसौनी खास ग्रिड से बदरजिमी पावर हाउस के लिए नवादा परसौनी गांव होते हुए 33 केवी का हाई वोल्टेज तार गुजरी हुई है। बीते 31 मई की रात चोरों ने नवादा परसौनी गांव से गुजरने वाले हाई वोल्टेज तार के तीनों फेज की कुल साढे तीन किलोमीटर लंबाई की तार और कुछ वी क्रॉस आर्म की चोरी कर ली है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल मीरगंज के सहायक विद्युत अभियंता विवेक कुमार ने जांच करने के बाद अज्ञात चोरों के विरुद्ध थाने में प्राथमिकी कराई गई है।

प्रोफेसर की विदाई समारोह में छलक पड़े आंसू, 27 वर्षों तक दी सेवा

हथुआ प्रात : किरण संवाददाता

शिक्षक कभी सेवानिवृत नहीं होते है बल्कि एक संस्था उनको नियत समय पर सेवानिवृत कर देती है। जिस रूप में इन्होंने समाज व संस्था की सेवा दिया उसी रूप में आज सेवानिवृत होने के बाद भी समाज की चाह है। आप हमेशा छात्रों के पथ प्रदर्शक बने रहें यही हम सबकी कामना है। उक्त बातें स्थानीय गोपेश्वर महाविद्यालय, हथुआ के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ ब्रह्मदेव मण्डल के सेवानिवृत होने पर आयोजित विदाई समारोह में प्राचार्य डॉ जमालुद्दीन ने अपने संबोधन में कहा। प्राचार्य ने सेवानिवृत प्रोफेसर डॉ ब्रह्मदेव मण्डल को बुकेट, अंगवस्त्र और प्रतीक चिन्ह के साथ

उपहार देकर स्वस्थ्य रहने की कामना किया। वहीं कॉलेज के सभी शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मियों ने प्रोफेसर के विदाई समारोह में भाउक हो उठे। सबने एक स्वर में हिंदी के प्रोफेसर के कार्यकाल का गुणगान किया। डॉ सुबोध कुमार ने कहा कि मण्डल सर ने हिंदी विभाग को विश्वविद्यालय स्तर तक के समकक्ष बनाएं रखा। छात्रों को कम संसाधन में ही इन्होंने उच्च योग्यता हासिल करवाया। इनकी सेवानिवृत होने से कॉलेज का हिंदी विभाग पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। वहीं प्रोफेसर डॉ ब्रह्मदेव मण्डल ने अपनी विदाई समारोह में कहा कि मैंने इस कॉलेज में 27 वर्षों तक सेवा दिया। लेकिन किसी से भी मेरा गीला सिकवा नहीं रहा। संस्था के प्रति हमारी निष्ठा सदैव बनी रहेगी। इस मौके पर डॉ मनोज कुमार, प्रो राजेश्वर बैठा, डॉ संजय सुमन, डॉ सत्य प्रकाश, डॉ संतोष गुप्ता, डॉ आलोक पांडेय सहित सभी छात्र, शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मी आदि थे।

मध्यान्ह भोजन में कीड़ा मिलने से छात्रों में मची अफरा-तफरी

थावे प्रात : किरण संवाददाता

थावे प्रखण्ड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय शिव टहल राय के टोला बृंदावन में मध्यान्ह भोजन में कीड़ा मिलने से छात्रों में अफरा तफरी मच

गयी। जिसके बाद बच्चों ने खाना खाने से इंकार कर दिया। वही इस संबध में प्रधानाध्यापक अशोक कुमार सिंह ने बताया कि एनजीओ के द्वारा मध्यान्ह भोजन की आपूर्ति की जाती है। शनिवार के दिन 80 छात्रों के लिए मध्यान्ह भोजन के लिए खिचड़ी चोखा आया था। जब छात्रों के बीच थाली में मध्यान्ह भोजन दिया जा रहा था इसी दौरान तीन छात्रों के खिचड़ी में कीड़ा पाया गया। जिसके बाद विद्यालय में मौजूद सभी छात्रों को भोजन देना बंद कर दिया गया। सभी छात्र बिना भोजन किए ही घर चले गए। उन्होंने बताया कि सभी भोजन को फेंक दिया गया है। इसकी सूचना थावे बीआरसी सहित अन्य अधिकारियों को दी गयी है।

डीपीओ ने शिक्षकों के साथ बैठक कर दिए कई दिशा निर्देश

फुलवरिया प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया प्रखंड मुख्यालय स्थित बीआरसी भवन के सभागार में शनिवार को डीपीओ अरुण कुमार की अध्यक्षता में एक विशेष बैठक आयोजित हुई। जिसमें प्रखंड के सभी प्रारंभिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, प्रभारी प्रधानाध्यापक एवं नवनियुक्त शिक्षक बढ़ चढ़कर भाग लिए। बैठक में डीपीओ अरुण कुमार ने सभी प्रारंभिक विद्यालयों में गुणवत्तापुर्ण विद्यालय संचालन एवं विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के ससमय सफल क्रियान्वयन पर विशेष चर्चा की। बैठक के दौरान शिक्षकों को विद्यालय से संबंधित कई दिशा निर्देश दी। उन्होंने शिक्षकों से पुस्तकालय वितरण की स्थिति, रंग रोगन, चहारदीवारी, साफ सफाई, चापाकल, शौचालय, अभिलेखों का रख-रखाव, ब्लैक बोर्ड की स्थिति, विद्यालय में

विद्युतीकरण की उपलब्धता, अनुदान का ब्यौरा, विद्यालय में सौंदर्यीकरण, विद्यालय परिसर में फल पत्ती, स्मार्ट क्लास तथा कंप्यूटर लैब जैसी 34 विवरण पर विशेष रूप से चर्चा कर दिशा निर्देश दी। बैठक के दौरान प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी रत्ना घोष, प्रधानाध्यापक लालबाबू मांझी, मुकुल महतो, हैदर अली, अब्दुल समद तथा दिवाकर राय के अलावे प्रखंड के सभी प्रारंभिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, प्रभारी प्रधानाध्यापक तथा नवनियुक्त शिक्षक मौजूद रहे।

पिपराही से 88 बोतल शराब के साथ दो आरोपित गिरफ्तार, दो फरार

उचकागांव। उचकागांव थाना क्षेत्र के पिपराही गांव में पुलिस ने सूचना के आधार पर छापेमारी का 88 बोतल शराब देसी शराब और दो बोतल में रखे 3 लीटर चुलाई शराब के साथ दो आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। इस दौरान दो आरोपित मौके से भागने में सफल रहे।

मौके से गिरफ्तार आरोपितों की पहचान थाना क्षेत्र के पिपराही गांव के ज्ञानी देवी और सुंदरपति देवी के रूप में की गई है। वहीं फरार आरोपितों की पहचान उमान्ती देवी और रीता देवी के रूप में की गई है। मामले में प्राथमिकी करने के बाद पुलिस ने गिरफ्तार आरोपितो को शनिवार के दिन न्यायालय में प्रस्तुत किया।

उचकागांव प्रखंड क्षेत्र में सक्रिय है बिजली तार चोर गिरोह

उचकागांव। उचकागांव प्रखंड क्षेत्र के नवादा परसौनी में हुए बिजली तार की चोरी की घटना प्रखंड क्षेत्र में पहली बार नहीं हुई है। उचकागांव प्रखंड क्षेत्र में बिजली तार की चोरी की घटना पिछले कुछ वर्षो से लगातार चल रही है। बिजली तार चोर सबसे अधिक निशाना गांव के चंवर में सिंचाई के लिए गुजरने वाले तारों को बना रहे हैं। इसके पूर्व में चोर थाना क्षेत्र के रघुआ, भुवला, त्रिलोकपुर, ब्रह्माईन सहित कई गांवों में बिजली तार की चोरी की घटना को अंजाम दे चुके हैं। जिसका खामियाजा उन स्थानीय किसानों को उठाना पड़ता है। जिन्होंने काफी मशक्कत के बाद बिजली विभाग से सिंचाई के लिए तार और पोल की व्यवस्था की थी। ऐसे कई चोरी की घटनाओं के बाद प्रखंड क्षेत्र में कई जगह बिजली के खंभे बिना तार के खड़े मिल जाएंगे।

फर्जी प्रमाण पत्र पर नौकरी करने वाली शिक्षिका के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

भोरे। भोरे में फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर नौकरी करने वाली शिक्षिका के खिलाफ स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है। यह प्राथमिकी रकबा पंचायत नियोजन इकाइ के सचिव ने दर्ज कराई है। बता दें कि छठे चरण की हुई शिक्षक बहाली में फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर कई लोगों ने नौकरी पाई थी। इसकी जांच जब सरकार द्वारा कराई गई, तो कई ऐसे प्रमाण पत्र सामने आए, जो फर्जी थे। इन फर्जी प्रमाणपत्रों वाले शिक्षकों के खिलाफ गोपालगंज के डीएम डॉ नवल किशोर चैधरी ने प्राथमिकी दर्ज कराने का आदेश दिया था। जिसके आलोक में स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। पंचायत शिक्षक नियोजन इकाई रकबा के सचिव ने फुलवरिया थाना क्षेत्र के साहूचक गांव निवासी मोहित यादव की पुत्री कविता यादव के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। जिसमें कहा गया है कि कविता छठे चरण में हुए शिक्षक बहाली में नियोजित हुई थी। जिनके द्वारा नियोजन इकाइ के समीप पेश किए गए प्रमाण पत्र फर्जी निकले थे।

ग्रीन कप शतरंज प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। सारण एवं गोपालगंज वन प्रमंडल के द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शनिवार को आयोजित श्ग्रीन कपश शतरंज प्रतियोगिता का उद्घाटन रामसुन्दर एम. वन प्रमण्डल पदाधिकारी, छपरा एवं रजनीश कुमार, जिला खेल पदाधिकारी, सारण के द्वारा खेल भवन, छपरा में किया गया। जिसमें सारण, सीवान एवं गोपालगंज जिला से प्रतिभागियों के द्वारा भाग लिया गया। प्रतिभागियों

की कुल संख्या 240 थी। जिसमें सबसे कम उम्र का प्रतिभागी 06 वर्ष का था। प्रतियोगिता में 10 सफल प्रतिभागियों का चयन किया जायेगा। अब तक 03 राउण्ड का खेल हो चुका है। शेष राउण्ड का खेल, कल खेला जाएगा तथा पुरस्कार का वितरण किया जाएगा।इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए वन प्रमंडल पदाधिकारी छपरा द्वारा बताया गया कि पर्यावरण सुरक्षा में नई पीढ़ी के बच्चों की भागीदारी अहम है। इसलिए वन विभाग द्वारा विभिन्न आयोजनो के द्वारा पर्यावरण की महत्ता को देखते हुए आमजनो एवं बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जा रहा है। विश्व पर्यावरण दिवस के दिन कम से कम एक पौधा का रोपण हम सब अवश्य करें।

जिला परिषद के द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। शनिवार को जिला परिषद अध्यक्ष जय मित्रा देवी की अध्यक्षता में जिला परिषद सारण की सामान्य बैठक जिला परिषद सभागार में आहूत की गई।

प्रत्येक तीन माह के बाद आयोजित होने वाली जिला परिषद सारण की सामान्य बैठक में योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गयी। बैठक

में जिला परिषद के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करने के साथ कार्य में अपेक्षित प्रगति लाने का निदेश दिया गया। साथ ही पूर्व में ली गई योजनाओं को ससमय पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। समीक्षा में जिला परिषद की अधिकारिकता वाले सभी विभागों की समीक्षा हुई।मशरख स्टेशन फीडर रोड के बगल में दुकान निर्माण के संबंध में विचार विमर्श किया गया।जिला परिषद के तहत क्रियान्वित की जाने वाली मनरेगा योजनाओं के संबंध में विचार विमर्श किया गया। उक्त बैठक में प्रियंका सिंह, जिला परिषद उपाध्यक्ष, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी- सह -उप विकास आयुक्त सारण श्रीमती प्रियंका रानी, जिला परिषद के सभी पार्षदगण, अपर मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी-सह-जिला पंचायत राज पदाधिकारी, जिला अभियंता तथा अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा शहर में पथ संचलन का कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। शनिवार को विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकताओं द्वारा शहर में पथ संचलन का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में पर उत्तर बिहार प्रांत से आए हुए हजारों कार्यकताओं के साथ स्थानीय कार्यकताओं ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसकी शुरूआत एस डी एस कॉलेज के पूर्व प्राचार्य श्री अरुण सिंह जी ने झंडा दिखाकर किया। यह संचालन स्थानीय डॉक्टर आर एन सिंह इवनिंग कॉलेज से शुरू हुआ और नए बाजार, राम राज्य चैक ,पंकज सीनेमा रोड, साहेबगंज, मौना चैक ,म्युनिसिपल चैक, डाक बंगला रोड, हॉस्पिटल चैक होते हुए वापस डॉक्टर आर एन सिंह ईवनिंग कॉलेज में समाप्त हुआ। पूरे रास्ते में स्थानीय लोगों ने इस पथ संचालन में चल रहे कार्यकताओं पर पुष्प वर्षा की साथ ही उनका हौसला भी बढ़ाया। इस पथ संचलन की अगुआई उत्तर

बिहार प्रांत जिला मंत्री श्री राज किशोर सिंह जी ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बजरंग दल अपने उद्देश्य सेवा सुरक्षा और संस्कार के लिए जाना जाता है जब जब देश पर या हिंदू समाज पर किसी तरह की विपदा आयी है बजरंग दल हमेशा साथ खड़ा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि बजरंग दल देश में गोवंश हत्या ,लव जिहाद ,धर्मांतरण जैसे गंभीर समस्याओं से भी सनातन समाज को बचाने का कार्य करता है। लोगों से अपील करते हुए मंत्री ने कहा की सभी सनातनी लोगों को विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल का साथ देना चाहिए ताकि हम अपनी संस्कृति को बचा सके। इस अवसर पर क्षेत्र मंत्री विरेन्द्र विमल जी प्रांत संगठन मंत्री नागेंद्र जी प्रांत कोषाध्यक्ष सह जिला अध्यक्ष छपरा श्री सुमित कुमार सिंह जिला मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण गुप्ता जिला सह संयोजक से धनंजय जी दरभंगा जिला मंत्री अभिषेक रंजन सीतामढ़ी जिला अध्यक्ष मन्नाजी नगर संयोजक अनुज कोषाध्यक्ष विनोद सिंह सेवा प्रमुख गौतम बंसल कुलदीप प्यूश पांडे, रिशु राज सहित हजारों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सम्पादकीय

पंजाब पुनर्गठन के कसूर

पंजाब पुनर्गठन के कई सुराख अब सामने आ रहे हैं और इस तरह हरियाणा और हिमाचल उस दौर की निगाहों से पुनः अपने हक देख रहे हैं। मामला शिकायतों तक रहा या सरकारें केवल मसले को धकियाती रहीं, इसलिए पुनर्गठन के अनुपात बिखरते रहे। समय ने इसी समझौते की खाल उस समय खींची जब उत्तर भारत की नदियों ने साबित किया कि उनका अस्तित्व पहाड़ के दर्द में समाया है या उस वक्त सामने आया जब जमीन के बंटवारे ने पंजाब-हरियाणा के बीच विवादों का समुद्र खड़ा किया। इनसाफ उन समझौतों की आंत में फंसा है जो पंजाब पुनर्गठन से पहले हुए या उस फांस में मौजूद है जो चंडीगढ़ में भी हिस्सेदारी के लिए अड़ा है।

पंजाब के पर्वतीय इलाके अपने साथ हिमाचल में एक समृद्ध इलाका ही नहीं लाए, बल्कि 7.19 प्रतिशत की हिस्सेदारी भी लाए, लेकिन हिमाचल के इतिहास के ये पन्ने सुखरू नहीं हुए। उस दौर में किसी को यह चिंता नहीं हुई कि 7.19 प्रतिशत की हिस्सेदारी में स्थापित संस्थानों में हिमाचल के हित लिए जाएं। यह हिस्सा चंडीगढ़ को अगर पंजाब-हरियाणा की राजधानी में कबूल था, तो वहां आज तक हिमाचल के इन्हीं रिश्तों की जमीन क्यों हासिल नहीं हुई। आश्चर्य यह कि जिस दिल की खातिर ये पर्वतीय क्षेत्र हिमाचल की जमीन पर खड़ा होना चाहते थे, उसे भी ऊपरी व निचले क्षेत्रों या पुराने व नए हिमाचल की जागीर में देखते रहे। उस वक्त की चिंताए केवल सियासी रहीं, लेकिन क्या किसी ने विशाल हिमाचल की परिकल्पना में पंजाब से मिले 7.19 प्रतिशत के अधिकार को सीने से लगाया।

अगर इसे सीने का दर्द समझा होता तो आज पौंग बांध के बदले हिमाचल में भी आर्थिकी का नया सूर्य उग आया होता। यही 7.19 प्रतिशत हिस्सा शिमला की कई संपत्तियों और चंडीगढ़ की परिधि में हिमाचली अस्तित्व का मुकाम हासिल कर पाया होता। पर्वतीय क्षेत्रों का हिमाचल में आना अगर प्रदेश का गौरव बनाया होता, तो आज जिसे पानी कहते हैं, वह सोना हो जाता। जिस लीज की बुनियाद पर शानन विद्युत परियोजना आज तक हमारी छाती पर आर्थिक मूंग दलती रही, वह पर्वतीय खजाने की इज्जतदार बेटी बनी होती। गौर करें इसी दर्पण की दूसरी ओर खड़े पंजाब पुनर्गठन के सरोकारों को पंजाब आज भी अपनी संपत्ति मान रहा है। गोया कि पुनर्गठन का समझौता केवल उसके लिए खड़ा है। दूसरी ओर हरियाणा के अस्तित्व और दस्तूर को समझे बिना हिमाचल पुनर्गठन के मर्म को नहीं जान सकता। अभी ताजा हिसाब देखें तो पंजाब विश्वविद्यालय में भी हरियाणा अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करना चाहता है, तो क्या हमने ऐसी कोशिश कभी की। बाकायदा विधानसभा में प्रस्ताव पारित करके हरियाणा न केवल पीयू के टैग में हिस्सेदारी चाहता है, बल्कि राज्य के कुछ कालेजों को इसके तहत मान्यता दिलाना चाहता है। हमारी सोच अलग है।

हमने कभी यह नहीं सोचा कि चंडीगढ़ की भूमि में हमारा राज्य भी हकदार बने। और तो और हमने तो शिमला विश्वविद्यालय को भी इतना काट दिया है कि अब इसकी प्रतिष्ठा पर भी आंच आ रही है। ऐसे में मंडी विश्वविद्यालय की जरूरत की सौ दलीलें होंगी, लेकिन पिछले चालीस सालों में धर्मशाला में स्थित शिमला विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र को बीच मझधार में छोड़ दिया गया है। पंजाब पुनर्गठन ने हिमाचल में कांगड़ा क्षेत्र का वजूद, सैन्य इतिहास, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा भाषाई आधार मिलाया था, लेकिन क्या यह पूरी तरह संभव हुआ। जिस भाषाई मेलजोल और समीपता से हमने एक समान हिमाचली भाषा तराशनी थी, क्या हम यह सपना पूरा कर पाए, अलबत्ता पर्वतीय संकीर्णता और निर्बलता ने ऐसे क्षेत्रों की बाहुलता में भाषा के सुदृढ़ संपर्कों को नजरअंदाज करने की ठान ली है। चाहे हरियाणा हो या हिमाचल, प्रादेशिक भाषा की पृष्ठभूमि में हम राजनीतिक तौर पर पंजाबी शब्दावली से अपने पहाड़ी अर्थों की समीपता को दूर नहीं कर सकते। जरूरत यह है कि पंजाब पुनर्गठन को फिर से रेखांकित और परिभाषित करते हुए क्षेत्रीय सहयोग-संपर्क के सेतु को मजबूत किया जाए। अतीत में हिमाचल का अपना कोई मीडिया नहीं था, लेकिन अब हिमाचल की बात कहने का सामर्थ्य और अंदाज बदला है, फिर भी पूरे समाज को यह जान लेना होगा कि प्रदेश के व्यापक हित में कुछ कदम घर से बाहर और संघर्ष के समर्थन में उठाने पड़ सकते हैं।

आरक्षण की आग में जलता मणिपुर

योगेंद्र योगी

देश के राजनीतिक दल जब तक आरक्षण की आग में वोटों की रोटी सेकते रहेंगे, तब तक मणिपुर जैसे हादसे होते रहेंगे। आरक्षण की मांग को लेकर मणिपुर जल रहा है। मैतई समाज को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिए जाने की मांग को लेकर हिंसा भडकी हुई है। इसमें कई लोगों की जानें जा चुकी हैं। दंगाइयों ने भारी संख्या में सरकारी संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया है। मणिपुर में 16 जिले हैं जिसमें से वैली 10 फीसदी है और यहां पर 53 प्रतिशत मैतेई समुदाय के लोग रहते हैं। इसके साथ ही 90 फीसदी पहाड़ी इलाका है और यहां पर 42 प्रतिशत कुकी, नागा के अलावा दूसरी जनजाति रहती है। गैर-जनजातीय मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने के मणिपुर उच्च न्यायालय द्वारा राज्य सरकार को दिए गए निर्देश के बाद मणिपुर में सांप्रदायिक हिंसा भडक गई। 1993 में भी मणिपुर में हिंसा हुई थी, तब एक दिन में नागाओं की तरफ से 100 से ज्यादा कुकी समुदाय के लोगों को मार दिया गया।

यह हिंसक घटना जातीय संघर्ष का परिणाम थी। अब एक बार फिर मणिपुर हिंसा से जूझ रहा है, 54 मौतें हो चुकी हैं। मणिपुर का मामला पहला नहीं है, जहां आरक्षण को लेकर देश जला है। इससे पहले भी आरक्षण को लेकर कई हिंसक आंदोलनों में देश जला है। ऐसे हिंसक आंदोलनों में देश को भारी कीमत चुकानी पड़ी है। ओबीसी आरक्षण के खिलाफ आरक्षण की आग में देश कई बार झुलस चुका है। पहली बार मंडल कमीशन की सिफारिशों को 1990 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री वीपी सिंह ने लागू किया तो देश में सवर्ण समुदाय के लोग इसके विरोध में सडक पर उतर आए। ओबीसी आरक्षण के खिलाफ देशभर में प्रदर्शन हुआ। इसके विरोध में आत्मदाह और ऐसी कई घटनाएं सामने आई। कई जगह आगजनी-तोडफोड़ तक हुई। वर्ष 2016 में हुए जाट आंदोलन के दौरान काफी हिंसा हुई थी। आंदोलनकारियों ने जाट समुदाय को ओबीसी में शामिल करने की मांग को लेकर काफी विरोध प्रदर्शन किया था।

हरियाणा में जमकर हिंसा, आगजनी व तोडफोड़ हुई थी। इस हिंसक आंदोलन में 30 लोगों की जान चली गई। गुजरात में पाटीदार समुदाय के लोगों ने ओबीसी में शामिल करने को लेकर 2015 में सबसे बड़ा प्रदर्शन किया था। गुजरात में हिंसा और आगजनी की घटनाएं सामने आईं। इलाके में कर्फ्यू लगाना पड़ गया था। प्रदर्शनकारियों ने सरकारी संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचाया था। हरियाणा के जाट आरक्षण आंदोलन में करीब 34 हजार करोड़ का नुकसान हुआ था। देश में अब तक आरक्षण आंदोलन से लाखों करोड़ का नुकसान हो चुका है। राजनीतिक दल इसकी भरपाई भी देश के आम लोगों से ही करते हैं। आरक्षित वर्ग भी इससे अलग नहीं है। आर्थिक नुकसान से भरपाई के लिए बढ़ाए गए टैक्स की मार उन पर भी पड़ती है। गुर्जर आंदोलन : आरक्षण की मांग को लेकर राजस्थान में गुर्जर समुदाय ने काफी दिनों तक प्रदर्शन किया था। आंदोलनकारियों ने लंबे समय तक रेलवे ट्रैक को जाम रखा। इसका प्रभाव भी पूरे देश पर पड़ा था। पुलिस और आंदोलनकारी आमने-सामने आ गए थे। इस आंदोलन के दौरान गोलीबारी की भी घटना सामने आई थी। इसमें 20 लोगों की जान चली गई थी। मराठा आंदोलन : महाराष्ट्र में मराठा आंदोलन काफी चर्चा में रहा है। आंदोलनकारियों ने हिंसक झड़प में आगजनी और तोडफोड़ की घटनाओं को अंजाम दिया था। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में निषाद आरक्षण आंदोलन के चलते एक सिपाही को अपनी जान गंवानी पड़ी। विकास के बजाय आरक्षण राजनीतिक दलों के सत्ता पाने का आसान रास्ता बना हुआ है। देश में आरक्षण के हिंसक इतिहास के बावजूद राजनीतिक दल इसे खोना नहीं चाहते। देश के करीब आधा दर्जन राज्य ऐसे हैं, जो 50 फीसदी आरक्षण का दायरा बढ़ाने के पक्ष में खड़े हैं, ताकि उनका राजनीतिक और सामाजिक समीकरण मजबूत हो सके। इनमें महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु, झारखंड और कर्नाटक जैसे राज्य शामिल हैं। कर्नाटक ने भी आरक्षण बढ़ाया था। इसके अलावा बिहार, मध्य प्रदेश और अब छत्तीसगढ़ में भी आरक्षण बढ़ाने की मांग ने जोर पकड़े हुए है। इतना ही नहीं राजनीतिक दल वोटों की खातिर नौकरियों में भी अपने राज्य के लोगों के लिए आरक्षण लागू करने में पीछे नहीं रहे हैं। इससे लगता है कि क्षेत्रीय पार्टी भारत का हिस्सा होने के बजाय स्वतंत्र राष्ट्र हैं।

04 जून जयन्ती पर विशेष : समाज सुधारक थे कबीर दास

वे अपने इरादों में अडिग रहे और अपनी अंतिम श्वास तक जगत कल्याण के लिये जीते रहे। उन्होने समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होने धर्म का सम्बन्ध सत्य से जोड़कर समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्परा का खण्डन किया है। कबीर ने मानव जाति को सर्वश्रेष्ठ बताते हुये कहा था कि इसमें कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है। संत कबीर दास जी का जन्म संवत 1455 की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को बनारस में हुआ था। इसीलिए ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के दिन देश भर में कबीर जयंती मनाई जाती है। कबीर दास के नाम पर कबीरपंथी नामक संप्रदाय आज भी प्रचलित है। इस संप्रदाय के लोग संत कबीर को भगवान के रूप में पूजते हैं। संत कबीर दास समाज में फैले आडम्बरों के सख्त विरोधी थे। उन्होंने लोगों को एकता के सूत्र का पाठ पढ़ाया।वे लेखक और कवि थे। उनके दोहे इंसान को जीवन की नई प्रेरणा देते थे। कबीर ने जिस भाषा में लिखा वह लोक प्रचलित तथा सरल भाषा थी। उन्होंने कहीं से विधिवत शिक्षा नहीं ग्रहण की थी। इसके बावजूद वे दिव्य प्रभाव के धनी थे।

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है

कबीर दास जी हमारे हिंदी साहित्य के एक जाने माने महान कवि होने के साथ ही एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने समाज में हो रहे अत्याचारों और कुरीतिओं को खत्म करने की बहुत कोशिश की। जिसके लिये उन्हें समाज से बहिष्कृत भी होना पड़ा। परन्तु वे अपने इरादों में अडिग रहे और अपनी अंतिम श्वास तक जगत कल्याण के लिये जीते रहे। उन्होने समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होने धर्म का सम्बन्ध सत्य से जोड़कर समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्परा का खण्डन किया है। कबीर ने मानव जाति को सर्वश्रेष्ठ बताते हुये कहा था कि इसमें कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है।

संत कबीर दास जी का जन्म संवत 1455 की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को बनारस में हुआ था। इसीलिए ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के दिन देश भर में कबीर जयंती मनाई जाती है। कबीर दास के नाम पर कबीरपंथी नामक संप्रदाय आज भी प्रचलित है। इस संप्रदाय के लोग संत कबीर को भगवान के रूप में पूजते हैं। संत कबीर दास समाज में फैले आडम्बरों के सख्त विरोधी थे। उन्होंने लोगों को एकता के सूत्र का पाठ पढ़ाया। वे लेखक और कवि थे। उनके दोहे इंसान को जीवन की नई प्रेरणा देते थे। कबीर ने जिस भाषा में लिखा वह लोक प्रचलित तथा सरल भाषा थी। उन्होंने कहीं से विधिवत शिक्षा नहीं ग्रहण की थी। इसके बावजूद वे दिव्य प्रभाव के धनी थे।

कबीर मानव मात्र को एक मानते थे। वे जात-पांत, कुल-वंश, रक्त, नस्ल के आधार पर मनुष्य में अंतर करने के विरुद्ध थे। उनका विचार था कि सभी कुदरत के बन्दे हैं। कबीरदास आडम्बर, मिथ्याचार एवं कर्मकाण्ड के विरोधी थे। कबीर की भाषाएं पंचमेल खिचड़ी हैं। इनकी भाषा में हिंदी भाषा की सभी बोलियों की भाषा सम्मिलित हैं। राजस्थानी, हरयाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा के शब्दों की बहुलता है। कबीर मौखिक परंपरा के कवि थे। उन्होंने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे। उनके उपदेशों को बीजक में उनके अनुयायियों द्वारा संरक्षित किया गया था। कबीर दास एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाण्ड के घोर विरोधी थे।

कबीर के गुरु के सम्बन्ध में प्रचलित कथन है कि कबीर को उपयुक्त गुरु की तलाश थी। वह वैष्णव संत आचार्य रामानंद को अपना अपना गुरु बनाना चाहते थे। लेकिन उन्होंने कबीर को शिष्य बनाने से मना कर दिया था। लेकिन कबीर ने अपने मन में ठान लिया कि स्वामी रामानंद को ही हर कीमत पर अपना गुरु बनाऊंगा। इसके लिए कबीर के मन में एक विचार आया कि स्वामी रामानंद जी सुबह चार बजे गंगा स्नान करने जाते हैं। उसके पहले ही उनके जाने के मार्ग में सीढियों पर लेट जाऊंगा और उन्होंने ऐसा ही किया। एक दिन कबीर पंचगंगा घाट की सीढियों पर लेट गये। रामानन्द जी गंगास्नान करने के लिये सीढियां उतर रहे थे कि तभी उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया। उनके मुख से तत्काल राम-राम शब्द निकल पड़ा। उसी राम को कबीर ने दीक्षा-मन्त्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया।

कबीरदास समाज के इतने बेबाक, साफ मन के कवि हुये जो समाज को स्वर्ग और नर्क के मिथ्या भ्रम से बाहर निकालते हैं। कबीरदास को हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही संप्रदायों में बराबर का सम्मान प्राप्त था। दोनों संप्रदाय के लोग उनके अनुयायी थे। यही कारण था कि उनकी मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। हिन्दू कहते थे कि उनका अंतिम संस्कार हिन्दू रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे कि मुस्लिम रीति से। किंतु इसी छीना-झपटी में जब उनके शव पर से चादर हट गई, तब लोगों ने वहां फूलों का ढेर पड़ा देखा। यह कबीरजी की ओर से दिया गया बड़ा ही सशक्त संदेश था कि इंसान को फूलों की तरह होना चाहिए।

जीविकोपार्जन के लिए कबीर जुलाहे का काम करते थे। कबीर की दृढ़ मान्यता थी कि कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है स्थान विशेष के कारण नहीं। अपनी इस मान्यता को सिद्ध करने के लिए अंत समय में वह मगहर चले गए। क्योंकि लोगों में मान्यता थी कि काशी में मरने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर नरक मिलता है। मगहर में उन्होंने अंतिम साँस ली। आज भी वहां उनकी मजार व समाधी स्थित है। संत कबीरदास वाराणसी में पैदा हुए और लगभग पूरा जीवन उन्होंने वाराणसी यानी काशी में ही बिताया था। जीवन के आखिरी समय वो मगहर चले आए और अब से पांच सौ साल पहले वर्ष 1518 में यहीं उनकी मृत्यु हुई। कबीर स्वेच्छा से मगहर आए थे और इसी किंवदंती या अंधविश्वास को तोडना चाहते थे कि काशी में मोक्ष मिलता है और मगहर में नरक। वास्तव में कबीर केवल कवि नहीं, बल्कि कुशल शिल्पकार, सुयोग्य अभिभावक एवं शिक्षक के साथ जीवन की वास्तविकता एवं सत्यता का मार्ग दिखाने वाले आध्यात्मिक महापुरुष थे। संत कबीर दास भक्ति आंदोलन के समर्थक थे। कबीर दास की विरासत अभी भी कबीर पंथ के रूप में संदर्भित एक संप्रदाय के माध्यम से बनी हुई है। एक आध्यात्मिक समुदाय जो उन्हें संस्थापक मानता है। कबीर पंथ एक अलग धर्म नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक दर्शन है। कबीर अपनी कविताओं में स्वयं को जुलाहा और कोरी कहते हैं। उन्होंने व्यक्ति के सुधार पर इसलिए बल दिया क्योंकि व्यक्तियों से ही समाज बनता है। वे चाहते थे कि हिंदू और मुसलमान में जो विडंबना है उसे खत्म कर उनमें भाईचारे की भावना उत्पन्न कर सके। वो साधु या ढोंगी और अंधविश्वासों को भी समाप्त करना चाहते थे। इसीलिये उनको आज भी समाज सुधारक के रूप में याद किया जाता है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के तौर पर याद किए जाने वाले संत कवि कबीर धार्मिक सामंजस्य और भाई-चारे की जो विरासत छोडकर गए हैं। उसे इस मगहर में जीवंत रूप में देखा जा सकता है। मगहर देश भर में फैले कबीरपंथियों की आस्था का मुख्य केंद्र है। दुनिया भर में कबीर के करोड़ों अनुयायी हैं। उन्होंने जाति व्यवस्था, मूर्ति पूजा और तीर्थ यात्रा को अस्वीकार कर दिया। कबीर ने दोहों के नाम से जाने जाने वाले सरल दोहों के माध्यम से उपदेश दिया। कबीर दास ने अपनी भाषा सरल और सुबोध रखी ताकि वह आम आदमी तक पहुंच सके। कबीर को शांतिमय जीवन प्रिय था और वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण आज विदेशों में भी लोग उनके बताये मार्ग का अनुशरण कर रहे हैं।

जो काम आजादी के तुरंत बाद होने चाहिए थे, वह अमृत काल में हो रहे हैं

तमिल भाषा संसार की प्राचीनतम भाषाओँ में एक है, उसमें शिलपद्दिकरम, मणिमेखलै जैसे दो हजार वर्ष से भी प्राचीन महान ग्रन्थ हैं। नवीन भारत अभ्युदय का पथ सदैव कंटकाकीर्ण रहा है। आज जब ब्रिटिश दास मानसिकता से संघर्ष रत राष्ट्र औपनिवेशिक मानस की जकड़न से मुक्त हो भारतीयों द्वारा भारत के लिए स्वतंत्र देश में बनी नवीन संसद का भव्य उद्घाटन देख रहा है तो यह क्षण 15 अगस्त 1947 के पुण्यदायी क्षण से काम महत्वपूर्ण नहीं है। यह नवीन संसद तमिल सम्राट राज राज चोल के समय प्रयुक्त शिव के नंदी को शिखरस्थ विराजमान किये राज दंड से आलोकित, प्रेरित और स्पंदित है जो स्वतंत्रता के समय चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के परामर्श और सहायता से वायसरॉय माउंट बैटन ने सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक स्वरूप पंडित नेहरू को प्रदान किया था।

तरुण विजय
लेखक पूर्व सांसद और वरिष्ठ पत्रकार हैं और वर्तमान में एनएमए के चेयरमैन हैं

नवीन संसद उस महान तमिल शौर्य और धर्माधिष्ठित सत्ता को भी प्रतिबिंबित कर रही है जो अब तक सेक्युलर, वामपंथी बौद्धिक तत्वों की घृणा के कारण दबी रही थी। तमिल भाषा संसार की प्राचीनतम भाषाओँ में एक है, उसमें शिलपद्दिकरम, मणिमेखलै जैसे दो हजार वर्ष से भी प्राचीन महान ग्रन्थ हैं।

नवीन भारत अभ्युदय का पथ सदैव कंटकाकीर्ण रहा है। आज जब ब्रिटिश दास मानसिकता से संघर्ष रत राष्ट्र औपनिवेशिक मानस की जकड़न से मुक्त हो भारतीयों द्वारा भारत के लिए स्वतंत्र देश में बनी नवीन संसद का भव्य उद्घाटन देख रहा है तो यह क्षण 15 अगस्त 1947 के पुण्यदायी क्षण से काम महत्वपूर्ण नहीं है।

यह नवीन संसद तमिल सम्राट राज राज चोल के समय प्रयुक्त शिव के नंदी को शिखरस्थ विराजमान किये राज दंड से आलोकित, प्रेरित और स्पंदित है जो स्वतंत्रता के समय चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के परामर्श और सहायता से वायसरॉय माउंट बैटन ने सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक स्वरूप पंडित नेहरू को प्रदान किया था।

यह एक शुद्ध निर्मल भारतीय वैदिक परंपरा का प्रतीक था, इसलिए कांग्रेस और पंडित नेहरू को भाया नहीं और इसको प्रयाग स्थित सरकारी संग्रहालय में बंद कर दिया गया। यह दैवी कृपा और नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता थी कि इसकी स्मृति जगी और इसे इसके सही उपयुक्त स्थान पर प्रतिष्ठित करने का निर्णय लिया गया। ब्रिटिश असेंबली को हमने बाद में नवीन भारत की संसद के रूप में संगठित किया जिसमें लोकसभा और राज्य सभा का संचालन हुआ। लेकिन सब कुछ वही था जो ब्रिटिश ने बनाया। संसद का भवन हमारा परन्तु उसके भीतर स्मृतियाँ सब ब्रिटिश और दासता कीं। वहां सभी प्रारंभिक सदन अध्यक्षों के चित्रों में ब्रिटिश स्पीकरों के चित्र से सदन अध्यक्षों की परंपरा के प्रारम्भ होने का दृश्य हर दिन हमें सदन में प्रवेश करते ही चुभता था।

नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने ब्रिटिश कालीन दास मानसिकता के चिह्नों को मिटाना प्रारम्भ किया और स्वदेशी चेतना से उत्स्फूर्त नावीन्य का सृजन पर्व प्रारम्भ किया। नवीन संसद वास्तव में उसी नव चैतन्य का वह प्रतीक है जिसे शिव की शक्ति और महान तमिल पराक्रमी स्मृति सेंगोल राजदंड के रूप में शक्ति दे रही है। यह ब्रिटिश दास मानसिकता के अंत का अद्घोष है। नवीन संसद भारतीय नव जागरण के सूर्योदय का, राष्ट्रीयता की आभायुक्त लोकतंत्र का संयुक्त तीर्थ है जो अपराजेय भारत के शौर्य और आध्यात्मिक आत्मा को प्रतिबिंबित करती है।

नवीन संसद उस महान तमिल शौर्य और धर्माधिष्ठित सत्ता को भी प्रतिबिंबित कर रही है जो अब तक सेक्युलर, वामपंथी बौद्धिक तत्वों की घृणा के कारण दबी रही थी। तमिल भाषा संसार की प्राचीनतम भाषाओँ में एक है, उसमें शिलपद्दिकरम, मणिमेखलै जैसे विश्व विख्यात दो हजार वर्ष से भी प्राचीन महान ग्रन्थ हैं। थिरूवल्लुवर जैसे वैश्विक संत और दार्शनिक तमिल जनजीवन के हर पक्ष को प्रभावित करते आ रहे हैं। लेकिन नरेंद्र मोदी से पहले इस अपार तमिल गौरव के सम्बन्ध में राष्ट्रीय स्तर पर कभी जानकारियों का प्रसार नहीं किया गया था।

ऐसा क्यों होता है कि जब भी भारत अपने मूल स्वरूप और सांस्कृतिक सभ्यतामूलक गौरव की ओर लौटना चाहता है तो ब्रिटिश दास मानसिकता के सेकुलर वाम पंथी और दाम पंथी उसके विरोध में खड़े दिखते हैं? मुहम्मद गौरी के विरुद्ध बहादुरी से लड़े राजा सुहेलदेव हों या असम के पराक्रमी सेनापति लशित बड़फूकन- केवल नरेंद्र मोदी स्मृति के पुनर्जागरण और दास मानसिकता के विरुद्ध वीरता से लड़ते दिखाई देते हैं। यह दुर्भाग्य है कि जिस प्रधानमंत्री को देश के नागरिकों ने सम्मान पूर्वक प्रधानमंत्री पद हेतु अभिषिक्त किया उनके लोकतान्त्रिक पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय गौरव प्रतिष्ठापना कार्यों पर इतना बावेला मचाया जा रहा है मानो भारतीयता का जागरण कोई अपराध हो। राष्ट्रीयता के प्रश्नों पर भारत में मतैक्य क्यों नहीं हो सकता? भारत और भारतीयता के प्रश्नों पर क्यों हमें एक दूसरे के विरुद्ध खड़े होने की आवश्यकता महसूस होती है? क्या भारतीयता किसी एक पार्टी के एकाधिकार में मानी जा सकती है? शत्रु को ऐसी ही मानसिकता के लोगों द्वारा सहायता मिलती है। भारत आज सम्पूर्ण विश्व के देशों के लिए शक्ति और विश्वास का केंद्र बना है। लोकतान्त्रिक पद्धति से, जय विजय और पराजयों के लोकतान्त्रिक आरोह अवरोहों से गुजरते हुये नरेंद्र मोदी ने एक शक्तिशाली भारत और भारतीयता निष्ठ छवि बनाकर सम्पूर्ण विश्व में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों का आत्मविश्वास एवं गौरव बढ़ाया है। जहाँ भी वे जाते हैं भारत माता का माथा ऊँचा होता है। शत्रुओं के खेमे में सेंध लगाकर राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को अनेकानेक विपदाओं के मध्य स्थिर और प्रगतिशील रखने का कीर्तिमान बनाने वाले मोदी ने जब नवीन संसद का उद्घाटन किया तो यह एक नवीन राष्ट्रीय चैतन्य के अभ्युदय का महान क्षण था जो युगों युगों तक हमें अपनी आत्मा की शक्ति और हमारी असंदिग्ध भारत भक्ति का स्मरण कराता रहेगा।

मुझे इस क्षण राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की यह पंक्तियाँ याद आ रहीं हैं-एक हाथ में कमल एक में धर्मदीप्त विज्ञान, लेकर उठने वाला है धरती पर हिंदुस्तान।

अब से पांच दशक पूर्व जब दिनकर जी ने यह पंक्तियाँ लिखी होंगी तब किसी को आभास तक नहीं होगा कि राष्ट्रीयता के भाव में रचे पगे मतदाता एक ऐसे वीतरागी प्रधानमंत्री को पद सौंपेंगे जो वस्तुतः दिनकर जी की कविता को सार्थक सिद्ध करता दिखेगा। सम्पूर्ण विश्व में राष्ट्रीयता के बोध ने वहां के समाज के नवजागरण को प्रेरित किया है। दक्षिण कोरिया ने जापानियों द्वारा बनाई संसद की इमारत को तोप लगाकर ध्वस्त किया और अपनी नवीन संसद का निर्माण किया। पोलैण्ड ने रूसियों द्वारा निर्मित चर्च को ध्वस्त कर अपने नवीन पोलिश चर्च का निर्माण किया। इजराइल ने रूसी, अंग्रेजी, जर्मन भाषाओं के मोह को छोड़ कर अपनी दो हजार वर्ष से अप्रयुक्त हिब्रू भाषा को संसद, सरकार और समाज की भाषा के रूप में अंगीकार किया। भारत को जो कार्य आजादी के तुरंत बाद करना चाहिए था उसको वह आज आजादी के अमृत महोत्सव काल में कर रहा है। शायर अकबर इलाहाबादी ने इन विरोधियों को ही समझते हुए लिखा था

प्रचंड की भारत यात्रा के मायने: एक हिन्दू राष्ट्र के विकास की नई इबारत

अतुल सिन्हा

नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड की भारत यात्रा से पहले उनकी सरकार में सहयोगी और पूर्व प्रधानमंत्री के.पी शर्मा ओली ने ये सवाल उठाया था कि क्या प्रचंड भारत के प्रधानमंत्री के सामने वो सारे मुद्दे उठाएंगे जो उनके कार्यकाल में विवाद की वजह बने थे चाहे वह विवादित नक्शे का मामला हो या सीमा से जुड़े मामले। यह माना भी जा रहा था कि बुधवार की रात भारतीय सुरक्षा सलाहवार अजीत डोभाल के साथ हुई मुलाकात के दौरान भी शायद ये मामले उठे हों, लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। दरअसल, दोनों देशों के शीर्ष नेता जब मिले तो पूरी गर्मजोशी से मिले और दोनों देशों के बीच जो समझौते हुए, उससे बेशक दोनों देशों की जनता को कई फायदे होने की उम्मीद जताई जा रही है। खासकर बिजली के क्षेत्र में हुए अहम समझौते, आने वाले 10 सालों में 10 हजार मेगावाट बिजली आयात का लक्ष्य, नई तेल पाइपलाइन, पर्यटन से लेकर क्यूआर कोड के जरिये व्यापारिक लेन देन जैसे समझौते अहम माने जा रहे हैं।

नेपाल प्रेस के मुख्य संपादक मात्रिका पौडेल ने काठमांडू से फोन पर बताया कि नेपाल की जनता को प्रचंड की इस यात्रा से काफी उम्मीदें हैं और दोनों देशों के बीच कुछ मुद्दों पर जिस तरह के तनाव का माहौल दिखता रहा है, इस यात्रा से अब वह बदलेगा। खासकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेट्रोलियम पाइपलाइन भंडारण और दीर्घकालिक विद्युत व्यापार समझौते किए, उससे यहां के लोगों को काफी लाभ होगा। दोनों देशों के बीच सीमा विवाद को खत्म करने की कोशिश अहम होगी और इससे पर्यटन के क्षेत्र में भी फायदा होगा।

मात्रिका बताते हैं कि सियासी तौर पर देखें तो जाहिर है के पी शर्मा ओली इस यात्रा को लेकर कोई खास उत्साहित नहीं हैं और उनका यही मानना है कि जबतक विवादित मुद्दे नहीं उठाए जाएंगे, तबतक यात्रा का कोई लाभ नहीं है। हां, भौगोलिक तौर पर भारत के साथ व्यापारिक समझौते चीन की तुलना में बेशक व्यावहारिक और बेहतर होंगे।

नेपाल मामलों के विशेषज्ञ और ह्यसमकालीन तीसरी दुनियाह्न के संपादक आनंद स्वरूप वर्मा प्रचंड की इस भारत यात्रा को एक अलग नजरिये से देखते हैं। उनका कहना है कि ये वही प्रचंड हैं जो किसी जमाने में कम्युनिस्ट आंदोलन के एक बेहद प्रगतिशील और क्रांतिकारी नेता हुआ करते थे और जो पहली बार प्रधानमंत्री बनने के बाद संविधान संशोधन कर नेपाल को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का दर्जा देना चाहते थे। लेकिन लगता है इतने सालों में उनकी सोच बदल गई है और वह भी अब हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा के समर्थक हो गए हैं। वैसे यह बात तो समझ ही लेनी चाहिए कि नेपाल का कोई भी प्रधानमंत्री हो, अगर वह अपनी जनता का हित चाहता है तो उसे भारत के साथ अपने रिश्ते मधुर रखने ही पड़ेंगे।

किसी तरह के टकराव की स्थिति उसके लिए नुकसानदेह ही साबित होगी। ये उस देश की भौगोलिक मजबूरी भी है क्योंकि नेपाल तीन तरफ से भारत से घिरा हुआ है। एक तरफ से चीन है, लेकिन वहां तक पहुंचना भागोलिक तौर पर बहुत आसान नहीं है। यह आम धारणा भी है कि जब नेपाल का कोई भी प्रधानमंत्री बनता हो तो वह सबसे पहले भारत आता है, लेकिन जब ओली पहली बार प्रधानमंत्री बने तो वह भारत से पहले चीन चले गए। इससे भारत में उनके प्रति धारणा बदल गई और यह माना जाने लगा कि यह माओवादी प्रधानमंत्री चीन की तरफ ज्यादा झुकाव रखता है। आनंद स्वरूप वर्मा बताते हैं कि जब 2015 में नेपाल का नया संविधान बना तब भारत से तत्कालीन मंत्री सुषमा स्वराज और नेपाल मामलों को देख रहे भगत सिंह कोश्यारी वहां गए और प्रचंड से मुलाकात की थी। उसके बाद अखबारों में छपा कि कोश्यारी ने प्रचंड से साफ तौर पर कहा कि नेपाल को हिन्दू राष्ट्र बना रहने दें ताकि जो हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध हैं, वह और गहरे बने रहें। तब भी प्रचंड ने इस बारे में कोश्यारी को भरोसा दिलाया था। और अब वह भारत में मौजूदा प्रधानमंत्री से मिलकर इस अवधारणा को और मजबूत कर रहे हैं। उनका कहना है कि यह वही प्रचंड हैं जो किसी जमा

संक्षिप्त खबरें

स्थानीय थाना में अज्ञात चोर के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज

मधुबनी जिला के खजौली थाना क्षेत्र के चतरा गोबरौरा दक्षिण पंचायत के वार्ड 10 गांव कुसमार निवासी इन्द्रशेखर ठाकुर की दरवाजे पर बने एकचारी घर में रखे अपाची वाइक को एक जून की रात्रि में अज्ञात चोरों द्वारा चोरी कर लिया गया. इस चोरी को लेकर वाइक ऑनर इन्द्रशेखर ठाकुर ने स्थानीय थाना में अज्ञात चोर के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराया गया. वाइक ऑनर ने प्राथमिकी आवेदन में दशार्या है कि मैं अपने अपाची वाइक को रात्रि में दरवाजे पर बने एकचारी घर मे रखकर घर के अंदर खाना खाने चला गया.खाना खाने के बाद रात्रि 11 वजे तक दरवाजे पर अपने घर परिवार से बातचीत करते रहे. वही जब हमलोग घर के अंदर सोने चला गया जब सुवह 5 वजे उठकर दरवाजे पर आया तो देखा कि वाइक गायब है.मैं एव मेरे परिवार के सदस्य लोग वाइक को खोजबीन करने पर कही अता पता नही चलने पर शंका हुआ कि अज्ञात चोर द्वारा मेरी वाइक को चोरी कर लिया गया है.वही थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि आवेदन के आलोक में प्राथमिकी दर्ज कर अनुसंधान जारी कर दिया है।

सनकी शिकंजी वाले ने आम बेचने वाले युवक के गर्दन पर चाकू मार किया जानलेवा हमला

रक्सौल। एक सनकी युवक ने एक आम बेचने वाले युवक पर बीते दिन जानलेवा हमला कर दिया, जिसमें पीड़ित युवक की जान तो नही गई, परंतु उसे कई टांके जरूर लगे हैं और कई जगह घाव के निशान बन गया है। इस संबंध में मझौलिया थाना के ओझा मठिया निवासी दुखी साह के 19 वर्षीय पीड़ित पुत्र भुलन साह ने बताया कि वह रक्सौल के नागा रोड वार्ड संख्या 23 में किराए के मकान में रहता है, इसी वार्ड में उसके मौसा दुखन साह और मौसी भी रहती हैं। वह यहां फुटपाथ पर फल बेचने का कार्य करता है। पूरी घटना के बारे में उसने बताया कि वह बाटा चौक के समीप एक स्थल पर अस्थाई दुकान लगाकर आए बेच रहा था, तभी शिकंजी बेचने वाला एक युवक आया और आम दुकान को हटाने की बात करने लगा, इस पर दोनो लोगों की कहासुनी हो गई, मामला इतना बिगड़ा की मारपीट की नौबत आ गई और इसी बीच शिकंजी बेचने वाले ने आम बेचने वाले भुलन पर निम्बू काटने वाले चाकू से गर्दन पर कई जगह वार कर दिया गया, ये तो गनीमत रहा कि गर्दन का मुख्य नस नही कटा, वरना लेने के देने पर जाते। उसके बाद युवक भागा-भागा अस्पताल आया, जहां चिकित्सकों ने लगभग आधा दर्जन टांके लगाएं एवं अन्य जगह मरहम-पट्टी करके घर भेजा गया। उधर घटना की सूचना पर पुलिस ने आरोपी शिकंजे वाले को गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी पहचान डंकन रोड स्थित मोहम्मद आलम के पुत्र शाहिद के रूप में हुआ है। उक्त बाबत थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर नीरज कुमार ने बताया कि युवक पर मामला दर्ज कर जेल भेज दिया है।

टीवीएस रेसिंग ने किडजानिया दिल्ली एनसीआर में लॉन्च किया एक्सपीरिएंस सेंटर

पटना। 100 सालों की धरोहर और चार दशकों के रेसिंग इतिहास के साथ टीवीएस मोटर कंपनी ने मोबिलिटी एवं मोटर रेसिंग के क्षेत्र में अपनी नींव को लगातार मजबूत बनाया है। 1982 के बाद से प्रतिभाशाली रेसर्स को प्रोत्साहित करते हुए, टीवीएस रेसिंग ने दुनिया के अग्रणी एंटरटेनमेन्ट थीम पार्कों में से एक किडजानिया के साथ साझेदारी की घोषणा की है। यह साझेदारी युवा, उत्साही राइडरों को रेसिंग का अनूठा अनुभव प्रदान करेगी। सुदर्शन वेनु, मैनेजिंग डायरेक्टर, टीवीएस मोटर कंपनी ने कहा, टीवीएस रेसिंग पिछले चार दशकों से भारत में रेसिंग के क्षेत्र में अग्रणी रही है। हमें खुशी है कि हम दुनिया भर के उपभोक्ताओं को रेसिंग का सुरक्षित एवं रोमांचक अनुभव प्रदान करते हैं। रेसिंग और वीडियो गेम्स मस्ती से भरपूर अनुभव देते हैं। हमें खुशी है कि किडजानिया के साथ साझेदारी के माध्यम से हम बच्चों को रेसिंग का शानदार अनुभव प्रदान करने जा रहे हैं! विमल सुंबली, हैड बिजनेस-प्रीमियम, टीवीएस मोटर कंपनी ने कहा, हाल ही में हमने किडजानिया मुंबई में अपने पहले एक्सपीरिएंस सेंटर का सफल लॉन्च किया था। अब दिल्ली एनसीआर सेंटर में नया लॉन्च करते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। टीवीएस रेसिंग हमेशा से देश में दोपहिया रेसिंग को बढ़ावा देने में अग्रणी रही है। हमारा मानना है कि यह अनूठा अनुळाव न सिर्फ बच्चों के लिए यादगार होगा बल्कि अगली पीढ़ी में रेसिंग के प्रति जोश और उत्साह भी उत्पन्न करेगा। कम उम्र से ही बच्चों को रेसिंग के लिए प्रोत्साहित कर हम उन्हें सुरक्षित एवं नियन्त्रित वातावरण में लर्निंग का रोचक एवं मजेदार अनुभव प्रदान करना चाहते हैं।

उड़ीसा भीषण रेल हादसे का असर चंपारण में, 01 की मौत, 09 घायल

शव लाने हेतु एंबुलेंस मांग रहा 45 हजार रुपए

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। उड़ीसा रेल हादसा का असर पूर्वी चंपारण में भी पड़ा है। उक्त भीषण रेल हादसे में रक्सौल अनुमंडल के रामगढ़वा थाना क्षेत्र के चिकनी गांव के रहने वाले एक मजदूर की मौत समेत 9 मजदूरों के घायल होने की भी सूचना प्राप्त हो रही है। बताया जा रहा है कि उक्त गांव के सभी मजदूर एक ही डब्बे में यात्रा कर रहे थे। सभी ने हावड़ा से उक्त ट्रेन को पकड़ा था और एक ही बोगी में सवार थे और वे केरला जा रहे थे, जहां वे पेंटर का कार्य करते थे। जिनमें एक की मौत हो गई है, बाकी अन्य का ईलाज जारी है। इस घटना की सूचना परिजनों को अन्य मजदूरों ने दी, जिसके बाद घर में कोहराम मच गया।पिछले साल ही मृत युवक की शादी हुई थी। अब इधर शव को घटनास्थल से लाने के लिए एंबुलेंस द्वारा 45 हजार रुपए की मांग की जा रही थी, जिससे परिजनों को इसकी भी चिंता सता रही थी, बाद में ग्रामीणों की सहयोग से शव लाने की पहल की गाय। हालांकि स्थानीय सांसद सह पूर्व बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष डॉ. संजय जायसवाल भारतीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से इस संबंध में बात कर शव को परिजनों तक पहुंचाने की मांग की है।

विद्यालय के छात्र छात्राएं को सड़क पर चल रहे वाहन से दुर्घटना होने की संम्भावना बढ़ी

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के खजौली प्रखंड क्षेत्र के नरार पूर्वी पंचायत के उत्क्रमित मध्य विद्यालय के पास से खजौली नरार कोठी जाने वाली मुख्य सड़क होने से आये दिन विद्यालय के छात्र,छात्राएं सड़क पर चल रहे वाहन से दुर्घटना होने की संम्भावना बनी रहती है.विद्यालय के एचएम सुरेश प्रसाद यादव ने बताया कि मुख्य सड़क की ओर विद्यालय की धेराबंदी नही होने से अकसर वच्चों सड़क पर चले जाने से कभी भी किसी समय दुर्घटना की शिकार हो सकते है. एचएम ने बताया कि विद्यालय के चारो तरफ चार दिवारी बनाने के लिए कई बार सर्व शिक्षा अभियान मधुबनी एव ग्राम पंचायत के मुखिया को लिखित शिकायत करने के बाबजूद भी अभी तक विद्यालय की चार दिवारी निर्माण नही किया गया. उन्होंने कहा कि विद्यालय के परिसर के बगल से मुख्य सड़क गुजरने से वाहन का आना जाना लगा रहता है जिस कारण विद्यालय के वच्चो सड़क पर चले जाने से विद्यालय के एचएम एव शिक्षक को हर वक्त कोई अनहोनी की डर बना रहता है. एचएम ने बताया कि विद्यालय में एक से आठ वर्ग तक में कुल नामांकित छात्र, छात्राओं की संख्या - 378 होने से विद्यालय के चारो तरफ चार दिवारी निर्माण नही होने से छोटे वच्चों सड़क पर दौड़ कर भागने को लेकर कभी भी दुर्घटना होने की संम्भावना बनी रहती है।

पुलिस निरीक्षक कार्यालय में मासिक अपराध गोष्टी का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के खजौली पुलिस निरीक्षक कार्यालय खजौली के सभागार में शनिवार को थानाध्यक्ष खजौली थानाध्यक्ष राजनगर थानाध्यक्ष बाबूबरही थानाध्यक्ष कलुआही के साथ मासिक अपराध गोष्टी का आयोजन किया गया.इस मासिक अपराध गोष्टी का नेतृत्व पुलिस इंस्पेक्टर राजकिशोर शर्मा द्वारा किया गया.इस अपराध गोष्टी के दौरान पुलिस इंस्पेक्टर राजकिशोर शर्मा ने उपस्थित सभी थानाध्यक्ष को बारी बारी से सभी लंम्बित कांड का समीक्षा किया गया। पुलिस इंस्पेक्टर ने सभी थानाध्यक्ष को शख्त निर्देश दिया कि अपने अपने थाना क्षेत्र में सराब तस्करी पर रोक थाम को लेकर दिवा एव रात्रि गशती में तेजी जाने का आदेश दिया. उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र में अपराध पर नियंत्रण को लेकर चौक चौराहे पर वाहन चेकिंग करने का निर्देश दिया गया. उन्होंने कहा कि रात्रि गश्ती के दौरान मुख्य सड़क पर छोटी,बड़ी वाहन को चेकिंग करने का निर्देश दिया गया।

पुलिस इंस्पेक्टर श्री शर्मा ने उपस्थित थानाध्यक्ष को कहा कि अपने थाना में लंम्बित वारंटी ,कुर्की जप्ती एव फरार अभियुक्त को सधन छापामारी करके गिरप्तार करने का आदेश दिया गया. उन्होंने उपस्थित सभी थानाध्यक्ष को कहा कि एसपी मधुबनी का शख्त निर्देश का अनुपालन नही करने वाले थानाध्यक्ष पर किसी भी समय कोई भी थानाध्यक्ष पर गाज गिड़ सकता है.इस मौके पर खजौली थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान,राजनगर थानाध्यक्ष अरविंद्र कुमार,बाबूबरही थानाध्यक्ष चंद्र मणि जी,कलुआही थानाध्यक्ष मृत्युंजय कुमार मौजूद थे।

बाल मैत्री सह अध्ययन केन्द्र की हुई शुरूआत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। स्वयंसेवी संगठन ऐक्शन एड के सहयोग से आज जिले के बंदरा प्रखंड अंतर्गत पीरापुर पंचायत के वार्ड संख्या 12 महादलित टोले में ह्य बाल मैत्री सह अध्ययन केंद्र के संचालन की शुरूआत की गई। इसका उद्घाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रशांत कुमार ने किया। केन्द्र पर एक्शन एड द्वारा ह्वाईट बोर्ड, तारपोलिन शीट व 30 बच्चों के बीच अभ्यास पुस्तिका समेत लेखन सामग्री सौंपा गया। बाल मैत्री सह अध्ययन केंद्र का संचालन दो वोलंटियर सविता कुमारी, सुशील कुमार के माध्यम से आनंदमयी तरीके से सीखाने की प्रक्रिया द्वारा किया जाना है। प्रखंड विकास पदाधिकारी ने अपने संबोधन में बच्चों के संरक्षण को लेकर चलाए जा रहे तमाम योजनाओं का जिक्र किया साथ हीं बाल विवाह के दुष्परिणाम पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि किस प्रकार पढ़ाई-लिखाई बच्चों के भविष्य को बेहतर बनायेगा। बच्चों का उम्र खेलने और पढ़ने का है। बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम के संबंध में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि कोई भी वैसे लोग बख्शे नहीं जाएंगे जो किसी भी प्रकार से बाल विवाह के बढ़ावा में संलिप्त हैं। मौके पर पीरापुर की लक्ष्मी किशोरी समूह की सदस्य, पीरापुर पंचायत के सरपंच प्रवीण कुमार, एक्शन एड के जिला समन्वयक अरविंद कुमार, प्रखंड समन्वयक राजगीर कुमार, वार्ड मेम्बर संतोष राम, एक्शन एड के वोलंटियर जगदीश मांझी, हैदर अली, संजय मांझी, स्वच्छता पर्यवेक्षक रंजीत कुमार सहित समुदाय के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। ज्ञात हो कि इस सप्ताह में हीं इस टोले में एक बाल विवाह को सफलतम तरीके से रोका गया और पाया गया कि यहां से बच्चे नियमित रूप से विद्यालय नही जा रहे हैं। अतः विद्यालय से जोड़ने हेतु बाल मैत्री सह अध्ययन केंद्र के संचालन की शुरूआत समुदाय के सहमती से की गई। विदित हो कि पीरापुर की लक्ष्मी किशोरी समूह, प्रखंड विकास पदाधिकारी,बंदरा स्थानीय जनप्रतिनिधि (मुखिया, सरपंच, वार्ड मेम्बर) तथा एक्शन एड के सक्रिय पहल से बाल संरक्षण का कार्य अपना रंग दिखा रहा है जिसके तहत एक वर्ष के अंदर 4 होने वाले बाल विवाह व बच्चियों के बाहरी प्रदेशों में अवैध खरीद-फरोख्त के मामले को सफलतम तरीके से रोका गया तथा तीन बच्चियों का नामांकन कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय में करवाया गया। पीरापुर की लक्ष्मी किशोरी समूह तथा किंजल्क किशोरी समूह ने ग्राम विकास योजना के लिए एक मांगपत्र स्थानीय मुखिया को सौंपा जिसके तहत उसमें से कुछ कार्य योजना में लिए भी गए हैं।

हत्या कर शव को काट नहर में फेंका, एक कटा पैर देख लोगों के उड़े होश

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। अपराध का ग्राफ धीरे-धीरे इतना बढ़ता जा रहा है कि इंसानों के जान की कीमत अपराधियों ने कीड़े-मकोड़े की तरह कर रखा है। आए दिन हत्या जैसी घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। इस कड़ी में शनिवार की अहले सुबह लोगों में इस वक्त दहशत हो गया, जब लोगों ने भेलाही-घोड़ासहन नहर रोड में कौड़िहार चौक के समीप बाईपास रोड से पहले नहर के किनारे एक व्यक्ति के कटे हुए पैर को लावारिश अवस्था में देखा। उक्त स्थल पर किसी मृतक के एक पैर को देख लोगों के होश उड़ गए। वहां भीड़ एकत्रित हो गई। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि किसी की हत्या कर उसके शव को विभिन्न हिस्सों में काटकर यत्र-यत्र उसे फेंका गया हो, जिसका एक हिस्सा यहां देखने को मिला है। इस संबंध पुलिस ने कहा कि कटा हुआ पैर किसका है, ये अब तक पहचान नही हो पाई है, पुलिस इसकी जांच में जुट गई है।

प्राइज डिस्टिब्यूशन कार्यक्रम में सैकड़ों छात्र-छात्रा हुए पुरुस्कृत

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी अयाची नगर युवा संगठन और हेतुकर झा मेमोरियल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन सेरोमनी का आयोजन डॉ सर गंगानाथ झा वाचनालय सरिसब प्रांगण में किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त प्रोफेसर अशर्फी कामत ने की कार्यक्रम की शुरूआत उपस्थित अतिथि मदन झा डॉ नीरजा मिश्रा मधुकर झा तेजकर झा रामशरण मंडल अयाची नगर युवा संगठन के संस्थापक विक्की मंडल के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। सभी अतिथियों को मिथिला परंपरा के अनुसार पाग माला दोपटा से सम्मानित किया गया। वही लक्ष्मेश्वर एकेडमी के इस वर्ष के 10वीं एवं 12वीं के टॉपर छात्र-छात्रा वर्षा कुमारी तुलसी कुमारी त्रिशला कुमारी मोहम्मद एहशान बब्लू कुमार रौशन कुमार दीपक कुमार कामती निक्की कुमारी दीपक कुमार राजेश कुमार पुतुल कुमारी को डॉ उषाकर झा डॉ चेतकर झा डॉ बिनोदानाद झा प्रोफेसर अच्युतकर झा विनोद झा डॉ हेतुकर झा डॉ प्रभाकर झा डॉ योगानंद झा डर योगाकर झा गौरी नाथ झा मेमोरियल स्कॉलरशिप के तरफ से दस-दस हजार चेक के साथ सर्टिफिकेट मोमेंटो प्रदान किया गया। वहीं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण 70 बच्चों को मेडल सर्टिफिकेट कलम प्रदान कर पुरुस्कृत किया गया। मंच संचालन विक्की मंडल द्वारा किया गया वहीं धन्यवाद मनोज कंठ द्वारा किया गया मौके पर मदन झा छात्र-छात्राओ को संबोधित करते हुए उज्ज्वल भविष्य का कामना किया। मधुकर झा द्वारा अंग्रेजी विषय पढ़ने को लेकर जोर दिया गया । वहीं संस्था के संस्थापक विक्की मंडल ने कहा इस तरह का आयोजन का छठा साल है। इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन से ग्रामीण स्तर पर छुपी हुई प्रतिभा बाहर आती है । और उनका मनोबल मजबूत होता है। मौके पर ,हर्ष नाथ झा,सतीश मंडल, रमेश ठाकुर, नंदू ठाकुर,चंदन मंडल ,राजा चौपाल,कौशल मंडल ,नवीन झा,अमल झा, गिरीन्द्र झा,डॉ अभिमन्यु मिश्रा,छाया झा,प्रदीप झा,कृष्णकांत मंडल,रंजन राय समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

दुनिया में निष्काम प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है :स्वामी नित्यानंद दास

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं कहां घनश्याम से पूछो कि वृंदावन जरा जाना वहां की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना विरह की वेदना वह सदा बेचैन रहती है तरफ कर आंख भर भर के रो रो के कहती है कि है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं। ये बातें कुढनी प्रखंड के बड़ा स्माइल में 11 दिवसीय महारुद्र यज्ञ में प्रवचन के दौरान वृंदावन से पधारे कथा वाचक नीतू दास ने कहीं। उन्होंने कहा, दो प्रकार के प्रेम शास्त्र में बतलाए गए हैं। एक सांसारिक प्रेम हैं दूसरा अध्यात्मिक प्रेम। सांसारिक प्रेमअस्थाई होता है जबकि आध्यात्मिक प्रेम अस्थाई होता है। संसार में लोग प्रेम स्वार्थ बस करते हैं जबकि भगवान से प्रेम निष्काम भाव से किया जाता हैं। सांसारिक प्रेम बंधन कारक होता है जबकि आध्यात्मिक प्रेम मोक्ष देने वाला होता है । प्रेम ऐसी अनमोल वस्तु है जिसके बिना हम रह भी नहीं सकते। कोई पुत्र से प्रेम करता है तो कोई पत्नी से तो कोई मित्र से कोई नशा से। कोई बिरले व्यक्ति को ही भगवान से प्रेम हो जाता है ।उसे हर प्राणी से प्रेम होता है। आज मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि मां से उत्पन्न भाई से प्रेम नहीं है क्योंकि उसने स्वार्थ को ही महत्व दिया है ।प्रेम का स्वाद आज तक उससे मिला ही नहीं। प्रेम को चखने की इच्छा हो तो एक बार वृंदावन के गोपियों से मिलो या जिसने प्रेम का आस्वादन किया है उस मीराबाई के पद चिन्ह का अनुसरण करो।

नौ वेग डे के अंतगर्त छात्र छात्राएं को पठन पाठन, व्यायाम और खेल की जानकारी दी गई

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के अंतर्गत खजौली प्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य विद्यालय के गुलरिया टोल में शनिवार को विद्यालय के प्राधानाध्यापक सुरेश प्रसाद यादव के देख रेख में मीनू के अनुरूप गुणवक्ता पूर्ण खिचड़ी चोखा एक से आठ वर्ग के 265 छात्र छात्राएं के बीच परोस कर खिलाया गया. विद्यालय के एचएम सुरेश प्रसाद यादव ने बताया कि प्रत्येक माह के शनिवार को विद्यालय में नौ वेग डे के अंतगर्त उपस्थित सभी छात्र छात्राएं को पठन पाठन संचालित किया जाता है.इस पठन पाठन में शाररिक शिक्षक संजय कुमार सिंह के द्वारा उपस्थित सभी छात्र छात्राएं को व्यायाम बॉली बॉल खेल खेलाकर बच्चों को जानकारी दी जाती है .वही शिक्षक संजीव कुमार के द्वारा कहानी के चित्रों को क्लास रूम के श्यामपट्ट पर जादुगर के चित्रों को सजाकर कर बच्चों की जानकारी दी गयी. उन्होंने वच्चों के बीच कमाल कैम्प के गतिविधि में कहानी पर रौल प्ले करके छात्र छात्राओं को जानकारी दी.वही शिक्षक अभय कुमार ने विद्यालय के छात्र छात्राएं को सामान्य ज्ञान की जानकारी दी गयी. वही विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुरेश प्रसाद यादव द्वारा बनाई गयी कहानी शब्द कोष सहित अन्य टीएलएम वस्तु का प्रदर्शनी लगाकर बच्चों को जानकारी दी.इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक संजय कुमार सिंह अभय कुमार राम संजीव कुमार पुनिता वर्मा समर कैम्प के स्वयंसेवी कर्मी राज कुमार सदाय सहित अन्य शिक्षक मौजूद थे।

अगले 4दिनो तक बनी रहेगी हीट बेव की स्थित 42 से 43 डिग्री तक पहुंच सकता है तापमान

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा 3से 6जून तक का मौसम पूवार्नुमान जारी किया गया है। पूवार्नुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में हीट बेव की स्थिति बनी रहेगी।इस अवधि में अधिकतम तापमान 42-43डिग्री तक जा सकता है। मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 39.9 एवं 23.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 67 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 30 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.5 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 7.6 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 11.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.6 एवं दोपहर में 42.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।पिछले कई दिनों से उत्तर बिहार के अनेक जिलों में हीट बेव की स्थिति बनी हुई जिससे अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या 40 डिग्री सेल्सियस के ऊपर रह रही है। फिलहाल ऐसी स्थिति (प्रचंड ताप प्रवाह) अगले 4-5 दिनों तक और बने रहने की सम्भावना है। पूवार्नुमानित अवधि में अधिकतम तापमान में और वृद्धि हो सकती है। जिसके कारण अनेक स्थानों पर अधिकतम तापमान 42-43 डिग्री सेल्सियस तक जा सकती है। न्यूनतम तापमान में वृद्धि हो सकती है और यह 25-27 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 75 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 13 से 15 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है।

कुर्था से बिजलपूरा तक 17 किलोमीटर रेल लाइन पर ट्रेन परिचालन में अभी कुछ समय लगेगा

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के जयनगर इंडो नेपाल रेल प्रोजेक्ट के तहत जयनगर जनकपुर रेलखंड पर हैंड ओवर एवं टेक ओवर के बाद भी कुर्था से बिजलपूरा तक 17 किलोमीटर रेल लाइन पर ट्रेन परिचालन में एक महीने का समय अभी लग सकता है। बीते एक अक्टूबर को भारतीय इरकॉन एजेंसी के अधिकारियों के द्वारा नेपाली रेल अधिकारियों को बथनाहा रेलवे स्टेशन पर कुर्था से बिजलपूरा रेल लाइन परियोजना का हैंड ओवर एवं दोनों देश के प्रधानमंत्रियों के दिल्ली से वर्चुअल सौंप देने के बावजूद भी नेपाली ट्रेन का परिचालन कुर्था से बिजलपूरा तक चालू नहीं हुआ है। इंडो नेपाल रेल प्रोजेक्ट मैं जयनगर से नेपाल के वदीर्वास 69 किलोमीटर रेलखंड निर्माण की पूरी योजना लगभग 700 करोड़ रुपए की राशि से तैयार करनी है जिसके प्रथम चरण में पिछले साल 2 अप्रैल 2022 को दोनों देश के प्रधानमंत्रियों के द्वारा जयनगर से जनकपुर भाया कुर्था तक 34.5 किलोमीटर रेल ट्रेन का परिचालन किया गया था। इसके दूसरे चरण में एक जून 23 को कुर्था से 17 किलोमीटर बीजलपुरा तक रेल लाइन भारतीय एजेंसी के द्वारा निर्माण पूरा कर लेने के बाद नेपाली रेल अधिकारियों को परिचालन के लिए हैंड ओवर कर दिया गया। अब नेपाल रेल अधिकारियों के द्वारा रेल परिचालन किया जाना था। मगर उद्घाटन के बाद ही ट्रेन परिचालन नहीं शुरू हो सका है।नेपाली रेल लाइन निर्माण कर रहे भारतीय एजेंसी इरकॉन के संयुक्त जीएम विवेक निगम ने बताया कि कुर्था से बीजलपुरा तक रेल लाइन का हैंड ओवर 1 जून को बथनाहा स्टेशन पर नेपाली अधिकारियों को कर दिया गया है। अब नेपाल के रेल पदाधिकारियों के द्वारा इस रेलखंड पर रेल परिचालन चलाना उनकी जिम्मेवारी है। एवं जयनगर जनकपुर रेलखंड पर तीसरे फेज के निर्माण में बिजलपूरा से वदीर्वास रेल लाइन निर्माण में जमीन अधिकरण का काम बाकी है । जैसे ही रेल निर्माण के लिए जमीन मुहैया कराई जाएगी तीसरे चरण का काम शुरू हो जाएगा।

इस संबंध में नेपाली रेल मैनेजिंग डायरेक्टर निरंजन झा ने बताया कि भारतीय एजेंसी के द्वारा हैंड ओवर एवं टेकओवर का काम पूरा हो गया है। कुर्था से बिजलपूरा तक ट्रेन का परिचालन 1 महीने के अंदर शुरू कर लिया जाएगा ।

राजकीय समारोह के रूप में मनाई गई जार्ज फर्नांडिस की जयंती

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। समता पार्टी के संस्थापक और लोकप्रिय नेता श्री जार्ज फर्नान्डिस का जयंती राजकीय समारोह के रूप में स्थानीय सिटी पार्क और नगर भवन में मनाया गया। सिटी पार्क में अवस्थित उनके आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर जिले के प्रभारी मंत्री सह माननीय मंत्री कला संस्कृति एवं युवा विभाग जितेन्द्र कुमार राय सहित जिला प्रशासन एवं कृतज्ञ जनता ने उनके व्यक्तित्व को याद किया। इससे पूर्व परिसर में बिहार गौरव गान प्रस्तुत किया गया। तदोपरांत नगर भवन में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। उनके सहभागी रहे श्री हरेन्द्र कुमार ने उनके साथ पलों को याद किया साथ ही उनके विचार और आदर्शों को सामने रखा। उन्होनें बताया कि किस तरह से वे संघर्षशील जीवन व्यतीत कर समतामूलक समाज निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहे। जिले के चहुँमुखी विकास के लिए प्रयासरत रहे । कांटी थर्मल, दूरदर्शन केन्द्र तथा अन्य विकासपरक कार्यो में उनका अग्रणी भूमिका रही । वरीय पुलिस अधीक्षक श्री राकेश कुमार, प्रभारी डीएम श्री आशुतोष द्विवेदी, डिप्टी मेयर श्रीमति मोनालीसा ने भी उनके आदर्शों और व्यक्तित्व को सराहा साथ ही उनके सहृदयता, सादगी और सघर्ष को याद कर प्रेरित हुए। अपर समाहर्ता आपदा श्री अजय कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पूरे कार्यक्रम का मंच संचालन लोकप्रिय उद्घोषक श्री गोपाल फलक ने किया।

संक्षिप्त खबरें

प्रमंडलीय आयुक्त कार्यालय के समक्ष प्रदर्शनकारियों ने दिया एक दिवसीय धरना

भागलपुर।प्रमंडलीय आयुक्त कार्यालय के समक्ष चौकीदार वफादार समिति भागलपुर इकाई द्वारा अपने आश्रितों की बहाली एवं प्रोन्नति के लिए एक दिवसीय धरना सह हल्ला बोल प्रदर्शन किया। संघ जीरापुर मंडी के अध्यक्ष कैलाश झा ने बताया कि प्रदेश नेतृत्व में चौकीदार दफादार पंचायत के द्वारा अपनी नियमावली 14 मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया है, उन्होंने कहा कि हम लोगों के आश्रितों को नियुक्ति मिलनी चाहिए, साथी जो कार्यरत हैं, उन्हें प्रोन्नति मिलनी चाहिए। वही उन्होंने कहा कि हम लोगों की जो मांग सरकार से की गई थी, जिसके लिए उच्च न्यायालय में केस दाखिल किया गया था, लेकिन सरकार की वकील हम लोगों की आवाज सही से नहीं उठा पाई। जिसके चलते हम लोगों की बातें नहीं मानी गई। यह कहीं से सही नहीं है, जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं, और जो होने वाले हैं, उनके आश्रितों की बहाली हो साथ ही वर्तमान में जो कार्यरत है उनकी प्रोन्नति होनी चाहिए।

चार नामजद सहित अज्ञात पर मृतक की पत्नी ने कराया मामला दर्ज

शाहकुंड (भागलपुर)।अकबरनगर थाना क्षेत्र के छीट मकंदपुर हाल्ट के समीप शुक्रवार अहले सुबह बड़ी केशोपुर जमालपुर निवासी अनुज कुमार का छतविक्षिप्त शव को पुलिस ने खेत से बरामद किया था। इसके बाद पुलिस ने युवक के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। वहीं इस मामले में युवक की पत्नी सपना देवी ने अकबरनगर थाना में चार नामजद सहित अज्ञात लोगों पर मामला दर्ज कराया है। युवक की पत्नी सपना देवी ने मामला दर्ज कराते हुए बताया है कि सबौर निवासी मनीष कुमार, आकाश, दिलीप एवं डब्लू से पति का पैसा से लेनदेन हुआ था। जिसको लेकर विगत कुछ दिन पहले पैसे की मांग को लेकर मेरे पति से झगड़ा हुआ था। उन्होंने पैसे लेनदेन में हत्या होने की बात कहकर चार लोगों को नामजद के साथ अन्य अज्ञात पर मामला दर्ज कराया है। इधर पुलिस ने बताया कि मामला दर्ज कर नामजद लोगों के धरपकड़ के लिए छापेमारी की जा रही है। जल्द ही हत्यारा पुलिस की गिरफ्त में होगा।

श्रावणी मेला में सुविधा मुहैया कराने की जिला प्रशासन से की मांग

शाहकुंड (भागलपुर)।विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला आगामी चार जुलाई से शुरू हो रही है। श्रावणी मेला शुरू होने में महज एक महीने का समय शेष रह गया है। श्रावणी मेला के विशेष महत्व को देखते हुए प्रशासनिक स्तर पर तैयारियां तेज कर दी गई है। ताकि सावन मास में देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं व कावड़िया को किसी भी प्रकार की असुविधा ना हो। वहीं इसको लेकर नगर पंचायत अकबरनगर की अध्यक्ष किरण देवी ने सदर अनुमंडल पदाधिकारी भागलपुर से श्रावणी मेला के मद्देनजर विभिन्न समस्याओं से अवगत कराते हुए क्षेत्र में सुविधा मुहैया कराने की मांग की है। सदर अनुमंडल पदाधिकारी से लिखित आवेदन के माध्यम से मांग करते हुए बताया है कि सुल्तानगंज से सटे पूरब नगर पंचायत अकबरनगर में पेयजल की व्यवस्था, चलंत शौचालय, लाइट की व्यवस्था, अतिरिक्त पुलिस बल की व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाए। अधिकांश कावड़िया की बड़ी वाहन अकबरनगर शाहकुण्ड मार्ग के रास्ते से गुजरते हैं। जिसे देखते हुए अकबरनगर शाहकुंड मार्ग में कुछ जगहों पर चापानल की व्यवस्था की जाय, साथ ही फोरलेन से भी कावड़िया वाहन आने की संभावना को देखते हुए इस पथ पर भी पुलसिंग पेट्रोलिंग की व्यवस्था करना सुनिश्चित किया जाय जिससे लुटेरों व अपराधिक तत्वों के लोगों पर निगरानी रखने में सहायक साबित हो।

एसबीआई द्वारा जन सुरक्षा अभियान के जरिये ग्राहकों को किया गया जागरूक

पूर्णिया । भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, व्यावसायिक कार्यालय, पूर्णिया के क्षेत्रीय प्रबंधक विकास कुमार के निर्देश पर राज्य स्तरीय जन सुरक्षा योजना अभियान पूर्णिया जिले के गढी बलुआ गांव के श्रीनगर प्रखंड मे संपन्न हुआ। महाप्रबंधक सत्यव्रत महापात्र, महा प्रबंधक प्रेम प्रकाश, उप महा प्रबंधक विकास कुमार ने कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलन एवं वृक्षारोपण कर किया और बिंदुओं पर प्रकाश डाला। बाजार और चौक चौराहे पर ऑडियो संदेश के माध्यम से भी आम जनता और ग्राहकों को जागरुक किया गया। लाउडस्पीकर के माध्यम से सभी लोग को जागरूक किया जा रहा है। साथ ही पर्ची वितरण किया जा रहा है जिससे कि आम जनता की मेहनत से कमाया हुआ पैसा बर्बाद ना हो। अधिकृत बैंक या ग्राहक सेवा केंद्र पर ही बैंकिंग लेनदेन का सुझाव दिया गया।

कोसी नदी के जलस्तर में होने लगी बढ़ोतरी से जियो बेग धसने के कगार पर पहुंचा

करोड़ों की लागत से कराये कटाव रोधी कार्य भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नबगछिया पुलिस जिला क्षेत्र अंतर्गत कोसी नदी के जलस्तर में बढ़ोतरी होना शुरू हो गया है, लेकिन अब तक जल संसाधन विभाग की लापरवाही बढ़तने का मामला सामने आ रहा है, दरअसल करोड़ों की लागत से कराए जा रहे कटाव रोधी कार्य कुछ ही दिनों में भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। नवगछिया के जहांगीरपुर बैसि इलाके में कोसी नदी किनारे बीते दिनों तीन करोड़ 40 लाख राशि की लागत से कटावरोधी कार्य कराया गया था, लेकिन उक्त कार्य की हकीकत देखने को अब मिल रही हैं, जल संसाधन विभाग द्वारा कटाव रोकथाम के लिए गंगा के तट बंधीयकरण में इस्तेमाल किये गये जियो बैग कोसी के बढ़ते जलस्तर से धंसता जा रहा है। वही तट बांध पर लगाये गये कई बोरियां पानी में समाहित होने के कगार पर चल रहा है। विगत 15 मई को कटावरोधी कार्य पूरा हुआ था और कुछ ही दिनों में ऐसी स्थिति हो गयी इस भयावह स्थिति को देखकर ग्रामीण फिर डरे सहमे हुए हैं। कोसी नदी में अभी जलस्तर में बढ़ोतरी शुरू ही हुई है कि जून के अंतिम सप्ताह और जुलाई महीने में कोसी अपना विकराल रूप धारण करती है, ऐसे में हालात फिर भयावह होंगे ये संभावित जाहिर हो रहा है, गंगा नदी तट के सारे जियो बैग नदी में समा जाएंगे और फिर कोसी किनारे अवस्थित दर्जनों घर कोसी में समाहित होने की आशंका पुनः सताने लगी है। विगत सप्ताह पूर्व कई बोरियां धंसने की बात सामने आने लगी थी। जिसके बाद उसे दुरुस्त कराया जा रहा है। बता दें कि बीते वर्ष कोसी के कहर में दर्जनों मकान कोसी में समा चुके थे, हालांकि सरकार ने कई पीड़ितों को मुआवजा दिया और कटावरोधी कार्य शुरू करने के पहल की शुरूआत की थी, लेकिन यह कार्य अब नाकाफी साबित हो रहा है।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को भेजी गयी जर्दालू आम की सौगात

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। सुलतानगंज के महेशी पंचायत के तिलकपुर के मधुवन नर्सरी का जर्दालु आम कि खासियत होने पर हर वर्ष राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को सौगात के रूप में भेजें जाते हैं। आम के भेजें जाने को लेकर पूरी किसान द्वारा प्रशासन के नेतृत्व में तैयारी की जा चुकी हैं, सुबह के 11.15 बजे के करीब विक्रमशिला एक्सप्रेस से जिला कृषि पदाधिकारी के देखरेख में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री, सहित अन्य मंत्रीयों को भेजा गया है। जर्दालु आम को लेकर मधुवन नर्सरी के किसान अशौक चौधरी ने बताया कि वर्ष 2017 से भागलपुर के जर्दालु आम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री सहित अन्य मंत्रीयो को आम भेजा जा रहा है, और उन्होंने कहा कि आम का नया फसल मोदी वन और मोदी टु के नाम से भी उत्पादन किया गया है। इस बार लोकसभा चुनाव में मोदी जी का सरकार बनेगा तो मोदी 3 का आम का फसल उत्पादन किया जाएगा। हर वर्ष दो जुन को विक्रमशिला से आम भेजा जाता था, लेकिन इस बार आम का पार्केट समय पर नहीं आने पर तीन जुन को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को जर्दालु आम भेजा गया है, इसकी तैयारी दिन रात आम की पेंकिंग में लगे हुए थे।

पेंशन सत्याग्रह व पेंशन रथयात्रा भागलपुर में हुआ आगमन

पेंशन समाज संगठन के सदस्यों ने गर्मजोशी के साथ किया जोरदार स्वागत

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। 1 जून से 4 जून तक बिहार में चंपारण के भितिहारवा से सीता बलियारा तक आयोजित पेंशन सत्याग्रह व पेंशन रथ यात्रा भागलपुर आगमन हुआ है। बताया जा रहा है कि चार दिवसीय पेंशन सत्याग्रह व पेंशन रथ यात्रा हर सूबे के हर जिले में घूमकर पेंशन धारकों को जागरूक करने का काम कर रही है, और अपनी हक की लड़ाई लड़ने की बात कह रहे है। गौरतलब हो कि विगत 1 जनवरी 2004 से केंद्रीय कर्मियों के लिए आजादी के समय से लागू पुरानी पेंशन योजना को केंद्र सरकार द्वारा रद्द कर नई अंशदाई पेंशन योजना लागू की गई थी। सरकार ने अपनी मनमानी को लेकर इस योजना को पूंजीपतियों कारपोरेटों के लिए ज्यादा से ज्यादा फायदा पहुंचाने के लिए इसे बंद कर दिया। जिसको लेकर दर्जनों कर्मियों ने पूरे सूबे में पेंशन सत्याग्रह पेंशन रथयात्रा निकाली थी। उक्त पेंशन रथयात्रा विगत 1 जून को मोती हरवा गांधी आश्रम में गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ प्रारंभ किया गया था और अररिया, पूर्णिया व कटिहार होते हुए यह पेंशन रथ यात्रा आज भागलपुर पहुंची। जहां गर्मजोशी से पेंशनधारियों ने बाहर से आए अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पेंशन समाज के लोगों ने शपथ ली कि जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होगी, यह पेंशन सत्याग्रह और पेंशन रथ यात्रा प्रारंभ रहेगा। उसके बाद रथयात्रा भागलपुर से मुंगेर की ओर रवाना हुई है। वहीं कई जगह पेंशन सत्याग्रह व पेंशन रथयात्रा 4 जून को मांझी सिताबदियारा में समाप्त होगी। लोगों ने शहर के कई चौक चौराहों पर प्रदर्शन भी किया और अपनी मांगों को लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी भी की।

सुल्तानगंज का नाम बदलव हो अजगैबीनाथ धाम : विजय सिन्हा

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले के ठीक पहले भागलपुर के सुल्तानगंज का नाम बदलकर अजगैविनाथ धाम रखने की बड़ी मांग भाजपा ने कर दी है। बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता विजय सिन्हा ने कहा कि देश की सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करने का प्रण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरे देश के लोगों ने ले रखा है, और विदेशी अतिक्रमणकारियों और मुगलों के नाम पर अब देश के किसी भी शहर का नाम नहीं रहने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि भागलपुर के पवित्र उत्तरवाहिनी गंगा तट जिसका पौराणिक नाम अजगैबीनाथ है, और जहां से प्रतिवर्ष लाखों कावड़िया कांवड़ में गंगाजल भरकर बाबा भोलेनाथ को जलाभिषेक करने के लिए रवाना होते हैं, उस जगह का नामकरण कर फिर से अजगैबीनाथ धाम रखने की मांग हम सड़क से सदन तक रखेंगे। उक्त बातें प्रधानमंत्री के कार्यकाल के 9 साल बेमिसाल कार्यक्रम के दौरान सभा को संबोधित करते हुए कहा है।

13 ट्रैक्टर, दो ट्रक जब्ती के साथ सात कारोबारी हुआ गिरफ्तार

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले भर में अवैध बालू खनन के मामले को लेकर पुलिस प्रशासन ने अवैध रूप से कारोबार चला रहे बालू माफियाओं के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि एसएसपी आनंद कुमार के जारी आदेश के आलोक में विधि व्यवस्था डीएसपी गौरव के नेतृत्व में तीन थानों की पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध बालू लदे दो ट्रक व 13 ट्रैक्टरों को जब्त कर लिया है वही इसके साथ ही सात बालू माफियाओं को भी गिरफ्तार किया है। शनिवार की तड़के सुबह पुलिस ने बायपास इलाके सहित कजरैली व लोदीपुर थाना क्षेत्र इलाके में छापेमारी शुरू की करीब चार घण्टे छापेमारी की गयी। वहीं जब्त वाहनों को लोदीपुर थाना में रखा गया है। पुलिस की इस कार्रवाई से बालू माफियाओं के बीच में हड़कंप मचा हुआ है। विधि व्यवस्था डीएसपी डॉ. गौरव ने बताया कि एसएसपी को गुप्त सूचना मिली थी, फिर सिटी एसपी की निगरानी में मेरे नेतृत्व में जीरोमाइल,लोदीपुर कजरैली क्षेत्र इलाके में सघन छापेमारी की गईम जहां से 13 ट्रैक्टरों दो ट्रकों को जब्त किया गया है। वही उन्होंने कहा कि बालू माफियाओं के खिलाफ पुलिस की ये कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।

नौ को नगर पंचायत के लिए प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला करेंगे जनता

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर । नवगठित नगर पंचायत के कुल 12833 मतदाता पहली बार 9 जून को अपने मताधिकार का प्रयोग कर एक बुक पार्षद और एक उप मुख्य पार्षद का चुनाव करेंगे। जिसमें नवगठित नगर पंचायत के 6753 पुरुष एवं 6080 महिला मतदाता मतदान करेंगे। इसके अतिरिक्त 12 वार्ड के लिए अलग-अलग वार्ड पार्षद का चुनाव किया जाएगा जिसमें प्रत्येक वार्ड में अलग-अलग मतदाता अपने वार्ड के लिए वार्ड पार्षद का चुनाव करेंगे बताया जाता है कि संग्रामपुर प्रखंड मुख्यालय के कुमार एवं पंचायत को जोड़कर संग्रामपुर नगर पंचायत का गठन किया गया है। नवगठित नगर पंचायत संग्रामपुर के पहले चुनाव में मुख्य पार्षद पद के लिए उप मुख्य पार्षद पद के लिए 09 एवं 12 वार्ड में कुल मिलाकर 69 प्रत्याशी चुनाव मैदान में अपने किस्मत को आजमा रहे हैं इस बार के चुनाव में जितने भी लोगों ने उम्मीदवारी के लिए अपना अपना नामांकन पर्चा भरा है उसमें ना तो किसी का नामांकन रद्द हुआ और ना ही किसी ने अपनी नामांकन पत्र को वापस ली है।

इस चुनाव में मुख्य पार्षद का पद सामान्य महिला के लिए आरक्षित है। इधर नगर चुनाव के मैदान में पूरे दमखम के साथ प्रचार प्रसार में जुटा हुआ है। चुनावी दौर धीरे-धीरे परवान चलने लगा है लेकिन मतदाताओं की खामोशी उम्मीदवारों और समर्थकों के बीच बेचैनी का माहौल बना कर रखा हुआ है। नगर पंचायत के लिए वार्ड वार्ड मतदाता वार्ड संख्या 01 पुरुष मतदाता 904 महिला मतदाता 825 कुल मतदाता 1729 वार्ड संख्या 02 महिला मतदाता 533 पुरुष मतदाता 606 कुल मतदाता 1139 वार्ड संख्या 03 पुरुष मतदाता 306 महिला मतदाता 258 कुल मतदाता की संख्या 564 वार्ड संख्या 04 मतदाता 575 महिला मतदाता की संख्या 541 कुल मतदाता 1116 वार्ड संख्या 05 पुरुष मतदाता 436 महिला मतदाता 92 मतदाता की संख्या 828 वार्ड संख्या 06 पुरुष मतदाता 471 महिला मतदाता 453 कुल मतदाता की संख्या 924 वार्ड संख्या 07 पुरुष मतदाता 400 महिला मतदाता 376 कुल मतदाता की संख्या 776 वार्ड संख्या 08 पुरुष मतदाता 909 महिला मतदाता 552 कुल मतदाता की संख्या 1160 वार्ड संख्या 09 पुरुष मतदाता 672 महिला मतदाता 593 कुल मतदाता की संख्या 1265 वार्ड संख्या 10 कुल पुरुष मतदाता की संख्या 490 महिला मतदाता की संख्या 443 कुल मतदाता संख्या 993 वार्ड संख्या 11 पुरुष मतदाता की संख्या 528 महिला मतदाता की संख्या 470 कुल मतदाता 998 वार्ड संख्या 12 पुरुष मतदाता की संख्या 752 महिला मतदाता की संख्या 641 कुल मतदाता की संख्या 1393 है इस तरह रामपुर नगर पंचायत चुनाव में 12833 मतदाता पहली बार अपना मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

33 करोड़ की लागत से आवासीय महाविद्यालय का पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग के प्रधान सचिव ने लिया जायजा

संग्रामपुर। शनिवार को कल्याण विभाग बिहार सरकार पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग के प्रधान सचिव पंकज कुमार द्वारा प्रखंड के कटियारी पंचायत अंतर्गत करीब 33 करोड़ रुपए की लागत से बनाए जा रहे पिछड़ा एवं अति पिछड़ा आवासीय महाविद्यालय का निरीक्षण किया गया। महाविद्यालय एवं आवासीय परिसर क्षेत्र के निर्माण कार्य के निरीक्षण के दौरान उन्होंने भवन निर्माण निगम के कार्यपालक अभियंता को कई जगहों पर कराये गये निर्माण कार्य में सुधार लाने का सुझाव दिया।साथ ही साथ उन्होंने पिछड़ा एवं अति पिछड़ा आवासीय महाविद्यालय के निर्माण कार्य को दिसंबर माह तक हर हाल में पूर्ण कराये जाने का भी निर्देश दिया।

स्वास्थ्य विभाग के निदेशक ने किया जांच पड़ताल

हवेली खड़गपुर। बिहार सरकार ने पूरे स्वास्थ्य सेवा को सुलभ और सुरक्षित एवं जन उपयोगी बनाने के लिए पूरे बिहार में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और अतिरिक्त स्वास्थ्य केंद्रों तथा जिला अस्पताल के जांच के लिए अपर निदेशक के देखरेख में पूरे बिहार में स्वास्थ्य विभाग की जांच की जा रही है। अपर निदेशक डॉ अशोक कुमार ने बताया कि जनता के लिए स्वास्थ्य विभाग को जन उपयोगी बनाने के लिए राज्य सरकार ने जांच कर खामियों को दूर करने का संकल्प लिया है डॉ कुमार तारापुर के रेफर अस्पताल के रखरखाव जांच के बाद हवेली पर स्वास्थ्य केंद्र के विभिन्न विभागों का जांच पड़ताल किया और आवश्यक निर्देश दिया। जानकारी के अनुसार उन्होंने एसएनसीयू वार्ड में नवजात शिशु को दी जाने वाली सेवाओं से संबंधित सुविधाओं का जायजा लिया और वहां पर तैनात स्वास्थ्य कर्मियों को बेहतर प्रबंधन और साफ-सफाई रखने का निर्देश दिया है।

एवजी एवं सेवानिवृत्ति बहाली के लिए विशेष अध्यादेश लाओ : केशरी

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर सदर। एवजी आश्रितों एवं सेवानिवृत्ति बहाली सहित अन्य सुलगते सवालों को लेकर बिहार राज्य दाफादार-चौकीदार पंचायत का एकदिवसीय धरना-प्रदर्शन शहीद स्मारक के समक्ष राष्ट्रीय महासचिव डॉ० संत सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष जीतू सिंह, राज्य उपाध्यक्ष रामविलास पासवान एवं प्रमंडलीय अध्यक्ष संजय केशरी के नेतृत्व में दिया गया।

प्रमंडलीय धरना-प्रदर्शन को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महासचिव डॉ० संत सिंह ने कहा कि बिहार सरकार दाफादार-चौकीदार के साथ भेद-भाव कर रही है जिस कारण सरकारी वकील द्वारा बिहार चौकीदार संवर्ग नियमावली 2014 को उच्च न्यायालय द्वारा समाप्त कर दिया गया है। बिहार सरकार द्वारा इन्हें पुनः लागू कराने हेतु सेवानिवृत्त होने वाले दाफादार-चौकीदार के आश्रितों के बहाली के लिए अध्यादेश लायें। कार्यकारी अध्यक्ष जीतू सिंह एवं राज्य उपाध्यक्ष रामविलास पासवान ने पच्चीस फरवरी के पूर्व चयनित स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र निर्गत करने की मांग करते हुए कहा कि बिहार चौकीदार संवर्ग नियमावली 2019 को वापस लेकर पुनः चौकीदार का निलंबन एवं वेतन जिला पदाधिकारी के यहां रखा जाय। अपने संबोधन में मुंगेर प्रमण्डलीय अध्यक्ष संजय केशरी ने कहा कि बिहार सरकार एवजी आश्रितों एवं सेवानिवृत्ति बहाली के लिए विशेष अध्यादेश लायें नहीं तो चौकीदार बिहार सरकार की चूलें हिला देगा। मुंगेर जिला अध्यक्ष रावण पासवान एवं महासचिव मो० इंसान ने चौकीदार को दाफादार एवं दाफादार को वरीय दाफादार में प्रोन्नत करने का मांग किया। धरना के पश्चात डॉ० संत सिंह एवं संजय केशरी के नेतृत्व में पांच सदस्यीय शिष्टमंडल मुंगेर प्रमण्डलीय आयुक्त से मुलाकात कर वार्ता कर अपनी मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा।

इनके अलावा मुंगेर जिला प्रवक्ता अशोक पासवान, सहेन्द्र पासवान, बलराम प्रसाद निराला, बेगुसराय जिला अध्यक्ष कमलेश्वरी ठाकुर, उपाध्यक्ष सुनील पासवान, कोषाध्यक्ष अमरजीत पासवान, खगड़िया जिला अध्यक्ष मो० जियाउद्दीन, महासचिव इन्द्रसेन प्रसाद, बिष्णुधारी पासवान, विमल साल, सनोज पासवान, रवीन्द्र पासवान, मो० शमशाद, नन्द किशोर पासवान, भंगी पासवान, समरजीत पासवान, नन्दन यादव एवं मुकेश पासवान सहित सैंकड़ों दाफादार-चौकीदार उपस्थित थे।

पानी के मोटर जलने पर इलाके में गहराया जल संकट

प्रात : किरण संवाददाता।

शाहकुंड (भागलपुर)। नगर पंचायत अकबरनगर के वार्ड नंबर सात के अकबरनगर शाहकुण्ड मार्ग के सटे पश्चिमी इलाके के करीब दर्जनों घरों को में पानी की सुविधा नही मिल पा रही हैं। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि नलजल योजना के तहत लगाये गये, पानी मोटर जल गया है। जिससे क्षेत्र के लोगों को विगत तीन दिनों से नहीं पीने के पानी नही मिल पा रहा है। पानी की समस्या को लेकर इस भीषण ताप्ती गर्मी में लोगों को पानी को लेकर काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वही लोगों ने बताया कि नल जल योजना से तीन वक्त पानी की सुविधा उपलब्ध थी लेकिन सुबह, दोपहर एवं शाम पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है। इलाके में बोरिंग किये जाने के बाद से पानी की काफी सहूलियत होती थी, लेकिन पिछले तीन दिनों से बोरिंग का मोटर जल गया है जिसे देखने के लिए अबतक कोई भी नही पहुंचा जिससे हम ग्रामीणों के बीच पानी नहीं मिल पा रहा है। इस भीषण गर्मी में पानी के लिए काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वही मामले को लेकर वार्ड नंबर सात की वार्ड पार्षद निशू प्रिया यादव ने बताया कि पिछले तीन दिनों से पानी नहीं मिलने की जानकारी ग्रामीणों द्वारा प्राप्त हुई थी। जिसके बाद विभाग के अधिकारी से पानी के मोटर की जांच व दुरुस्त करने की बात किया गया है। विभाग के अधिकारी ने बताया कि मोटर जल जाने से पानी की सप्लाई नहीं हो पा रही है, मोटर ठीक कराने के लिए भेजा गया है। उन्होंने बताया कि चिल्लाती धूप एवं गर्मी में नलजल योजना से पानी नहीं मिलने से ग्रामीणों को परेशानी हो रही है। इसको लेकर विभाग को जल्द से जल्द ठीक करा कर मोटर लगाने को कहा गया है, ताकि नलजल योजना से जुड़े उपभोक्ताओं को सुगमता पूर्वक पानी मिल सके, साथ ही इस तपती धूप व उमस भरी गर्मियों में ग्रामीण कोई परेशानी ना उठानी पड़े इसके लिए प्रयासरत है।

सुलह समझौते से स्थानीय स्तर पर भूमि विवाद का कराया गया निष्पादन

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। विवादों के ज्यादातर मामले भूमि विवाद से संबंधित होते हैं। भूमि संबंधित विभाग को आपसी सुलह समझौते से स्थानीय स्तर पर निष्पादन करने के उद्देश्य से अंचलाधिकारी की अध्यक्षता में जनता दरबार का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में संग्रामपुर थाना परिसर में शनिवार को अंचलाधिकारी स्नेहा सत्यम एवं थानाध्यक्ष रंजन कुमार की मौजूदगी में जमीनी विवाद के निपटारे के लिए जनता दरबार का आयोजन किया गया। जनता दरबार में पहुंचे अधिकांश मामले भूमि के स्वामित्व से संबंधित थे। जनता दरबार में कुछ मामले ऐसे भी थे जिसकी सुनवाई न्यायालय में लंबित है। न्यायालय में लंबित मामलों की सुनवाई के क्रम में अंचलाधिकारी के द्वारा न्यायालय में मामले की सुनवाई के दौरान दोनों पक्षों में विवाद की स्थिति नहीं उत्पन्न हो इसको लेकर दंड प्रक्रिया 107 के तहत निरोधात्मक कार्यवाही की अनुशंसा की गई। जनता दरबार में पूर्व से लंबित 6 मामले शनिवार को प्राप्त हुए 4 मामलों सहित कुल 10 मामलों पर सुनवाई की गई। स्वामित्व संबंधित मामले में सुनवाई करते हुए 5 मामलों का निपटारा पेश किए गए साक्ष्य एवं दोनों पक्ष की सहमति से कर दिया गया। अंचलाधिकारी स्नेहा सत्यम ने जानकारी देते हुए बताया की चार नये मामले सहित 10मामलों की सुनवाई के दौरान पांच मामले का निपटारा आपसी सहमति से कर दिया गया। शेष मामलों में एक पक्ष के अनुपस्थित रहने तथा दस्तावेज के अभाव की वजह से मामले को अगले जनता दरबार के लिए अग्रेषित कर दिया गया है।

केंद्रीय नागर विमानन मंत्री से मिले सांसद, ज्ञापन सौंप केंद्र सरकार से वादा पूरा करने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । सांसद संतोष कुशवाहा दिल्ली में केंद्रीय नागरिक विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से मिलकर ज्ञापन सौंपा और कहा कि बिहार सरकार ने 30 मई को हुई कैबिनेट की बैठक में एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया और नागरिक विमानन मंत्रालय के उन सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया है जिससे पूर्णिया एयरपोर्ट से नागरिक विमान सेवा आरम्भ हो सके। इसके तहत न केवल 15 एकड़ अतिरिक्त भूमि उपलब्ध कराने की सहमति दी गई है बल्कि पूर्णिया हवाई अड्डा पर सिविल इन्क्लेव के निर्माण के लिए एएआई और राज्य सरकार के बीच एमओयू की स्वीकृति भी दे दी गई है। इतना ही नही राज्य सरकार एयरपोर्ट से फोर लेन कनेक्टिविटी, बिजली, पानी उपलब्ध कराएगी और एयरपोर्ट को शहरी क्षेत्र के मास्टर प्लान में भी शामिल किया जाएगा। सांसद ने केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया को अपने द्वारा लिखे गए दो पत्रों और उनके द्वारा दिए गए जवाब का हवाला देते हुए कहा कि आपसे अनुरोध है कि बिहार सरकार द्वारा मंत्रिपरिषद की बैठक में एयरपोर्ट के बाबत लिए गए निर्णय के आलोक में पूर्णिया वासियों की चिर-प्रतीक्षित मांगों को पूरा करने के लिए बिना बिलम्ब कवायद आरम्भ किया जाय।राज्य सरकार अपना वादा पूरा कर चुकी है अब वादा पूरा करने की जिम्मेवारी केंद्र सरकार की है। गौरतलब है कि सांसद श्री कुशवाहा द्वारा 22 दिसंबर 22 को लिखे पत्र के जवाब में केंद्रीय मंत्री ने लिखा था कि विमान सेवा आरम्भ करने के लिए राज्य सरकार को अतिरिक्त 15 एकड़ जमीन उपलब्ध कराना होगा और एनएच कनेक्टिविटी के लिए भी ठोस आश्वासन देना होगा।

वहीं सांसद के 16 मार्च 23 के पत्र के जवाब में 29 मार्च को केंद्रीय मंत्री ने कहा था कि बिहार सरकार ने पूर्णिया हवाई अड्डा को उड़ान -05 में शामिल करने का अनुरोध किया है जो विचाराधीन है। जवाब में केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने तीन महीने के अंदर डीपीआर तैयार करवाकर सिविल इन्क्लेव का निर्माण आरम्भ कराने पर सहमति जताते हुए उड़ान-05 में बोली लगाने की प्रक्रिया आरम्भ करने का भी आश्वासन दिया है। सांसद श्री कुशवाहा ने कहा कि अगर निर्धारित समय सीमा में केंद्रीय मंत्री के आश्वासन को मूर्त रूप नही दिया गया तो एयरपोर्ट की निर्णायक लड़ाई पूर्णिया की सड़कों पर लड़ी जाएगी।कहा कि हम काम करने में यकीं करते हैं, खबरों में बने रहना हमारी प्राथमिकता नही है। पूर्णिया एयरपोर्ट के लिए वे लगातार सदन के पटल पर आवाज उठाते रहे, प्रधानमंत्री से दो बार और आधे दर्जन बार केंद्रीय मंत्री से मिले, लगातार पत्राचार करते रहे, मुख्यमंत्री से एयरपोर्ट के मुद्दे पर विशेष रुप से मिलकर तीन बार आग्रह किया, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता है।जिसका सुखद नतीजा आज सबके सामने है। कहा कि कुछ लोग एयरपोर्ट के मुद्दे को राजनीतिक रंग देने की कोशिश करते रहे, राजनीतिक पुलाव भी पकाते रहे, ऐसे लोग जान लें कि पूर्णिया के विकास के प्रति मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हमेशा संजीदा रहे हैं और इस बार भी एयरपोर्ट मुद्दे पर उन्होंने यह साबित भी कर दिया है। आने वाले 05 वर्षों में नीतीश और तेजश्वी के नेतृव में बढ़ते बिहार का पूर्णिया झण्डाबरदार होगा यह तय है।

अगवा मामले में युवा लोजपा जिला अध्यक्ष सहित चार को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पूर्णिया । कार में मामूली स्क्रैच लगने पर राह चलते युवक के साथ मारपीट करने और फिर जबरन उसे अगवा कर फौरौती मांगे जाने के मामले में युवा लोजपा रामविलास की पार्टी के जिलाध्यक्ष प्रशांत झा और उसके 4 दोस्तों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने काले कलर की उस हुंडई क्रेटा कार को भी बरामद किया है, जिसपर लोजपा रामविलास की पार्टी का बोर्ड भी लगा है। घटना गुरुवार देर रात की। पकड़े गए लोजपा (रामविलास) के युवा जिलाध्यक्ष के दोस्तों में दो अपराधी भी शामिल थे। इसमें एक स्मैक स्मगलिंग के मामले लंबे समय से फरार था। मामला शहर के सहायक खजांची थाना क्षेत्र के लाइन बाजार के कुंडी पूल का है। अगवा किए गए युवक की पहचान दिलवर रजा के रूप में हुई है। जबकि पकड़े हुए युवकों में शहर के सहायक खजांची थाना के नवरतन हाता निवासी युवा लोजपा रामविलास की पार्टी के जिलाध्यक्ष प्रशांत झा, बाड़ीहाट का हर्ष विशाल, मधुबनी टीओपी निवासी राजा कुमार और सिपाही टोला निवासी अंकित आनंद उर्फ नयन सिंह के रूप में हुई है। इस मामले में पुलिस ने अपराधियों को भी दबोचा है। नेवालाल चौक निवासी मनीष कुमार सोनू पेशेवर क्रिमिनल है। जबकि नयन सिंह पर स्मैक की तस्करी के मामले में के.नगर थाने में मामला दर्ज है। पुलिस को लंबे समय से फरार नयन सिंह

संक्षिप्त खबरें

गया नेहरू युवा केंद्र द्वारा मनाया गया विश्व साइकिल दिवस

गया। युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार नेहरू युवा केंद्र गया एवं शंकर क्लासेस के संयुक्त तत्वाधान में विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर एक रैली कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें सैकड़ों युवक-युवतियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया यह कार्यक्रम की अध्यक्षता जितेंद्र देव गुप्ता उर्फ करण गुप्ता ने किया एवं मुख्य अतिथि शंकर क्लासेस के डायरेक्टर रविशंकर मिश्रा एवं हरिशंकर मिश्रा, नेहरू युवा केंद्र के लेखापाल सुरेंद्र कुमार तिवारी सर ने हरी झंडी दिखाकर रैली का विधिवत रवाना किया और पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने में अपना इस रैली के माध्यम से दिया दिया गया है।

भोजपुर में अज्ञात वाहन ने बाइक सवार युवक को मारी टक्कर, मौत

आरा। भोजपुर जिले के कृष्णागढ़ थाना क्षेत्र के सरैया बाजार स्थित बजाज शोरूम के समीप हुए सड़क हादसे में जख्मी युवक की मौत हो गई। इलाज के दौरान पटना के लिए अस्पताल में शनिवार की सुबह उसने दम तोड़ दिया। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी का आलम रहा। जानकारी के अनुसार मृतक कृष्णागढ़ थाना क्षेत्र के गुंडी वैस टोला गांव निवासी स्व.मंजी सिंह का 27 वर्षीय पुत्र गुलशन कुमार सिंह एवं वह पेशे से मजदूर था। इधर मृतक के पड़ोसी अभिषेक कुमार ने बताया कि बीते मंगलवार की शाम वह पत्नी सुषमा कुमारी को बाइक से उसके मायके छोड़ने के लिए आरा आया था। मंगलवार की रात जब वह बाइक से वापस अपने गांव लौट रहा था। उसी दौरान सरैया बाजार स्थित बजाज शोरूम के समीप किसी अज्ञात वाहन ने उसके बाइक में पीछे से टक्कर मार दी। जिससे वह बाइक से गिर पड़ा और गंभीर रूप से जख्मी हो गया। इसके बाद सोशल मीडिया पर वायरल फोटो के द्वारा परिजनों को इसकी सूचना मिली। सूचना पाकर परिजन घटनास्थल पर पहुंचे और उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले आए। जहां से प्राथमिक उपचार करने के बाद उसकी हालत को चिंताजनक देखकर पटना रेफर कर दिया गया था।

भोजपुर में आम तोड़ने के विवाद को लेकर दो दोस्तों की पिटाई

आरा। भोजपुर जिले के उदवंतनगर थाना क्षेत्र के गजराजगंज ओपी अंतर्गत बामपाली गांव में शुक्रवार की रात पेड़ से आम तोड़ने के विवाद को लेकर दो दोस्तों की लाठी-डंडों से जमकर पिटाई कर दी गई। इससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। इसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उनका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार जख्मियों में उदवंतनगर थाना क्षेत्र के गजराजगंज ओपी अंतर्गत बामपाली गांव निवासी महामाया यादव का 28 वर्षीय पुत्र हाकिम कुमार एवं उसी गांव के निवासी दशरथ यादव का 30 वर्षीय पुत्र मनोज कुमार शामिल है एवं दोनों दोस्त है। इधर मनोज कुमार ने बताया कि शुक्रवार की रात वह बाजार से वापस घर लौट रहा था। तभी उसने देखा कि दो लड़के उसके खेत में लगे आम के पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ रहे हैं। तभी उसने उन्हें पेड़ से आम तोड़ने से मना किया। जिसको लेकर दोनों पक्षों के बीच तीखी नोकझोंक हुई। इसके बाद उक्त लड़कों द्वारा गांव के ही एक व्यक्ति को फोन कर बुलाया गया। जिसके बाद उक्त व्यक्ति अपने चार अन्य साथियों के साथ वहां आया और लाठी-डंडो से उसे पीटने लगा। उसे पीटता देख जब उसका दोस्त हाकिम कुमार उसे बचाने गया तो उक्त लोगों ने लाठी-डंडों से उसकी भी जमकर पिटाई कर दी।

रेलवे लाईन लाओ अरवल जिला का स्वाभिमान बढाओ:मनोज यादव

अरवल। प्रधानमंत्री के नाम से पोस्टकार्ड भेजो अभियान हस्ताक्षर अभियान जारी रखते हुए मुख्य संयोजक मनोज सिंह यादव अरवल केप्रखंड परिसर पर हस्ताक्षर अभियान कराते सैकड़ों लोगों ने पोस्टकार्ड भेजो अभियान से प्रधानमंत्री को बिहटा अरवल औरंगाबाद रेलवे लाइन में प्रकलन के अनुसार राशि एवं जमीन अधिग्रहण का मांग करते हुए 1 लाख पोस्टकार्ड हस्ताक्षर करा कर अरवल जिला के जनता से प्रधानमंत्री को भेजने का लक्ष्य एवं 1 लाख लोगों से हस्ताक्षर अभियान भी करा कर प्रधानमंत्री एवं रेल मंत्री से अनुरोध पत्र भेजा जा रहा है की अति शीघ्र 3900 करोड़ राशि दिया जाए-- मनोज सिंह यादव मुख्य संयोजक युवा राजद जिलाध्यक्ष प्रवीण कुमार प्रधान महासचिव मोहम्मद सबा करीम अनुसूचित जाति जिला अध्यक्ष उमेश पासवान बसपा प्रखंड अध्यक्ष मंटू यादव चंदन चंद्रवंशी मुलायम यादव एवं दर्जनों लोग की उपस्थिति में हस्ताक्षर अभियान एवं पोस्टकार्ड भेजो अभियान चलाया गया मनोज सिंह यादव मुख्य संयोजक रेलवे लाईन सघर्ष समिति।

हीटवेब से बचाव को लेकर स्वास्थ्य विभाग व संबंधित विभाग को जिलाधिकारी ने दिए निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

गया।जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने हीटवेव से बचाव एवं अत्यधिक गर्मी को देखते हुए सभी पीएचसी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, वरीय चिकित्सक, पारा मेडिकल स्टाफ, एएनएम, आशा सहित अन्य प्रखंड एवं पंचायत स्तर के स्वास्थ्य विभाग से जुड़े तमाम पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक करते हुए कई आवश्यक निर्देश दिए हैं। जिला पदाधिकारी ने कहा कि मौसम विज्ञान के पूवार्नुमान के आलोक में अगले 15 दिनों तक गर्मी से कोई भी राहत नहीं है। टेंपरेचर में बढ़ोतरी होने की उम्मीद जताया है। इसके साथ ही हीटवेव चलने का पूरी संभावना है इसे लेकर स्वास्थ्य संबंधित सभी व्यवस्थाएं को सभी पीएससी दुरुस्त रखें।

आपदा विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग के हीट वेब से संबंधित जो २.ङ्क.स्र. है उसका पूरी तरह से पालन कराना सुनिश्चित करें। सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में पेयजल की पूरी व्यवस्था रखें यदि किसी कारण से पेयजल व्यवस्था बंद है तो उसे 24 घंटे के अंदर चालू करवाना सुनिश्चित करें। सभी पीएचसी में वाटर कूलर हर हाल में रखें। हीटवेव से आने वाले मरीजों के लिए बेड आरक्षित रखें। जिले के सभी पंचायतों में अलग से दो-दो एंबुलेंस की व्यवस्था की गई है। इसकी मोबाइल नंबर सहित सूची सभी संबंधित प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी हर हाल में रखें। अगले दो दिनों के अंदर सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी एंबुलेंस मालिकों को बुलाकर बैठक करते हुए यह सुनिश्चित कराएं कि यदि हीटवेव के मामला आने पर एंबुलेंस मालिक तुरंत रेस्पांड करें। साथ ही संबंधित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का दायित्व होगा कि हीट वेब से ग्रसित मरीजों का टाइमली ट्रीटमेंट प्रारंभ करें। सभी चिकित्सक पूरी तत्परता से अपनी ड्यूटी को पूरा करें। अगले 1 माह तक पूरी अलर्ट मोड में सभी स्वास्थ्य व्यवस्था रहे हैं।जिला पदाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिया कि सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी अगले 1 माह तक हर हाल में अपने मुख्यालय में बने रहें। हीटवेव से ग्रसित यदि कोई मरीज प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती होते हैं, उस दौरान यदि आप की उपस्थिति नहीं पाई जाते है तो उस स्थिति में आप पर कठोर कार्यवाही की जाएगी।सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डीप फ्रीजर पूरी तरह से चालू रखें साथ ही आइस पैक की पूरी व्यवस्था रखें, जो भी आवश्यक दवाएं हैं उसे पूरी मुकम्मल व्यवस्था रखें। इस वर्ष 2019 में हीटवेव की घटना को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष पूरी सजग एवं जागरूक रहें हैं।

जिला पदाधिकारी ने सिविल सर्जन को निर्देश दिया है कि जिले के सभी सरकारी अस्पतालों का अच्छे तरीके से निरीक्षण करावे एवं हीटवेव से संबंधित जो सोयोप है उनके अनुरूप सभी तैयारियां सुनिश्चित करावे।सभी एएनएम अपने क्षेत्र में प्याऊ की पूरी व्यवस्था रखें।

जिला पदाधिकारी ने जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया कि जिले के सभी प्राइवेट स्कूल एवं कोचिंग संस्थान हर हाल में सुबह 9:30 बजे के बाद पठन-पाठन कार्य बंद करवाना सुनिश्चित करें।जिला पदाधिकारी ने जिले वासियों से अपील किया है कि अत्याधिक गर्मी एवं हीटवेव को देखते हुए सभी मोटरसाइकिल चालक एवं अन्य लोग दोपहर के दौरान यात्रा करने दो पहिया वाहन चलाने में परहेज करें। आम जनों से अपील किया है कि स्वास्थ्य विभाग तथा आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा हीटवेव से बचाओ संबंधित जारी किए गए एडवाइजरी का पूरी तरह से पालन करें।

संपूर्ण क्रांति दिवस 5 जून को युवा राजद का महा धरना ऐतिहासिक होगा: जय प्रकाश

प्रात : किरण संवाददाता

गया।युवा राजद के वरिष्ठ नेता जय प्रकाश शर्मा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि युवा राजद का 5 जून संपूर्ण क्रांति दिवस को होने वाला महा धरना ऐतिहासिक होगा। जय प्रकाश शर्मा ने बताया कि जिस तरह से देश में बेरोजगारी चरम पर है करोड़ों की संख्या में युवा बेरोजगार हैं और देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2 करोड युवाओं को प्रतिवर्ष रोजगार देने की बात कह कर ठगने का काम किया है, देश में महंगाई चरम पर है पेट्रोल डीजल रसोई गैस सहित अन्य खदान सामग्री की कीमत सातवें आसमान पर है, देश में आजादी के बाद नरेंद्र मोदी की सरकार ने चावल गेहूं पर भी टैक्स लगाकर गरीबों के साथ नाइंसाफी किया है, नयी शिक्षा नीति 2020 लाकर केंद्र की सरकार देश के गरीबों पिछड़ों दलितों को पढ़ने से रोकना चाहती है इन्हीं बातों के विरोध में युवा राष्ट्रीय जनता दल गया के गांधी मैदान गेट नंबर 5 धरना स्थल पर विशाल महा धरना देने जा रही है जिसमें सैकड़ों की संख्या में युवा भाग लेंगे।

जिस तरह से केंद्र की सरकार देश के 65 प्रतिशत युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है इसे राष्ट्रीय जनता दल बर्दाश्त नहीं करेगा और बिहार प्रदेश के युवा प्रदेश के तमाम जिला मुख्यालय पर विशाल धरना प्रदर्शन कर 2024 में नरेंद्र मोदी की सरकार को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेंगे।

बिहार विरासत विकास समिति के सभापति ने जिला स्थित विभिन्न तीर्थ स्थलों का किया भ्रमण

आरा। बिहार विरासत विकास समिति के सभापति प्रेम कुमार द्वारा भोजपुर जिला स्थित तीर्थ स्थलों यथा- श्री मैना सुंदर भवन दिगंबर जैन धर्मशाला, श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं मां अरण्य देवी का भ्रमण दर्शन एवं पूजा अर्चना किए तथा बिजली, पानी, साफ- सफाई, सुरक्षा, भावनो के रखरखाव इत्यादि के बारे में जानकारी ली।

दिगंबर जैन धर्मशाला के अध्यक्ष द्वारा माननीय सभापति को बताया गया कि या धर्मशाला 150 वर्ष पुराना है तथा इसकी साफ-सफाई आरा नगर निगम द्वारा की जाती है तथा बिजली की कोई समस्या नहीं है प्रतिदिन 10 से 15 की संख्या में लोग धर्मशाला में ठहरते हैं। 7 करोड़ की लागत से धरहरा से स्टेशन तक सड़क निर्माण का कार्य किया जा रहा है जिससे श्रद्धालुओं की संख्या वृद्धि होगी। पार्श्वनाथ जैन मंदिर के अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि यह मंदिर 48 वर्ष पुराना है तथा नीचे में नई मूर्ति तथा ऊपरी तल पर पुराने मूर्ति की स्थापना की गई है। मां अरण्य देवी मंदिर के पुजारी मनोज बाबा द्वारा बताया गया कि यह मंदिर बहुत पुराना है, तथा मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ है, जो ट्रस्ट के माध्यम किया जा रहा है। भ्रमण के दौरान पवन कुमार यादव, नगर आयुक्त आरा नगर निगम, सहायक अभियंता पथ निर्माण विभाग, आशुतोष कुमार सामान्य शाखा, विवेक कुमार सामान्य शाखा सहित कई पदाधिकारी ओम गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मिशन लाइफ कार्यक्रम के तहत पखवाड़ा का हुआ समापन

प्रात : किरण संवाददाता

गया। युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार नेहरू युवा केंद्र गया एवं जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान डाइट गया के संयुक्त तत्वाधान में जितेंद्र देव गुप्ता उर्फ करण गुप्ता की अध्यक्षता में मिशन लाइफ कार्यक्रम के तहत पखवाड़ा सप्ताह मनाया जा रहा था। जिसमें विभिन्न विभिन्न गतिविधियों पर प्रतिदिन कार्यक्रम चलाया जा रहा था जिसमें साफ सफाई अभियान एवं दीवाल पेंटिंग ,रैली, निबंध लेखन , योगा साइकिल रैली ,पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिसका आज समापन समारोह मनाया गया जिसमें सैकड़ों बच्चे बहुत ही उत्साहित होकर इस कार्यक्रम में सहयोग लिया और अपना योगदान दिया है इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वार्ड नंबर 7 के वार्ड पार्षद चुनु खान , प्राचार्य अजय कुमार शुक्ला नेहरू युवा केंद्र के लेखापाल सुरेंद्र कुमार तिवारी महिला पर्यवेक्षिका स्मृति कुमारी , गणेश सर ,चंद्रशेखर कुमार ने दीप प्रज्वलित कर इस कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया एवं सभी अतिथियों को अंगवस्त्र पौधा देखकर सम्मानित भी किया गया इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आनंद सर नेहरू युवा केंद्र गया से विशाल कुमार एवं सभी शिक्षक ,युवा -युवतियों का अहम योगदान रहा है।

विश्व साइकिल दिवस पर निकाली गई साइकिल रैली

प्रात : किरण संवाददाता

आरा । "विश्व साइकिल दिवस" के अवसर पर साइकिल रैली निकाली गई। इस रैली का विधिवत उद्घाटन डी. डी. सी., भोजपुर श्री विक्रम वीरकर आई.ए.स. , दीप प्रज्वलित कर किया एवं रैली को हरी झंडी दिखाकर समाहरणालय से रवाना किया और डी. डी. साहब खुद साइकिल रैली में भाग लिया। साइकिल रैली समाहरणालय से रवाना हो कर महावीर टोला, नवादा चौक, नवादा थाना, रेलवे स्टेशन, कतीरा मोड़, पकरी चौक, जज कोठी होते हुए पुनः समाहरणालय को पहुंची। सभी प्रतिभागियों को अल्पाहार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि पूरे विश्व में 3 जून को "विश्व साइकिल दिवस" मनाया जाता है। इस वर्ष के लिए थीम घोषित किया गया - "साइकिल फॉर हेल्थ" । साइकिलिंग हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत कारगर साबित होती है, इससे शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहता है साथ ही साथ साइकिलिंग हमारे पर्यावरण की दृष्टि से बहुत उपयोगी है, यह वातावरण के डीजल व पेट्रोल के पौलुशन को कम करता है। नियमित साइकिलिंग करने से ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, हृदयाघात व सांस फुलने जैसी बीमारियों से हमें निजात दिलाता है। लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न हो, साइकिलिंग का बढ़ावा हो, इसी दृष्टिकोण से साइकिल रैली के माध्यम से संदेश देने की शुरूआत इसी वर्ष से की गई है। इस कार्यक्रम को सफलीभूत करने में डी. डी. सी. भोजपुर श्री विक्रम वीरकर की अहम् भूमिका रही, साथ ही साथ डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा, जिला गैर-संचारी रोग पदाधिकारी, डॉ. के. एन.सिन्हा, ए.सी.एम.ओ. डॉ ए. अहमद सी.डी.ओ. भोजपुर के अतिरिक्त होमी भाभा की पूरी टीम, स्वास्थ्य कर्मी एवं एन. सी. सी. के कैडेट ने बढ़ चढ़ कर अपना योगदान दिया।

बारात में हर्ष फायरिंग के दौरान गोली लगने से युवक की मौत

आरा। भोजपुर में हर्ष फायरिंग का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। बल्कि यह सिलसिला लगातार बढ़ता ही जा रहा है। आए दिन शादी, तिलक एवं अन्य पार्टी समारोह में लोग अपने हाथ में हथियार लेकर लहराते एवं हर्ष फायरिंग करते नजर आ रहे हैं। इस हर्ष फायरिंग के कारण हर रोज किसी न किसी व्यक्ति की जान चली जा रही है और कई लोग जख्मी भी हो चुके हैं। लेकिन इसके बावजूद लोग अपने इस रवैया से बाज नहीं आ रहे हैं। ताजा मामला जिले के संदेश थाना क्षेत्र के चेता टोला गांव में शुक्रवार की देर रात बारात में हर्ष फायरिंग के दौरान गोली लगने से एक युवक की मौत हो गई। इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल आने के दौरान उसने रास्ते में दम तोड़ दिया। मृतक को गोली दाहिने साइड सीने में लगी है। घटना बाद बारातियों एवं सरातियो के बीच भगदड़ मच गई। सभी लोग इधर से उधर दौड़ कर भागने लगे। देखते ही देखते गांव एवं आसपास के इलाके में सन्नाटा पसर गया। उधर घटना के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। वहीं घटना की सूचना मिलते ही संदेश थाना इंचार्ज अवधेश कुमार अपने दल-बल के साथ घटनास्थल पर पहुंची मामले की छानबीन में जुट गए हैं।

स्व पूर्व रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडिस की जंयती मनाई गई

मंत्रालय में किए योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता : अभय कुशवाहा

प्रात : किरण संवाददाता

गया।जदयू कार्यालय गया में जिला अध्यक्ष अभय कुशवाहा के अध्यक्षता में प्रखर समाजवादी नेता पूर्व रक्षा मंत्री स्व0 जार्ज फर्नांडिस का जयंती धूम धाम से मनाई गई है। उनके जीवनी पर प्रकाश डालते हुए जिला अध्यक्ष अभय कुशवाहा ने कहा की जार्ज साहब बहुत बड़े समाजवादी नेता थे, उनके रक्षा मंत्रालय में किए योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। जार्ज साहब जमीनी नेता थे, उनका देश के लिए किए योगदान को हमेशा याद रखा जायेगा। आज उन्हीं के नक्शे कदम पर चलते हुए पार्टी के सर्वमान नेता बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जीता जागता उदाहरण हैं, उन्होंने जो देश और बिहार के लिए जितना काम किया है देश के लिए रोल मॉडल पेश किया है। इस जयंती समारोह के अवसर पर प्रदेश सचिव,अरुण राव, सोनम दास, प्रवक्ता अवध बिहारी पटेल,अरविंद सिंह, आसिफ जफर,जूली मेहता, रिंकू कुमारी, मिताम्बरा होहड़े,धनंजय शर्मा, राजेश शर्मा,कैलाश पासवान, अजीत शर्मा,शहजाद साह,जितेंद्र दास,जितेंद्र पंडित,कुमार गौरव,दिवाकर कुमार, रामबली बिंद एवं पार्टी के कई साथी उपस्थित थे।

प्रेम कुमार ने जिला अतिथि गृह में पदाधिकारियों के साथ की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

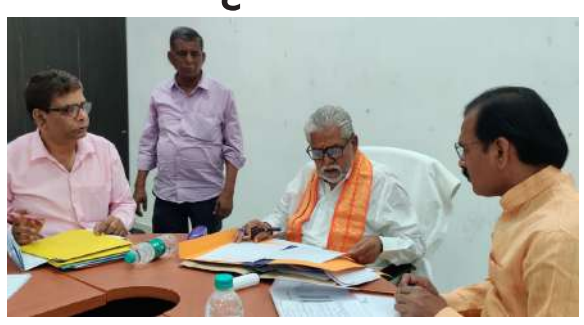

आरा। बिहार विरासत विकास समिति के सभापति प्रेम कुमार द्वारा जिला अतिथि गृह आरा में जिला के पदाधिकारियों के साथ बैठक किए। बैठक में भोजपुर जिला अंतर्गत पर्यटन स्थलों को मार्गीय सुविधाओं का उन्नयन एवं प्रोत्साहन हेतु विभागों द्वारा क्या क्या कार्यवाही की गई और विगत 3 वर्षो मे कितना खर्च किया गया इसकी समीक्षा माननीय सभापति द्वारा किया गया। जिले में आधारभूत संरचना, युवा रोजगार, सरकारी नियोजन, महिला सशक्तिकरण इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त किया गया। विभागों में विगत 3 वर्षो से कितनी योजनाएं एवं परियोजनाएं किस उद्देश्य से शुरू की गई कब समाप्त करना था कब पूर्ण हुआ तथा उक्त योजनाओं में कितनी योजनाएं पुनरीक्षित की गई इसके कारण क्या थे तथा योजनावार वास्तविक व्यय क्या हुआ इसकी समीक्षा विभागीय पदाधिकारियों से की गई। सभापति द्वारा काली मंदिर बखोरापुर, शहीद स्मारक लसाढी, बेलाउर सूर्य मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर मसाढ, बाबू जगजीवन राम समाधि स्थल चंदवा, कुड़वा शिव मंदिर, महथिन माई मंदिर बिहिया, सूर्य मंदिर जमुआओं, वीर कुंवर सिंह का जन्म स्थल दिलीपपुर गढ़, शिवपुर घाट, सोन नदी घाट, स्वामी दिगंबर जैन मंदिर के बारे में अधिकारियों से जानकारी प्राप्त किए। बैठक में पवन कुमार यादव, विधायक कहलगांव, नगर आयुक्त, आरा नगर निगम, अपर समाहर्ता भोजपुर, जिला पंचायत राज पदाधिकारी भोजपुर ,डीपीओ एसएसए , जिला कृषि पदाधिकारी भोजपुर ,सिविल सर्जन भोजपुर/ सहायक अभियंता पथ निर्माण विभाग, कार्यपालक अभियंता एस ए ई ओ , अंचलाधिकारी उदवंतनगर/ अंचलाधिकारी संदेश सहित जिले के कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

बिहार सरकार शिक्षकों के साथ वादाखिलाफी कर रही है:जीवन कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। माध्यमिक शिक्षक संघ द्वारा लगातार चल रहे धरना को समर्थन देने के लिए विधान पार्षद जीवन कुमार पहुंच कर सरकार के वादाओ को याद कराते हुए उन्हे वादाखिलाफी के लिए लताड़ा। विधान पार्षद जीवन कुमार ने धरना मे शिक्षको को संबोधित करते हुए कहा कि लंबे समय से नियोजित शिक्षक व पुस्तकालयाध्यक्ष शिक्षकों की मांग रही है कि हमें राज्य कर्मी का मान्यता दी जाए। नीतीश कुमार चुनाव के दौरान ही कहा था कि हम नियोजित शिक्षकों को राज्य कर्मी का दर्जा देंगे और सुपर मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा था कि हम बिहार के 450000 शिक्षकों को चुनाव जीतने के बाद पहले कैबिनेट में ही राज्य कर्मी का दर्जा देंगे लेकिन चुनाव जीतने के बाद सुपर सीएम अपने वादा को भूल गए और वादाखिलाफी पर आ गए। बिहार की जनता और शिक्षक समाज नीतीश जी और तेजस्वी की वादाखिलाफी को देख रही है और यदि आपने शिक्षक समाज को राज्य कर्मी की मांग को नहीं मानी तो बिहार की जनता और शिक्षक समाज आपके ईट से ईट बजा देंगे।

उन्होंने कहा कि पूरे भारत में हमने पहला मुख्यमंत्री देखा है जो झूठ के आधार पर सरकार चलाती है। हाल ही में मुख्यमंत्री ने कहा था कि बीपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा में सभी नियोजित शिक्षक भाग लेंगे और राज्य कर्मी का दर्जा पाएंगे। हाल ही में लाई गई बिहार अध्यापक नियमावली 2023 के बारे में कहा था कि हमें सभी घटक दलों से राय लेकर बीपीएससी परीक्षा का यह नियमावली लाया है लेकिन दूसरे दिन बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने उसका खंडन करते हुए कहा था कि माननीय मुख्यमंत्री जी इस पर कोई राय विचार किसी भी घटक दल से नहीं किया है।

उन्होंने महागठबंधन दल के घटक दलों को चुनौती देते हुए कहा कि महागठबंधन दल के माले और अन्य घटक दलों के नेता शिक्षकों के मांग पर अपना समर्थन में बयान देते रहते हैं। यदि सही में राजनीति से ऊपर उठकर शिक्षकों के राज्य कर्मी की मांग में खड़े हैं तो हिम्मत कर मीडिया और जनता के सामने शिक्षकों के पक्ष में अपना समर्थन वापस ले।

उड़ीसा मे हुए रेल हादसे मे मृत यात्रियों के लिए भाजपा ने शोक सभा का किया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी भोजपुर जिलाध्यक्ष दुर्गा राज की अध्यक्षता मे कल हुए रेल हादसे मे मृत यात्रियों के प्रति शोक सभा का आयोजन किया गया।शोक सभा मे मृत आत्माओं के प्रति दो मिनट का मौन रखकर शोक संवेदना ब्यक्त की गई। और शोक संतृप्त परिवार के प्रति सहानुभूति ब्यक्त की गई।

जिलाध्यक्ष ने रेल हादसे मे गंभीर रूप से घायल और आहत यात्रियों के प्रति भी अपनी सहानुभूति देते हुए कहा कि रेल हादसे मे घायल यात्रियों को केन्द्र सरकार और सरकारी एंजेंसियों द्वारा लगातार बचाव का कार्य किया जा रहा है।घायलो को उचित इलाज चल रहा है और सरकार द्वारा भी मुआवजे की घोषणा कर दी गई है।घायल यात्रियों के प्रति भी भारतीय जनता पार्टी सहानुभूति रखते हुए उन्हे जल्द स्वस्थ होने की कामना करती है।

शोकसभा मे बिहार सरकार के पूर्व मंत्री प्रेम कुमार, विधायक पवन यादव, विजय सिंह,हरेन्द्र पांडेय,सीडी शर्मा,डाँ. प्रेम रंजन चतुवेर्दी अखिलानंद ओझा, सतीश भट्ट,वंदना राजवंशी,राकेश सिंह,पुनम कुशवाहा,संतोष चंद्रवंशी, संजय कुमार सिंह,राजेश सिंह,धीरज सिंह,दीपक सिंह,हरेराम चंद्रवंशी, रितुराज,विभु जैन,राकेश रंजन पुतुल,मुकुल सिंह,हरेन्द्र सिंह,निशांत सिंह सेंगर,आदि कार्यकर्ता थे।

सरकारी नल पर पानी भरने के विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच मारपीट व फायरिंग

आरा। शहर से सटे मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बसंतपुर गांव में गुरुवार की देर रात सरकारी नल पर पानी भरने के विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच मारपीट व फायरिंग हुई। जिसमें फायरिंग के दौरान छर्रा लगने से एक युवक जख्मी हो गया। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार जख्मी युवक मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बसंतपुर गांव निवासी भिखारी सिंह का 25 वर्षीय पुत्र गोलू सिंह हैं। इधर गोलू सिंह ने बताया कि गुरुवार की सुबह सरकारी नल पर पानी भरने के विवाद को लेकर उसकी मां एवं पड़ोसी की महिलाओं से कहासुनी हुई थी। लेकिन उस समय बात खत्म हो गई थी। इसके बाद उसी विवाद ने गुरुवार की रात एक बार फिर तूल पकड़ लिया। जिसको लेकर दोनों पक्षों के बीच तीखी नोकझोंक हुई।जिसके बाद दूसरे पक्ष के एक युवक के द्वारा फायरिंग कर दी गई। जिसमें फायरिंग के दौरान उसे छर्रा लग गया। जिसके बाद उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर जख्मी युवक गोलू सिंह ने गांव के ही सोनू सिंह पर फायरिंग करने एवं फायरिंग के दौरान उसे छर्रा लगने का उस पर आरोप लगाया है। हालांकि इस मामले में अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। बहरहाल पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

मनरेगा कार्यों में हो रही धांधली के जनप्रतिनिधियों ने जताई नाराजगी, दिए आंदोलन की चेतावनी

प्रात : किरण संवाददाता

चरपोखरी।प्रखंड मनरेगा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न पंचायतों में योजना में हो रही अनियमितता, मनरेगा कर्मियों के मनमानी एवं कमीशन खोरी के खिलाफ प्रखंड के लोगों में अब आक्रोश पनपने लगा है। जहां एक तरफ कर्मी कार्यालय में लेटलतीफी से लोगों की परेशानी होते है, वहीं पंचायतों में संचालित योजना में घोर अनियमितता बरती जा रही है। इसको ले राष्ट्रीय जनता दल भाकपा माले, जदयू सहित कई राजनीतिक दल के नेताओं ने प्रखंड में चल रहे मनरेगा कार्य में हो रही अनियमितता के खिलाफ आंदोलन करने का भी चेतावनी दिया है। राजद नेता सतनरायण यादव , भाकपा माले नेता रामेश्वर प्रसाद सिंह ने कहा कि प्रखंड के मनरेगा द्वारा संचालित योजनाओं में घोर अनियमितता बरती जा रही है। कई योजनाओं में सिर्फ घास निकाल कर राशि की निकासी कर ली गई है। जिसकी जांच वरीय पदाधिकारी से मिलकर कराई जाएगी। राजद नेता हरेंद्र यादव एवं जदयू के प्रखंड अध्यक्ष अशोक पांडे उर्फ चिंटू पांडे ने कहा कि मनरेगा कार्यालय में कोई भी कर्मचारी समय से नहीं पहुंचते हैं । जिसको लेकर स्थानीय लोगों को भारी परेशानी होती है। मनरेगा पदाधिकारी के कार्यशैली से सरकार की बदनामी हो रही है । ऐसे पदाधिकारी जो सरकार को बदनाम करते हैं और अपने कार्य में घोर अनियमितता बरत रहे हैं। इनके विरूद्ध चरणबद्ध आंदोलन किया जाएगा। जिला अधिकारी एवं जिला उप विकास आयुक्त से मिलकर प्रखंड में चल रही योजनाओं में अनियमितता की जांच कराई जाएगी एवं दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने की मांग की जाएगी।

पीएलआई और एफटीए से बढ़ेगा फार्मा कारोबार, देश में 22 से अधिक प्रकार के कच्चे माल का उत्पादन शुरू

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआइ) योजना और विभिन्न देशों के साथ हो रहे मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) की बदौलत फार्मा क्षेत्र का कारोबार अगले दो वर्षों में 70 अरब डालर तक पहुंच सकता है। इलेक्ट्रानिक के बाद फार्मा क्षेत्र के लिए पीएलआइ योजना की घोषणा की गई थी और उसका परिणाम अब दिखने लगा है।

फार्मा के निर्यात में दर्ज की गई 10.45 प्रतिशत की बढ़ोतरी

यही कारण है कि गत वित्त वर्ष 2022-23 में फार्मा का निर्यात चार प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 25.39 अरब डालर रहा है, जबकि दवा के कच्चे माल के आयात में वित्त वर्ष 22-23 में वित्त वर्ष 2021-22 के मुकाबले 1.5 प्रतिशत की गिरावट रही है। चालू वित्त वर्ष के पहले महीने अप्रैल में वस्तुओं के कुल निर्यात में वार्षिक आधार पर 12 प्रतिशत की गिरावट रही, लेकिन फार्मा के निर्यात में 10.45 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

दवा के कच्चे माल का उत्पादन घरेलू स्तर पर शुरू

फार्मा एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के पूर्व चेयरमैन दिनेश दुआ ने बताया कि सरकार की पीएलआइ स्कीम से दवा के कच्चे माल का उत्पादन घरेलू स्तर पर शुरू हो गया है। पिछले साल तक कच्चे माल के लिए पूरी तरह आयात पर निर्भर थे। उन्होंने कहा कि अभी घरेलू और निर्यात को मिलाकर फार्मा कारोबार 50 अरब डालर का है, जो अगले दो साल में आसानी से 70 अरब डालर तक पहुंच जाएगा।

चालू वित्त वर्ष 2023-24 में भी अन्य वस्तुओं के निर्यात में भले ही गिरावट की आशंका जाहिर की जा रही है, लेकिन फार्मा के निर्यात में इस वित्त वर्ष में 10 प्रतिशत तक का इजाफा हो सकता है। पीएलआइ योजना की मदद से 22 से अधिक बल्क ड्रग (कच्चे माल) का उत्पादन शुरू हो गया है और अगले एक साल में इस प्रकार के उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी होने की संभावना है।

आगमेंटेड नामक दवा के कच्चे माल का पूरी तरह से आयात किया जाता था, जो अब भारत में ही बनने लगा है। पेनिसिलिन का उत्पादन भी शुरू हो गया है। भारत में ही दवा के कच्चे माल का उत्पादन शुरू होने से आयात कम होने के साथ भारतीय दवा की लागत भी कम हो सकती है। दवा निर्माताओं का मानना है कि अगले दो साल में दवा निर्माण के लिए आयात पर निर्भरता खत्म होने के साथ निर्यात में भी बढ़ोतरी की बड़ी संभावना दिख रही है। आस्ट्रेलिया के साथ एफटीए से वहां का बाजार भी भारत के लिए खुल रहा है। इस साल कनाडा व ब्रिटेन के साथ भी एफटीए की पूरी संभावना है, जिसका लाभ भारतीय दवा उद्योग को मिल सकता है। तीन साल पहले फार्मा निर्यात 16 अरब डालर के करीब था, जो अब 25 अरब डालर को पार कर गया है।

भारत को विकल्प के रूप में देख रहे कई देश

विदेश व्यापार के जानकारों का कहना है कि इलेक्ट्रानिक क्षेत्र में पीएलआइ का असर पूरी तरह से दिखने लगा है। यही कारण है कि गत वित्त वर्ष में इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के निर्यात में 50 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी रही। फार्मा निर्यात में भी इस प्रकार की पूरी संभावना है क्योंकि दवा के कच्चे माल के लिए सभी देश चीन पर पूरी तरह से निर्भर रहना नहीं चाहते हैं और वे भारत को विकल्प के रूप में देख रहे हैं। इससे भारत के निर्यात में बढ़ोतरी होगी। हालांकि, दवा के कच्चे माल के निर्माण में बांग्लादेश व वियतनाम भी भारत को टक्कर दे सकते हैं।

प्रवेग लिमिटेड का वित्त वर्ष 23 का शुद्ध लाभ 132 प्रतिशत बढ़ा

अहमदाबाद, एजेंसी। भारतीय पर्यटन एवं हॉस्पिटैलिटी तथा इवेंट और प्रदर्शनी मैनेजमेंट इंडस्ट्रीज में एक विख्यात नाम,प्रवेग लिमिटेड (बीएसई ङ्क 531637) ने वित्त वर्ष 23 की चौथी तिमाही और वित्त वर्ष 23 के अपने ऑडिटेड वित्तीय परिणामों की रिपोर्ट दी है।

इस अवसर पर बोलते हुएकंपनी के चेयरमैन,श्री विष्णु पटेल ने कहा, ÷मैं सहर्ष आपकोवित्त वर्ष 23 के आपकी कंपनी के विशेष प्रदर्शन की जानकारी देता हूं। वर्ष के दौरान हमारी कंपनी उल्लेखनीय सीमाचिन्हों तक पहुंची है, साथ ही ट्रेवल उद्योग में हमारी उपस्थिति स्थापित कर रही है- हमने सफलतापूर्वकजनवरी 2023 में, हमारे मेहमानों को विशिष्ट और मनमोहक अनुभव ऑफर करते हुए वाराणसी में टेंट सिटी का ऑपरेशन शुरू किया। हमें दिऊ में घोघिया बीच पर टेंट सिटी के डेवलपमेंट, ऑपरेशन,मेंटेनेंस और मैनेजमेंट का मूल्यवान वर्क आर्डर प्राप्त करने का गौरव मिला है। तीन वर्ष की अवधि में हम रेस्टोरेंट और कॉन्फ्रेंस रूम के साथ न्यूनतम 35 टेंटों का निर्माण करेंगे। इसमें हमारी क्षमता में दर्शाए गए विश्वास के साथ 2 वर्ष के एक्सटेंशन की संभावना है। इसके अलावा हमने 15 मई, 2023 को लाइट हाउस दमन में टेंट सिटी का उद्घाटन कर असाधारण स्थलों के हमारे पोर्टफोलियो का और विस्तार किया है।

वित्तीय रूप से कंपनी ने86.70 प्रतिशत की प्रभावशाली वर्ष दर वर्ष वृद्धि दर्शाते हुए ?84.48 करोड़ की आय के साथ उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की। यह विशेष प्रदर्शन एक डायनॉमिक्स मार्केट में हमारी स्वीकार्यता और लचीलापन के प्रमाण के रूप में कार्य करता है। ट्रैवल मांग में पर्याप्त वृद्धि उद्योग के लिए सकारात्मक ट्रेजेक्ट्री का संकेत है। क्योंकि लोगो का विश्वास लौटा है और वे एक बार फिर से अपनी यात्रा योजनाओं पर आगे बढ़ रहे हैं। आगे के लिएहमने हमारी कंपनी के लिए आशावादी आउटलुक बरकरार रखा है। नए शामिल रिसाल्ट विभिन्न और समृद्ध यात्रा विकल्प प्रदान करने के हमारे विजन के अनुरूप व्यूहात्मक और सोचा समझा कदम है।

हर शेयर पर 4 बोनस शेयर देने जा रही यह कंपनी, 3 साल में 841त्न चढ़ गए शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। कोयले के कारोबार से जुड़ी एक कंपनी अपने इनवेस्टर्स को बड़ा तोहफा देने जा रही है। यह कंपनी अनमोल इंडिया है। कंपनी के बोर्ड ने इनवेस्टर्स को 4ः1 के रेशियो में बोनस शेयर देने को मंजूरी दी है। यानी, कंपनी हर शेयर पर 4 बोनस शेयर देगी। अनमोल इंडिया ने अभी बोनस शेयर की रिकॉर्ड डेट तय नहीं की है। कंपनी के शेयर शुक्रवार को बीएसई में 246.10 रुपये पर बंद हुए हैं। कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 121.15 रुपये है। अनमोल इंडिया के शेयर 29 जून 2020 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में 26.10 रुपये पर थे। कंपनी के शेयर 2 जून 2023 को बीएसई में 246.10 रुपये पर बंद हुए हैं।

एचडीएफसी बैंक ने मध्य भारत और महाराष्ट्र में मेगा कार लोन मेले का शुभारंभ किया

राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरी महाराष्ट्र और विदर्भ में 650 से अधिक बैंक शाखाएं मेगा कार लोन मेले लगाने के अभियान में शामिल हुई

मुंबई, एजेंसी। एचडीएफसी बैंक, भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक ने आज मध्य भारत और महाराष्ट्र में एक मेगा कार लोन मेला शुरू करने की घोषणा की। राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरी महाराष्ट्र और विदर्भ में 650 से अधिक बैंक शाखाएं प्रमुख ऑटोमोबाइल ब्रांडों और कार डीलरशिप के साथ साझेदारी में 2 और 3 जून को कार लोन अभियान की मेजबानी की। कार डीलर अपने ऑटोमोबाइल मॉडल दिखाने के लिए एचडीएफसी बैंक की शाखाओं में मौजूद रहेंगे और ग्राहकों को वाहनों की टेस्ट ड्राइव लेने की सुविधा भी दी गई। बैंक पात्र ग्राहकों को ऑन-द-स्पॉट कार लोन की स्वीकृति प्रदान करेगा। एचडीएफसी बैंक सभी ग्राहकों को सस्ती ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करता है। कार-लोन मेला की लक्ष्य ग्राहकों को ऑटोमोबाइल फाइनेंस तक आसान पहुंच प्रदान करने के लिए की गई है। खासकर सेमि अर्बन और रुरल सुरू (अर्ध-शहरी और ग्रामीण) स्थानों में ग्राहकों को कार लोन आसानी से उपलब्ध करवाया जाए। बैंक विभिन्न प्रकार के पुनर्भुगतान की आसान प्रक्रिया (रीपेमेंट कॉन्फिगरेशन) और न्यूनतम कागजी कार्रवाई के साथ ऋण अनुरोधों को प्रोसेस करने के लिए संपूर्ण समाधान प्रदान किया गया। 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए, एचडीएफसी बैंक की ऑटो लोन बुक का आकार 1,17,429 करोड़ रुपये था। पिछले साल, एचडीएफसी बैंक ने एक्सप्रेस कार लोन सुविधा शुरू की, जो एक अत्याधुनिक डिजिटल एपीआई प्लेटफॉर्म है, जो लगभग 30 मिनट में डीलरों के खातों में ऋण जमा करने में मदद करता है।

कार्डिएक केयर में तकनीकी प्रगति के साथ निदान और उपचार में काफी सुधार हुआ है : डॉ. मिलन चाग

अहमदाबाद , एजेंसी। हाल के वर्षों में, भारत में आबादी के बीच दिल की बीमारियों में खतरनाक वृद्धि हुई है, जहां कोरोनरी धमनी रोग जिसे इस्केमिक हृदय रोग के रूप में भी जाना जाता है, दूसरों के बीच सबसे प्रचलित हृदय रोग है। कोरोनरी धमनी हृदय को रक्त, ऑक्सीजन और पोषक तत्वों की आपूर्ति करती है। सीएडी तब विकसित होता है जब धमनियों में पट्टिका का निर्माण होता है, जिससे रक्त प्रवाह कम हो जाता है और सांस की तकलीफ और सीने में दर्द जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी में पाया गया है कि दुनिया की लगभग 1.72 प्रतिशत आबादी इस्केमिक हृदय रोग से प्रभावित है, जिसकी व्यापकता दर प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर 1,655 है और वर्ष 2030[1] में यह प्रसार दर बढ़कर प्रति 1,00,000 लोगों पर 1,845 से अधिक होने की उम्मीद है। डॉ मिलन चाग, इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट, मरेंगो सिम्स अस्पताल, अहमदाबाद ने बताया कि वास्तव में, भारतीयों के बीच सीएडी का प्रसार दुनिया के अन्य जातीय समूहों की तुलना में 4 से 10 गुना अधिक है और लगभग एक दशक पहले होता है। भारतीयों में 25 प्रतिशत दिल के दौरे 40 साल की उम्र से पहले होते हैं। भारतीयों में यह उच्च प्रसार हमारी अस्वास्थ्यकर जीवन शैली और आनुवंशिक भेद्यता के कारण है। हाल के दशकों में, कोरोनरी हृदय रोग के निदान और उपचार में काफी सुधार हुआ है। एंजियोप्लास्टी को पर्क्यूटेनियस कोरोनरी इंटरवेंशन के रूप में भी जाना जाता है, सीएडी के इलाज के लिए सबसे उन्नत और न्यूनतम इनवेसिव प्रक्रिया है, और इसे कोरोनरी आर्टरी बाईपास ग्राफ्टिंग के वैकल्पिक उपचार के रूप में जगह मिली है, जो अधिक आक्रामक है, इसमें उच्च जटिलता दर और लंबे समय में रिकवरी होती है। हृदय में रक्त के प्रवाह को बहाल करने के लिए एंजियोप्लास्टी प्रक्रिया की जाती है। इसमें एक पतली, लचीली ट्यूब जिसे कैथेटर कहा जाता है, लोकल एनेस्थेसिया के तहत, कलाई की धमनी के माध्यम से अवरुद्ध धमनी में डाला जाता है और फिर रुकावट को खोलने के लिए एक छोटा बलून फुलाया जाता है। इसे खुला रखने और सामान्य रक्त प्रवाह बहाल करने के लिए अक्सर धमनी में एक स्टेंट लगाया जाता है।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.34 अरब डॉलर घटकर 589.14 अरब डॉलर पर

मुंबई एजेंसी। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 26 मई को समाप्त सप्ताह में 4.34 अरब डॉलर घटकर 589.14 अरब डॉलर रहा। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। इससे पिछले सप्ताह, देश का कुल विदेशी मुद्रा भंडार 6.05 अरब डॉलर घटकर 593.48 अरब डॉलर रह गया था। उल्लेखनीय है कि अक्टूबर 2021 में, देश का विदेशी मुद्रा भंडार 645 अरब डॉलर के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया था। वैश्विक घटनाओं के कारण उत्पन्न दबावों के बीच केंद्रीय बैंक के रुपए के बचाव के लिए मुद्रा भंडार के उपयोग से इसमें गिरावट आई। रिजर्व बैंक के साप्ताहिक आंकड़ों के अनुसार, 26 मई को समाप्त सप्ताह में, मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा, विदेशी मुद्रा आस्तियां 4.01 अरब डॉलर घटकर 520.93 अरब डॉलर रह गया। डॉलर में अभिव्यक्त की जाने वाली विदेशी मुद्रा आस्तियों में यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं में आई घट-बढ़ के प्रभावों को भी शामिल किया जाता है। रिजर्व बैंक ने कहा कि स्वर्ण भंडार का मूल्य आलोच्य सप्ताह में 22.5 करोड़ डॉलर घटकर 44.90 अरब डॉलर रह गया। आंकड़ों के अनुसार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 8.4 करोड़ डॉलर घटकर 18.19 अरब डॉलर रह गया। समीक्षाधीन सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में रखा देश का मुद्रा भंडार 1.7 करोड़ डॉलर घटकर 5.11 अरब डॉलर रह गया।

टाटा ने गुजरात सरकार से की 13000 करोड़ की बड़ी डील

नई एजेंसी। टाटा समूह ने लगभग 13,000 करोड़ रुपये (1.6 बिलियन डॉलर) के निवेश के साथ लिथियम-आयन सेल प्लांट के निर्माण को लेकर एक डील की है। यह डील गुजरात सरकार के साथ हुई है। घटनाक्रम से जुड़े सूत्रों के मुताबिक इस हफ्ते की शुरुआत में टाटा संस की बोर्ड मीटिंग के दौरान गुजरात के साणंद में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बैटरी प्लांट लगाने का फैसला लिया गया था।

बता दें कि टाटा मोटर्स का पहले से ही साणंद में एक प्लांट चालू है और उसने फोर्ड मोटर्स के प्लांट का भी अधिग्रहण किया है। दोनों प्लांट के एकीकरण की प्रक्रिया शुरू हो गई है और इसे पूरा होने में एक साल तक का समय लग सकता है।

क्या है प्लान-टाटा की इकाई अगरतास एनर्जी स्टोरेज सॉल्यूशंस और गुजरात सरकार के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर एक संयुक्त बयान में कहा गया है कि प्लांट पर काम तीन साल से कम समय में शुरू होने की उम्मीद है। इसकी प्रारंभिक निर्माण क्षमता 20 गीगावाट घंटे होगी, जिसे विस्तार के दूसरे चरण में दोगुना किया जा सकता है। प्लांट पर काम तीन साल से कम समय में शुरू होने की उम्मीद है।

अप्रैल में टाटा मोटर्स की सहायक कंपनी जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ने अपनी विद्युतीकरण योजना की घोषणा की थी। जेएलआर ने कहा कि वह अगले पांच वर्षों में 15 बिलियन (करीब 19 बिलियन डॉलर) का निवेश अपनी रणनीति के तहत खुद को इलेक्ट्रिक-फर्स्ट और आधुनिक कार निर्माता के रूप में स्थापित करने के लिए करेगी।

भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में वैश्विक निवेशक तलाश रहे मौका, प्राइवेट क्रेडिट सेक्टर बना फेवरेट

नई दिल्ली, एजेंसी। वैश्विक निवेशकों का भारत में निवेश को लेकर सकारात्मक रुझान बना हुआ है। कतर का पावर इंटरनेशनल होल्डिंग, अमेरिका का एचपीएस पार्टनर्स, फोर्टेस इन्वेस्टमेंट ग्रुप भारत में प्राइवेट क्रेडिट क्षेत्र में निवेश को लेकर बातचीत कर रहा है। ये बड़े वैश्विक निवेशक भारत में 50 से 100 मिलियन डॉलर की निवेश कर सकते हैं। हालांकि, तीन कंपनियों की ओर से आधिकारिक रूप से कुछ नहीं कहा गया है, क्योंकि तीनों निवेशक भारत में प्राइवेट क्रेडिट में निवेश के मौके तलाश रहे हैं।

पावर इंटरनेशनल होल्डिंग एक बड़ा बिजनेस हाउस है। ग्रुप की ओर से जनरल कॉन्ट्रैक्टिंग, इंडस्ट्रीज एंड सर्विसेज, कृषि एंड फूड इंडस्ट्रीज, रियल एस्टेट और लाइफस्टाइल सेक्टर में निवेश किया गया है। एचपीएस पार्टनर्स ने कैपिटल सेक्टर में बॉन्ड्स और लोन आदि में निवेश के लिए जाना जाता है। अप्रैल तक कंपनी के पास 101 अरब डॉलर का एयूएम है, जिसमें से पब्लिक क्रेडिट 22 अरब डॉलर है और प्राइवेट क्रेडिट 79 अरब डॉलर है। फोर्टेस इन्वेस्टमेंट ग्रुप का नाम भी बड़ी ग्लोबल इंवेस्टमेंट ग्रुप में शामिल है। 31 मार्च कर कंपनी का एयूएम 44.2 अरब डॉलर का था।

भारत में क्यों निवेश कर रहे ये निवेशक

मौजूदा समय में भारत की अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन दुनिया की अन्य अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले काफी अच्छा है। यहां लोन की मांग भी काफी तेजी से बढ़ रही है। इस कारण बड़े निवेशक इस क्षेत्र में निवेश को लेकर विकल्पों की तलाश कर रहे हैं। वैश्विक निवेशक ही नहीं भारत की बड़ी कंपनियां भी इस सेक्टर में लगातार उतर रही हैं। हाल ही में देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस ने इस सेक्टर में उतरने की योजना बनाई है।

हर शेयर पर 4 बोनस शेयर देने जा रही यह कंपनी, 3 साल में 841% चढ़ गए शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। कोयले के कारोबार से जुड़ी एक कंपनी अपने इनवेस्टर्स को बड़ा तोहफा देने जा रही है। यह कंपनी अनमोल इंडिया है। कंपनी के बोर्ड ने इनवेस्टर्स को 4ः1 के रेशियो में बोनस शेयर देने को मंजूरी दी है। यानी, कंपनी हर शेयर पर 4 बोनस शेयर देगी। अनमोल इंडिया ने अभी बोनस शेयर की रिकॉर्ड डेट तय नहीं की है। कंपनी के शेयर शुक्रवार को बीएसई में 246.10 रुपये पर बंद हुए हैं। कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 121.15 रुपये है। अनमोल इंडिया के शेयर 29 जून 2020 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में 26.10 रुपये पर थे। कंपनी के शेयर 2 जून 2023 को बीएसई में 246.10 रुपये पर बंद हुए हैं। कंपनी के शेयरों ने पिछले 3 साल में इनवेस्टर्स को 843 पर्सेंट का रिटर्न दिया है।

महंगे फ्लाइट टिकट से सरकार दिलाए राहत, फिर से कैपिंग चाहते हैं लोगः सर्वे

नई दिल्ली, एजेंसी। मई की शुरुआत में गो फर्स्ट की सभी उड़ानें रद्द होने से एयरलाइन यात्रियों को काफी दिक्कतें हुईं। लोगों ने लोकल सर्कल को बताया कि पहले की तुलना में अब उन्हें ज्यादा हवाई किराया देना पड़ रहा है। यात्रियों ने बताया कि दिल्ली-लेह से एक तरफ के किराये के लिए 35,000 रुपये, दिल्ली-अहमदाबाद और दिल्ली-नागपुर की फ्लाइट के लिए 20,000 रुपये से ज्यादा देना पड़ रहा है। दरअसल, सरकार ने 31 अगस्त, 2022 को हवाई किराये की निचली और ऊपरी सीमा को हटाने का फैसला लिया और एयरलाइन कंपनियों को खुद से किराये तय करने का अधिकार मिल गया। ईंधन की कीमतों में कमी और यात्रियों की संख्या में बढ़ोतरी के बावजूद हवाये किराये में बढ़ोतरी देखी गई है। पिछले साल सितंबर से अभी तक लोकल सर्कल्स पर हवाई किराये को लेकर सौ से ज्यादा शिकायतें मिलीं। कुछ लोगों ने गो फर्स्ट मामले के बाद मुनाफाखोरी का आरोप लगाते हुए किराये में बढ़ोतरी की बात कही।

टाटा ने गुजरात सरकार से की 13000 करोड़ की बड़ी डील

नई एजेंसी। टाटा समूह ने लगभग 13,000 करोड़ रुपये (1.6 बिलियन डॉलर) के निवेश के साथ लिथियम-आयन सेल प्लांट के निर्माण को लेकर एक डील की है। यह डील गुजरात सरकार के साथ हुई है। घटनाक्रम से जुड़े सूत्रों के मुताबिक इस हफ्ते की शुरुआत में टाटा संस की बोर्ड मीटिंग के दौरान गुजरात के साणंद में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बैटरी प्लांट लगाने का फैसला लिया गया था। बता दें कि टाटा मोटर्स का पहले से ही साणंद में एक प्लांट चालू है और उसने फोर्ड मोटर्स के प्लांट का भी अधिग्रहण किया है। दोनों प्लांट के एकीकरण की प्रक्रिया शुरू हो गई है और इसे पूरा होने में एक साल तक का समय लग सकता है। क्या है प्लान-टाटा की इकाई अगरतास एनर्जी स्टोरेज सॉल्यूशंस और गुजरात सरकार के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर एक संयुक्त बयान में कहा गया है कि प्लांट पर काम तीन साल से कम समय में शुरू होने की उम्मीद है। इसकी प्रारंभिक निर्माण क्षमता 20 गीगावाट घंटे होगी, जिसे विस्तार के दूसरे चरण में दोगुना किया जा सकता है। प्लांट पर काम तीन साल से कम समय में शुरू होने की उम्मीद है। अप्रैल में टाटा मोटर्स की सहायक कंपनी जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ने अपनी विद्युतीकरण योजना की घोषणा की थी। जेएलआर ने कहा कि वह अगले पांच वर्षों में 15 बिलियन (करीब 19 बिलियन डॉलर) का निवेश अपनी रणनीति के तहत खुद को इलेक्ट्रिक-फर्स्ट और आधुनिक कार निर्माता के रूप में स्थापित करने के लिए करेगी।

सस्ता होगा खाने का तेल , 12 तक घट सकते हैं दाम

नई एजेंसी। आने वाले दिनों में खाने के तेल के दाम घट जाएंगे। खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने वैश्विक तेल कीमतों में गिरावट का हवाला देते हुए खाद्य तेल कंपनियों को अधिकतम खुदरा मूल्य को तुरंत 8-12 प्रति लीटर कम करने के लिए कहा है।

विभाग ने सॉल्वेंट एक्स्ट्रैक्शन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) सहित प्रमुख उद्योग निकायों के साथ बैठक में उपभोक्ताओं को तुरंत फायदा पहुंचाने के लिए कहा है। बता दें कि खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग द्वारा एक महीने में उद्योग प्रतिनिधियों के साथ आयोजित की गई यह दूसरी बैठक है। 200 अमेरिकी डॉलर प्रति टन तक गिरावट- उद्योग प्रतिनिधियों ने बताया कि पिछले दो महीनों के दौरान विभिन्न खाद्य तेलों के वैश्विक मूल्यों में 150 से 200 अमेरिकी डॉलर प्रति टन की गिरावट आई है। यह भी जानकारी दी कि उन्होंने खाद्य तेलों के अधिकमत खुदरा मूल्यों में काफी कमी की है और वे जल्दी ही इन खुदरा मूल्यों को और भी कम कर देंगे। हालांकि खुदरा बाजार में इसका प्रभाव पड़ने में समय अंतराल एक महत्वपूर्ण कारण है फिर भी खुदरा मूल्यों में जल्दी ही कमी आने की उम्मीद है।

उसी जज्बे के साथ बल्लेबाजी करना चाहता हूं, जैसे आईपीएल और रणजी ट्रॉफी में की: रहाणे

अरुंडेल (पोर्ट्समाउथ) (एजेंसी)। लगभग 18 महीने बाद भारतीय टीम में वापसी करने वाले सीनियर बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे को बीते हुए समय को लेकर कोई खेद नहीं है और वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आगामी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में उसी जज्बे के साथ बल्लेबाजी करना चाहते हैं जैसी उन्होंने आईपीएल में की थी।

रहाणे ने भारत के अभ्यास सत्र से इतर बीसीसीआई टीवी से कहा, 'मैंने 18-19 महीनों के बाद वापसी की है। अच्छा या बुरा जो कुछ भी हुआ, मैं अपने अतीत के बारे में नहीं सोचना चाहता हूं। मैं नए सिरे से शुरुआत करना चाहता हूं और मैंने जो कुछ किया उसे जारी रखना चाहता हूं। उन्होंने कहा, 'मैंने निजी तौर पर चेन्नई सुपर किंग्स की तरफ से खेलने का पूरा आनंद उठाया क्योंकि पूरे सत्र में मैंने अच्छी बल्लेबाजी की। यहां तक कि आईपीएल से पहले घरेलू सत्र में भी मेरा प्रदर्शन अच्छा रहा और मैं अच्छा महसूस कर रहा हूं। इसलिए यह वापसी मेरे लिए थोड़ा भावनात्मक रही।

आईपीएल चैंपियन चेन्नई का हिस्सा रहे रहाणे ने अपनी आक्रामक बल्लेबाजी के लिए काफी प्रशंसा बटोरी और वह इसी जज्बे के साथ आगे भी बल्लेबाजी करना जारी रखना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं उसी मानसिकता और जज्बे के साथ बल्लेबाजी करना चाहता हूं जैसा मैंने यहां आने से पहले आईपीएल और रणजी ट्रॉफी में की थी। मैं प्रारूप को लेकर नहीं सोचना चाहता हूं फिर चाहे वह टी20 हो या टेस्ट मैच। मैं अभी जिस तरह से बल्लेबाजी कर रहा हूं उसमें मैं चीजों को जटिल नहीं बनाना चाहता हूं। मैं चीजों को जितना सरल बना कर रखूंगा उतना ही मेरे लिए बेहतर होगा।

भारत की तरफ से अभी तक 82 टेस्ट मैचों में 4931 रन बनाने वाले रहाणे की अगुवाई में भारत ने 2021 में ऑस्ट्रेलिया में श्रृंखला जीती थी। उन्होंने वर्तमान कप्तान रोहित शर्मा के नेतृत्व कौशल की भी तारीफ की। उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि टीम संस्कृति बहुत अच्छी है। रोहित टीम को अच्छी तरह से संभाल रहे हैं और राहुल (मुख्य कोच राहुल द्रविड़) भाई भी वास्तव में टीम को अच्छी तरह से आगे बढ़ा रहे हैं। इससे भी मदद मिलती है और टीम का माहौल शानदार है। हर खिलाड़ी एक दूसरे के साथ का पूरा लुत्फ उठा रहा है।

रहाणे ने अपने परिवार और दोस्तों का आभार व्यक्त किया जिन्होंने उनके राष्ट्रीय टीम से बाहर होने के दौरान उनका पूरा साथ दिया। उन्होंने कहा, 'यह वास्तव में मेरे लिए भावनात्मक क्षण था। जब मैं टीम से बाहर किया गया तो मेरे परिवार का समर्थन बहुत मायने रखता था। भारत की तरफ से खेलना मेरे लिए बहुत मायने रखता है और मैंने अपनी फिटनेस पर बहुत ध्यान दिया और घरेलू क्रिकेट में खेलने लगा। मुझे पूरा विश्वास था कि मैं फिर से भारत की तरफ से खेल सकता हूं।

जूनियर महिला हॉकी टीम

भारत की उज़्बेकिस्तान पर बड़ी जीत, 22-0 से रौंदा

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने अपने महिला जूनियर एशिया कप 2023 अभियान की जोरदार शुरुआत करते हुए उज्बेकिस्तान को 22-0 से हरा दिया है। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम अगला पूल गेम 5 जून को मलेशिया के खिलाफ खेलेगी।

भारत ने फ्रंट फुट पर की प्रतियोगिता की शुरुआत; नियमितता के साथ उज्बेकिस्तान पर शुरूआत से ही उग्र खेलकर की जिस कारण वे शुरुआती बढ़त लेने में सफल रहे क्योंकि वैष्णवी विठ्ठल फाल्के ने पेनल्टी कार्नर को बदला जबकि मुमताज खान ने बाद में मैदानी गोल करके भारतीय टीम की बढ़त को दोगुना कर दिया। अन्नू ने एक गोल करके टीम की तालिका में इजाफा किया और शुरुआती क्वार्टर को भारत ने 3-0 की बढ़त के साथ समाप्त किया।

दूसरा क्वार्टर भी पहले क्वार्टर से अलग नहीं था क्योंकि भारत ने गेंद को कब्जे में रखकर और लगातार आक्रमण करते हुए खेल पर अपना दबदबा कायम रखा और सुनीलिता टोप्पो, मंजू चोरसिया के

रूप में बड़े अंतर से अपनी बढ़त बनाने में मदद मिली।, दीपिका सोरेंग, अनु ने नेट गोल कर भारत को 10-0 की बढ़त के साथ आधे समय के ब्रेक में जाने में मदद की।

अच्छी बढ़त होने के बावजूद, भारतीय टीम ने तीसरे क्वार्टर में धीमा होने का कोई संकेत नहीं दिखाया और दीपिका ने पेनल्टी कार्नर से गोल किया जबकि अनु ने गोल किया। भारत को 13-0 की बढ़त लेने में मदद करने के लिए दो और गोल और भी बहुत कुछ आने वाला था क्योंकि भारत शानदार खेल रहा था और मुमताज खान और दीपिका ने मैच के अपने दूसरे गोल किए जिससे तीसरे क्वार्टर के अंत तक यह 15-0 हो गया।

भारतीय टीम अधिक गोल करने के लिए उत्सुक थी और उन्होंने चौथे क्वार्टर में दीपिका, मुमताज खान, और नीलम के माध्यम से तीन त्वरित गोल करके टीम को 18-0 से आगे कर दिया। इतना ही नहीं अन्नू ने पेनल्टी स्ट्रोक पर गोल किया, जो मैच का उनका छठा गोल भी था जबकि वैष्णवी विठ्ठल फाल्के ने खेल का अपना दूसरा गोल कर टीम का स्कोर 20-0 कर दिया। एक मिनट बाद दीपिका (57%) ने पेनल्टी कार्नर से अपने शॉट को घर पर पहुंचा दिया जिसके बाद मुमताज खान ने गोल किया और मैच भारत के पक्ष में 22-0 से समाप्त हो गया।

शुभमन गिल की तुलना सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली से करना सही नहीं: पूर्व मुख्य कोच गैरी कर्स्टन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व मुख्य कोच गैरी कर्स्टन का मानना है कि भारत के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल की तुलना महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली से करना अभी अनुचित होगा। कर्स्टन गुजरात टाइटन्स के बल्लेबाजी कोच और मेंटर थे, जब गिल ने 17 पारियों में 890 रन बनाए जिसमें तीन शतक शामिल थे। गिल आईपीएल 2023 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बने हालांकि उनकी टीम गुजरात टाइटंस फाइनल मुकाबले में चेन्नई सुपरकिंग्स से हार गई।

कर्स्टन ने कहा, वह एक युवा खिलाड़ी है जिसके पास दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक होने के लिए अविश्वसनीय कौशल और दृढ़ संकल्प है। इतनी जल्दी उसकी तुलना सचिन और विराट से करना अनुचित होगा। कर्स्टन ने कहा, मेरा मानना है कि उनके पास भारत के लिए तीनों प्रारूपों में सफलतापूर्वक खेलने का खेल है। आप अक्सर ऐसा नहीं देखते हैं, खासकर जब टी20 क्रिकेट इतनी तेजी से विकसित और प्रगति कर रहा है।

यह पूछे जाने पर कि गिल के बारे में उन्हें क्या प्रभावित करता है, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व सलामी बल्लेबाज कर्स्टन ने कहा, पहला, उनका आत्मविश्वास और यह जानने में आत्म-विश्वास कि वह क्या करने में सक्षम हैं। दूसरा उनका कार्य नैतिकता और व्यावसायिकता है कि वह खेलों की तैयारी कैसे करते हैं। अंत में उनकी खेल की समझ और वह अपने कौशल सेट के साथ प्रदर्शन कैसे करते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ द ओवल में 7 से 11 जून तक होने वाले विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में भारत के कप्तान रोहित शर्मा के साथ गिल ओपनिंग करने के लिए तैयार हैं, कर्स्टन चाहते हैं कि वह हर समय खेल के बारे में सीखते रहें और अपने करीबी सर्कल में बने रहें।

उन्होंने कहा, शुभमन के पास सभी प्रारूपों में भारत के लिए एक महान खिलाड़ी बनने के लिए सभी योग्यताएं हैं। किसी भी खिलाड़ी की तरह उसे चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ेगा; वह उन्हें कैसे संभालता है और प्रगति करता रहता है, अंततः उसकी दीर्घकालिक सफलता निर्धारित करेगा। मैं प्रोत्साहित करूंगा उसे सीखते रहने और उन लोगों के साथ जुड़ने के लिए जो उसे विश्वसनीय सलाह दे सकते हैं। कर्स्टन ने कहा, मुझे लगता है कि उसमें कप्तान बनने की क्षमता है। उसके पास खेल का अच्छा ज्ञान और समझ है और वह अपने साथियों के साथ अच्छा व्यवहार करता है।

एफआईएच प्रो लीग 2022-23 में भारत ने किया उलटफेर

ओलिंपिक चैंपियन बेल्जियम को 5-1 से हराया

लंदन (एजेंसी)। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने लंदन में खेले जा रहे एफआईएच प्रो लीग 2022-23 में ओलिंपिक चैंपियन बेल्जियम को 5-1 से करारी शिकस्त दी। भारतीय टीम ने एफआईएच प्रो लीग में अपने यूरोपीय लेग में लगातार हार के बाद शानदार वापसी की।

इससे पहले, भारतीय टीम को यूरोपीय लेग के शुरुआती मैच में 26 मई को बेल्जियम से 1-2 से हार मिली और फिर अगले दिन उसे ब्रिटेन से 2-4 से हार का सामना करना पड़ा। इस जीत के बाद भारत स्न्नढ्ढ॥ प्रो लीग 2022-23 पॉइंट्स टेबल में दूसरे स्थान पर खिसक गया। भारत की ओर से विवेक सागर प्रसाद (पहले मिनट), हरमनप्रीत सिंह (20, 29वें मिनट), अमित रोहिदास ने (28वें मिनट) और दिलप्रीत सिंह ने (60वें मिनट) में गोल किए। जबकि बेल्जियम की तरफ से विलियम घिसलेन ने 45वें मिनट में एकमात्र गोल किया। एफआईएच प्रो लीग 2022-23 में अबतक खेले गए मुकाबलों में सबसे ज्यादा गोल कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने किया है। उनके नाम 11 मैचों में 15 गोल हैं। भारत अब अंक तालिका में 22 अंकों के साथ दूसरे पायदान पर है। वहीं, ग्रेट ब्रिटेन 25 अंकों के साथ पहले पायदान पर मौजूद है। भारतीय पुरुष हॉकी टीम अब अपना अगला मुकाबला 3 जून, को ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ खेलेगी, जो भारतीय समयानुसार शाम 5ः10 बजे से शुरू होगा।

डेविड वार्नर ने किया खुलासा

पाकिस्तान के खिलाफ सिडनी में खेलेंगे अंतिम मैच

बेकेनहैम (ब्रिटेन) (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के स्टार सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने शनिवार को खुलासा किया कि वह जनवरी में पाकिस्तान के खिलाफ

अपने घरेलू मैदान सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर अपने टेस्ट करियर का समापन करना चाहते हैं।

भारत के खिलाफ अगले सप्ताह होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की तैयारियों में लगे वॉर्नर ने अभ्यास सत्र से पहले बातचीत करते हुए उम्मीद जताई कि पाकिस्तान के खिलाफ सिडनी टेस्ट उनका अंतिम टेस्ट मैच होगा। यह सलामी बल्लेबाज हालांकि हाल में लंबे प्रारूप में रन बनाने के लिए जूझता रहा है और उनकी टेस्ट टीम में जगह पक्की नहीं है।

वॉर्नर ने कहा, 'टीम में बने रहने के लिए आपको रन बनाने होंगे। मैं शुरू से कहता हूं कि (2024) टी20 विश्व कप शायद मेरा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में आखिरी मैच होगा।% उन्होंने कहा, 'अगर मैं यहां रन बनाता हूं और ऑस्ट्रेलिया में भी खेलना जारी रखता हूं तो मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूं कि मैं वेस्टइंडीज के खिलाफ श्रृंखला में नहीं खेलूंगा। अगर मैं विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल और एशेज में रन बनाता हूं तथा पाकिस्तान श्रृंखला के लिए टीम में चुना जाता हूं तो मैं निश्चित तौर पर वहां अपने करियर का अंत करना चाहूंगा।

ऑस्ट्रेलिया को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के बाद इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेलनी है। ऑस्ट्रेलिया इस साल के अंत में पाकिस्तान के खिलाफ तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेलेगा जिसका आखिरी मैच तीन जनवरी से सिडनी में खेला जाएगा।

कीनिया की धाविका ने महिलाओं के 1500 मीटर दौड़ में नया विश्व रिकॉर्ड बनाया

फ्लोरेंस (इटली) (एजेंसी)। कीनिया की फेथ किपयेगोन ने गोल्डन गाला एथलेटिक्स प्रतियोगिता में महिलाओं की 1,500 मीटर दौड़ नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। किपयेगोन ने शुक्रवार को डायमंड लीग की इस प्रतियोगिता में तीन मिनट

49.11 सेकंड का समय लेकर विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया।

किपयेगोन इस दौड़ में तीन मिनट 50 सेकंड से कम का समय निकालने वाली दुनिया की पहली महिला एथलीट बन गई हैं। दो बार के ओलंपिक चैंपियन और दो बार के विश्व चैंपियन किपयेगोन ने इथियोपिया की गेन्जेबे दिबाबा के 2015 में बनाए गए तीन मिनट 50.07 सेकंड के रिकॉर्ड को तोड़ा। किपयेगोन का इससे पहले सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन तीन मिनट 50.37 सेकंड था जो उन्होंने पिछले साल अगस्त में मोनाको में बनाया था।

डब्ल्यूटीसी फाइनल 2023

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज बोले- ऐसे गेंदबाज होने चाहिए जो 20 विकेट ले सकें

सिडनी (एजेंसी)। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023 का फाइनल मुकाबला 7 जून को द ओवल में खेला जाना है। आपको बता दें की ये मुकाबला ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच होगा। भारतीय टीम के लिए आईपीएल खेलने के बाद खिलाड़ीयो के लिए रेड बॉल से खेलना थोड़ा मुशकिल हो सकता है। लेकिन टीम इंडिया के खिलाड़ी लगातार प्रैक्टिस में जुटे हुए है।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज जेसन गेलेस्पी ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम को अहम सलाह दी है। उन्होनें सलाह दी की भारतीय टीम को अपने सबसे तेज गेंदबाजो के साथ मैदान में उतरना चाहिए। गेलेस्पी ने बताया की

ऐसे गेंदबाज होने चाहिए जो 20 विकट हासिल कर सकें और इसी वजह से उन्हें अपने बेस्ट बॉलर्स को रखना जरुरी है।

जेसेन गेलेस्पी ने मीडिया से बातचीत में कहा, डिपेंड करता है कि मिडिल ऑर्डर टीम का कैसा रहता है। अगर उनको लगता है कि एक एक्स्ट्रा बल्लेबाज की जरूरत है तो फिर वो शार्दुल ठाकुर के साथ जा सकते हैं। उन्हें अपने बॉलिंग अटैक को लेकर फैसला करना होगा। कौन सी लाइन-अप 20 विकेट लेने वाली है, ये देखना होगा। मैं यही सलाह दूंगा कि वो अपने तीन बेस्ट तेज गेंदबाजों का चयन करें जिनको लेकर लगता है कि ये गेंदबाज इम्पैक्ट डालेंगे और 20 विकेट निकाल सकते हैं।

रंग बिरंगी गेंदों से फील्डिंग करती दिखी भारतीय टीम

पोर्टसमाउथ (एजेंसी)। पिछले कुछ साल में भारतीय टीम के अभ्यास सत्र में कई प्रयोग देखने को मिले हैं और अब विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप की तैयारी के लिये टीम रंग बिरंगी रबर गेंदों का इस्तेमाल कर रही है ताकि कैचिंग के दौरान आखिरी मौके पर गेंद के रूख बदलने पर भी कैच लपकने में परेशानी नहीं हो। यहां अभ्यास के दौरान शुभमन गिल को हरी गेंदों से कैच लपकते देखा गया । पीले रंग की भी गेंद थी लेकिन लॉन टेनिस गेंद नहीं थी जो आम तौर पर विकेटकीपर और करीबी क्षेत्ररक्षकों के अभ्यास के लिये इस्तेमाल की जाती है ।

एनसीए के लिये काम कर चुके एक मशहूर फील्डिंग

कोच ने बताया ,'' ये खास तौर पर बनाई गई रबर गेंदें है, वह नहीं जो गली क्रिकेट में इस्तेमाल होती है । इन्हें 'रिएक्शन गेंद कहते हैं और ये इंग्लैंड या न्यूजीलैंड जैसे कुछ खास देशों में अभ्यास के लिये इस्तेमाल की जाती है जहां ठंडी हवा और ठंडा मौसम होता है ।

हरी गेंद की अहमियत के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा ,'' किसी खास रंग का कोई वैज्ञानिक या क्रिकेटिया कारण नहीं है ।लेकिन स्लिप के क्षेत्ररक्षकों और विकेटकीपर के लिये रबर की गेंद खास तौर पर कैचिंग के लिये प्रयोग की जाती है ।

उन्होंने कहा ,'' इंग्लैंड एकमात्र देश है और कुछ हद तक न्यूजीलैंड में भी गेंद बल्लेबाज के बल्ले का बाहरी किनारा लेकर रूख बदल लेती है जिससे कैच लपकना मुश्किल हो जाता है । ड्यूक गेंद और भी डगमगाती है इसलिये रबर की गेंदों से अभ्यास किया जा रहा है क्योंकि ये अधिक स्विंग लेती हैं या डगमगाती हैं।

ओडिशा ट्रेन हादसा: हादसे के बारे में सुनकर बहुत दुख हूं

सिडनी (एजेंसी)। धमाकेदार बल्लेबाज विराट कोहली ने शनिवार को ओडिशा रेल हादसे पर दुख व्यक्त किया है। भारतीय क्रिकेटर ने दुर्घटना के पीड़ितों के लिए अपनी प्रार्थना भेजने के लिए सोशल मीडिया साइट ट्विटर का सहारा लिया।

कोहली को ओडिशा रेल हादसे की जानकारी मिलते के बाद ट्वीट करते हुए लिखा, 'ओडिशा में हुए दुखद ट्रेन हादसे के बारे में सुनकर दुख हुआ। मेरी प्रार्थनाएं उन परिवारों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं।' कोहली इस समय इंग्लैंड में हैं और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 7 जून को होने वाले विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप की तैयारियों में लगे हैं।

गौर हो कि शुक्रवार शाम हावड़ा के रास्ते में 12864 बेंगलुरु-हावड़ा सुपरफास्ट एक्सप्रेस के कई डिब्बे पटरी से उतर गए और बगल की पटरियों पर गिर गए। समानांतर ट्रैक पर विपरीत दिशा से आ रही 12841 शालीमार-चेन्नई सेंट्रल कोरोमंडल एक्सप्रेस पटरी से उतरे डिब्बों से जा टकराई। करीब 12 कोरोमंडल एक्सप्रेस के डिब्बे पटरी से उतरे और तीसरे ट्रैक पर खड़ी मालगाड़ी से टकरा गए। दो एक्सप्रेस ट्रेनों - बेंगलुरु-हावड़ा एक्सप्रेस और शालीमार-चेन्नई कोरोमंडल एक्सप्रेस - और बालासोर में एक मालगाड़ी से जुड़ी ओडिशा ट्रेन दुर्घटना में मरने वालों की संख्या बढ़कर 238 हो गई है।

पीसीबी एशिया कप की मेजबानी को लेकर श्रीलंका से नाराज

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) पूरे एशिया कप की मेजबानी करने में दिलचस्पी दिखाने के कारण श्रीलंका क्रिकेट से नाराज है और उसने इस देश में एक दिवसीय द्विपक्षीय श्रृंखला खेलने के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया है।

पीसीबी के सूत्रों के अनुसार श्रीलंका ने एशिया कप के पूरे टूर्नामेंट की मेजबानी करने की इच्छा जताई है जिससे इन दोनों देशों के क्रिकेट बोर्ड के रिश्तों में खटास पैदा हो गई है। सूत्रों ने कहा, 'इन दोनों देशों के क्रिकेट बोर्ड के बीच खटास पैदा होने का एक

उदाहरण पीसीबी का श्रीलंका में अगले महीने एकदिवसीय श्रृंखला खेलने से इनकार करना है।

पाकिस्तान को आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अगले चक्र के तहत इस साल जुलाई में दो टेस्ट मैच खेलने के लिए श्रीलंका का दौरा करना है। श्रीलंका ने इसके साथ ही वनडे श्रृंखला खेलने का प्रस्ताव भी पीसीबी के सामने रखा था। लेकिन विश्वसनीय सूत्रों ने पुष्टि की कि पीसीबी ने शुरू में कहा था कि वह इस प्रस्ताव पर विचार करेगा लेकिन अब उसने इसे नामंजूर कर दिया है। उन्होंने कहा, 'यह स्पष्ट संकेत है कि पीसीबी सितंबर में एशिया कप की की मेजबानी करने की श्रीलंका क्रिकेट की पेशकश से खुश नहीं है जबकि इस क्षेत्रीय टूर्नामेंट की मेजबानी करने की बारी पाकिस्तान की है।

अवैध निर्माण करने वाले हो जाएं सावधान, गुरुग्राम के 2 और सेक्टरों के 20 स्थानों पर चले बुलडोजर

गुरुग्राम , एजेंसी।
गुरुग्राम में भूमाफिया और अवैध कब्जाधारियों पर हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवपी) का एक्शन लगातार जारी है। एचएसवपी के दस्ते द्वारा आए दिन चिन्हित कर ऐसे अवैध निर्माणों को ध्वस्त किया जा रहा है। एचएसवपी की इस कार्रवाई से अवैध कब्जा करने वालों में दहशत का माहौल है।हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवपी) ने शुक्रवार को गुरुग्राम के दो सेक्टरों में अवैध निर्माण के खिलाफ तोड़फोड़ की कार्रवाई को अंजाम दिया। इस दौरान सेक्टर-9ए में साढ़े तीन एकड़ और सेक्टर-26 में आधा एकड़ जमीन पर 20 अवैध निर्माण ध्वस्त किए गए। इसमें झुग्गियां, टिन शेड, डेयरी, दुकानें शामिल रहे। इस कार्रवाई का लोगों ने विरोध किया, लेकिन पुलिस बल के आगे विरोध करने वाले पीछे हट गए। शुक्रवार दोपहर को एचएसवपी के संपदा दफ्तर के सर्वे ब्रांच-1 की टीम ने पुलिस बल को साथ सेक्टर-9ए में 3.5 एकड़ जमीन खाली कराई। यहां पर कब्जा धारियों ने विरोध किया, लेकिन भारी पुलिस बल के साथ मौजूद अधिकारियों की सहायता से उन्हें समझाया गया। फिर आगे की कार्रवाई की गई। इस कार्रवाई में 8 झुग्गियां, बिल्डिंग मैटेरियल सप्लायर की दुकान, दो टिन शेड और एक डेयरी ध्वस्त कर दी गई। इतना ही नहीं, विरोध करने वालों को जेई ललित ने चेतावनी भी दी कि यहां पर फिर से कोई भी अवैध कब्जा किया तो उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। इस मौके पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट के तौर पर उपमंडल अभियंता सत्यनारायण, जेई शमशेर महला, जेई धीरज, जेई सुरेंद्र, जेई पंकज वर्मा, जेई अजीत सहरावत, संजीव यादव, पटरवरी सूरत सिंह आदि मौजूद रहे।

मई में हुई 67.3 मिमी बारिश? टूटा 125 साल का रिकॉर्ड

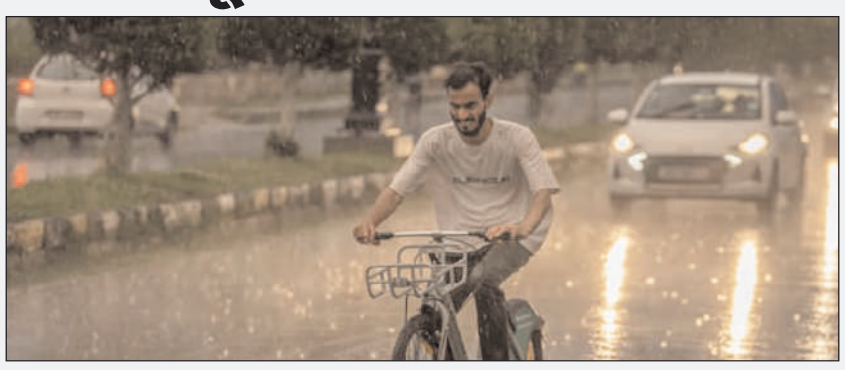

नईदिल्ली, एजेंसी।
उत्तर भारत और पूर्वोत्तर के राज्यों में मई के महीने के दौरान मौसम के मिजाज में भारी बदलाव देखने को मिला है। मौसम विभाग के अनुसार पिछले करीब सवा सौ सालों में यह तीसरा मौका है, जब उत्तर-पश्चिमी राज्यों में मई के दौरान सर्वाधिक बारिश रिकॉर्ड की गई है, जबकि पूर्व और पूर्वोत्तर राज्यों में कम बारिश का भी यह तीसरा रिकॉर्ड है।

मौसम विभाग ने शुक्रवार को मई के महीने के मौसम का विश्लेषण जारी किया है। इसके अनुसार उत्तर भारत में इस दौरान 67.3 मिमी बारिश दर्ज की गई, जो 1901 के बाद से तीसरी बार सर्वाधिक है। इससे पूर्व 1987 में 95 मिमी तथा 2021 में 68.2 मिमी बारिश दर्ज की गई थी। उत्तर पश्चिम भारत से तात्पर्य दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश है।

मई के महीने में उत्तर पश्चिम भारत में सामान्य बारिश 34.6 डिग्री होती है, लेकिन इस बार इसमें 94 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। लेकिन सर्वाधिक बारिश वाले इलाके पूर्व और पूर्वोत्तर में मई के दौरान बारिश में कमी दर्ज की गई है। 1901 के बाद यह तीसरा मौका है, जब मई के दौरान इस हिस्से में कम बारिश हुई है। इस बार 111.3 मिमी बारिश हुई है, जबकि इससे पूर्व कम बारिश वाले दो साल 1907 और 2012 रहे हैं, जब बारिश क्रमश 108.1 तथा 109.6 मिमी दर्ज की गई थी। इस क्षेत्र के लिए सामान्य बारिश 189.9 मिमी है। यानी 41 फीसदी कम बारिश हुई है।

मई महीने में 8 पश्चिम विक्षोभ बने

विभाग के अनुसार मई के दौरान देश भर में सामान्य से 10 फीसदी, दक्षिणी हिस्से में 32 और मध्य भारत में 64 फीसदी बारिश हुई है। रिपोर्ट के अनुसार मई के दौरान उत्तर पश्चिम भारत में अधिकतम औसत तापमान 33.53 डिग्री रिकार्ड किया गया, जो अब का आठवीं बार कम तापमान है। यह सामान्य से करीब दो डिग्री कम रहा। इसी बार न्यूनतम औसत तापमान सातवीं बार कम रहा, जो 26.81 डिग्री जो सामान्य से 1.71 डिग्री कम है। इसी प्रकार मध्य भारत में तापमान कम तथा पूर्व और पूर्वोत्तर में ज्यादा दर्ज किया।

मौसम विभाग के अनुसार 1-8 मई के दौरान उष्ण लहर का प्रकोप नहीं रहा, जबकि 24-31 मई के दौरान भी ज्यादातर हिस्सों में बारिश और आंधी तूफान की घटनाएं हुई, जिससे तापमान कम रहा। हालांकि महीने के मध्य में पश्चिम बंगाल, बिहार, गुजरात, तटीय आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश के कई इलाकों में लू चली। मई में ज्यादा बारिश की प्रमुख वजह 8 पश्चिमी विक्षोभ का बनना है, जो 1, 4, 11, 15, 17 23, 27 29 मई के दौरान सक्रिय हुए थे। इनके चलते बारिश और आंधी तूफान की गतिविधियां हुई।

दिल्ली दंगा मामले में एक शख्स को सात साल की जेल, उसके पिता को भी तीन साल कैद

नई दिल्ली, एजेंसी।
कड़कड़डूमा अदालत ने शुक्रवार को दो अलग-अलग मामलों में एक व्यक्ति को सात साल सश्रम कारावास और उसके पिता को तीन साल साधारण कैद की सजा सुनाई। अदालत ने सजा सुनाए जाने के दौरान सख्त टिप्पणियां की। अदालत ने कहा कि पिता ने बेटे को सही रास्ता दिखाने के बजाय खुद भयावह कृत्य किया। अदालत ने वर्ष 2020 में उत्तर पूर्वी दिल्ली में हुए दंगे से जुडे मामलों की सुनवाई करते हुए टिप्पणी की कि सांप्रदायिक दंगे लोक अव्यवस्था का सबसे हिंसक प्रारूप है जो समाज को प्रभावित करता है।

तीन साल साधारण कैद की सजाः अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पुलस्त्य प्रमाचला की अदालत ने मिठन सिंह और उसके बेटे जॉनी कुमार से जुड़े दो मामलों की सुनवाई कर रहे थे जो भारतीय दंड संहिता की धारा- 147 (दंगा करना) और धारा-436 (गृह आदि को नष्ट करने के आशय से अग्नि या विस्फोटक पदार्थ का दुरुपयोग) के तहत दोषी करार दिए गए थे। न्यायाधीश ने फैसले में कहा कि आईपीसी की धारा-436 के तहत दोषी जॉनी कुमार को सात साल सश्रम कारावास और दोषी मिठन सिंह को तीन साल साधारण कैद की सजा सुनाई जाती है। प्राथमिकी संख्या 239 के मामले में क्रमशः 50 हजार रुपये और 25 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया है। इतनी राशि का जुर्माना प्राथमिकी संख्या 244 में भी लगाया गया है। गौरतलब है कि खजूरी खास पुलिस ने सिंह और कुमार के खिलाफ दो प्राथमिकी दर्ज की थी और अदालत ने अलग-अलग फैसलों में उन्हें दोषी करार दिया था। दिल्ली उच्च न्यायालय ने छात्र कार्यकर्ता शरजील इमाम की याचिका पर शुक्रवार को दिल्ली पुलिस से जवाब तलब किया है। याचिका में जामिया मिलिया इस्लामिया में दिसंबर 2019 में दिए गए शरजील के कथित आपत्तिजनक भाषण से जुड़े आपराधिक मामले में राजद्रोह और घृणा भाषण के आरोप जोड़ने वाले पूरक आरोप पत्र को रद्द करने की मांग की गई है। न्यायमूर्ति रजनीश भटनागर की पीठ ने याचिका पर नोटिस जारी किया और अभियोजन पक्ष को स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने का समय दिया। मामले में पहला पूरक आरोप पत्र 16 अप्रैल, 2020 को दायर किया गया था। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि पूरक आरोप पत्र में राजद्रोह तथा घृणा भाषण के अपराध को जोड़े जाने को चुनौती दी गई है। वकील ने कहा कि नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ प्रदर्शनों के दौरान शरजील इमाम के कथित आपत्तिजनक भाषण समेत दो भाषणों के संबंध में दिल्ली पुलिस ने पहले ही अलग प्राथमिकी दर्ज की है।

जब बिहार में नदी में समा गई थी ट्रेन, 800 लोगों की हुई थी मौत

इससे पहले भी हो चुके है कई दिल दहला देने वाले रेल हादसे

नईदिल्ली, एजेंसी।
ओडिशा के बालासोर जिले में शुक्रवार शाम में दो यात्री ट्रेनों की टक्कर में अब तक 207 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, इस भीषण दुर्घटना में 900 से अधिक लोग घायल हो गए हैं। रेल हादसे के बाद दुर्घटनास्थल पर राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की नौ टीम बचाव कार्य में जुटी हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ओडिशा में हुई ट्रेन दुर्घटना पर दुख व्यक्त करते हुए शुक्रवार को कहा कि घटनास्थल पर बचाव अभियान जारी है और प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता दी जा रही है। उन्होंने स्थिति का जायजा लेने के लिए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से भी बात की है।

बड़े रेल रेल हादसे

जून 1981: बिहार में 6 जून 1981 को एक ट्रेन मानसी और सहरसा के बीच पुल पाल करते समय पटरी से उतर गई थी और सात डिब्बे बागमती नदी में गिर गई थी। इस हादसे में 800 यात्रियों की मौत हो गई थी। यह अब तक भारत और दुनिया के सबसे खतरनाक रेल हादसों में से एक है।

अगस्त 1995: दिल्ली से कानपुर के बीच चलने वाली पुरुषोत्तम एक्सप्रेस उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद के पास खड़ी कालिंदी एक्सप्रेस से टकरा गई थी। इस हादसे में दोनों ट्रेनों के 360 से अधिक यात्री मारे गए थे। कुछ मीडिया रिपोर्ट में इस घटना के लिए मैन्युअल त्रुटि को जिम्मेदार ठहराया गया था। कहा जाता है कि पटरी पर जानवर के मरने के बाद कालिंदी एक्सप्रेस के ब्रेक जाम हो गए और ट्रैक पर ही रुक गए। साथ ही पुरुषोत्तम एक्सप्रेस को भी उसी ट्रैक पर चलाने की अनुमति दी गई। पुरुषोत्तम एक्सप्रेस ने कालिंदी एक्सप्रेस को पीछे से टक्कर मार दी जिससे हादसा हो गया था।

26 नवंबर 1998: जम्मू तवी-सियालदह एक्सप्रेस पंजाब खन्ना में अमृतसर जाने वाली फ्रंटियर गोल्डन टेंपल मेल के साथ हादसे की शिकार हुई थी। पटरी टूटी होने के कारण स्वर्ण मंदिर मेल ट्रेन के 3 डब्बे पटरी से उतर गए थे। वहीं जम्मू तवी-सियालदह एक्सप्रेस छह डिब्बे पटरी से उतर गए थे। इस भीषण हदसे में 280 से अधिक यात्रियों की जान गई थी।

28 मई 2010: मुंबई जाने वाली हावड़ा कुर्ला लोकमान्य तिलक ज्ञानेश्वरी सुपर डीलक्स एक्सप्रेस पश्चिम बंगाल के पश्चिम मिदनापुर जिले में खेमशौली और साडीहा के बीच रात 1:30 बजे पटरी से उतर गई थी। इसके बाद एक मालगाड़ी ने आकर टक्कर मार दी थी। इस हादसे में 235 यात्रियों की जान चली गई थी।

9 सितंबर 2002: हावड़ा-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस गया और डेहरी-ऑन-सोन स्टेशनों के बीच रफी गंज स्टेशन के पास पटरी से उतर गई थी। मैनुअल फॉल्ट के कारण ह दुर्घटना हुई थी। इसमें 130 से अधिक लोग मारे गए थे। ऐसा कहा जाता है कि जिस ट्रैक पर ट्रेन चल रही थी वह ब्रिटिश काल का था। भारी बारिश के कारण पटरी में दरार आ गई थी।

2 अगस्त 1999: उत्तर सीमांत रेलवे के कटिहार मंडल के अवध में अवध-असम एक्सप्रेस और ब्रह्मपुत्र मेल की टक्कर में करीब 268 लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे में 359 से अधिक लोग घायल हो गए थे। ब्रह्मपुत्र मेल भारतीय सैनिकों को असम से सीमा तक लेकर जा रहा था। वहीं, अवध असम एक्सप्रेस गुवाहाटी जा रही थी। गुस्लर के पास एक स्टेशन पर खड़ी थी।

मोहब्बत का पागलपन, प्रेमिका पर किए थे 51 प्रहार

रायपुर, एजेंसी।
मोहब्बत कई बार इंसान को पागल बना देती है और यह पागलपन इस हद तक पहुंच जाता है कि वह अपने सपनों की रानी या सपनों के राजा को क्रूरता से मारने में भी संकोच नहीं करता। ऐसी ही कहानी है कोरबा की नीलम कुसुम पन्ना की, कभी कुसुम का दोस्त रहा शाहबाज, उसकी जान का दुश्मन बन गया और पेचकस व नुकीली वस्तु से उसके शरीर पर 51 घाव कर जान ले ली।

शाहबाज बस में कंडक्टरी किया करता था, इस दौरान उसकी कोरबा के सीएसईबी पुलिस चौकी क्षेत्र की पंप कॉलोनी में रहने वाली नीलम कुसुम से दोस्ती हो गई। शाहबाज नौकरी करने के लिए गुजरात चला गया। इस दौरान कुसुम और शाहबाज के बीच कुछ दूरियां भी हुई। वक्त गुजरा तो दोनों के बीच फिर से बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया, फिर वक्त के साथ हालात भी बदलें और शाहबाज को इस बात का शक होने लगा कि कुसुम उसके अलावा किसी और से भी बातचीत करती है।

बीते साल क्रिसमस से एक दिन पहले शाहबाज गुजरात से कोरबा और फिर सीधे कुसुम के घर पहुंचता है। उसके यहां क्रिसमस की तैयारी चल रही थी। उस वक्त घर में कोई नहीं था। कुसुम और शाहबाज के बीच विवाद हुआ और उसके बाद शाहबाज ने कुसुम पर पेचकस और नुकीले औजार से ताबड़तोड़ हमले बोल दिया। कुसुम के सीने पर 34 और पीठ पर 16 वार किए गए और मौके से फरार हो गया। इस मामले को लव जिहाद का भी रंग देने की कोशिश हुई, क्योंकि कुसुम का झुकाव ईसाई धर्म की तरफ था और शाहबाज मुस्लिम था। जब वह पकड़ा गया तो सारी बातें सामने आ गई। शाहबाज गुजरात से छत्तीसगढ़ हवाई जहाज के जरिए पहुंचा था, इस बात की पुष्टि कुसुम के कमरे से हवाई जहाज का टिकट मिलने से भी हुआ था।

राज्य में कई और भी ऐसे मामले सामने आए हैं, जब दोस्ती ने मोहब्बत का रूप लिया, तो दोनों एक-दूसरे के लिए जान देने को तैयार रहे, मगर बात बिगड़ी तो जान भी ले ली।

बीते साल जुलाई में राजधानी में एक युवक ने अपनी प्रेमिका की हथौड़ों से हमला कर हत्या कर दी थी और खुद फांसी के फंदे पर लटक गया था। अर्चना साहू और कमलेश साहू के बीच लगभग एक दशक से ज्यादा मोहब्बत चला, मगर अचानक इन दो के बीच तीसरे व्यक्ति के आने का शक हुआ, तो स्थिति यहां तक पहुंच गई। एक अन्य मामला रायपुर का है। इसमें एक युवक और युवती के बीच रिसेप्शन के दिन ही झगड़ा हुआ। युवक ने युवती की हत्या के बाद आत्महत्या कर ली। बाद में दोनों के शव बरामद किए गए।

एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक छत्तीसगढ़ में हर रोज तीन हत्याएं और तीन दुष्कर्म के अपराध दर्ज किए जा रहे हैं। राज्य में वर्ष 2021 में हत्या के 1057 और दुष्कर्म के 1093 अपराध दर्ज किए गए। पुरानी आंकड़ों से तुलना की जाए तो वर्ष 2018 में दुष्कर्म के मामले में राज्य देश में पांचवें स्थान पर था और 2021 में वह 11वें स्थान पर आ गया।

विशेषज्ञों ने कहा, कुश्ती संघ प्रमुख को गिरफ्तार करना आईओ के हाथ में

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा सांसद और भारतीय कुश्ती संघ (डब्ल्यूएफआई) के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ 21 अप्रैल को यौन उत्पीड़न और पोक्सो एक्ट की धाराओं में दो प्राथमिकी दर्ज होने के बाद भी अब तक उनकी गिरफ्तारी न होने पर सवाल उठ रहे हैं। पुलिस के अनुसार, सिंह के खिलाफ 21 अप्रैल को सात पहलवानों के बयानों के आधार पर दर्ज की गई दो प्राथमिकियों में से एक आईपीसी की धारा 354 (महिला का शील भंग करने के इरादे से उस पर हमला या आपराधिक बल प्रयोग), 354ए (यौन उत्पीड़न) और 354डी (पीछा करना) के तहत दर्ज की गई है। दूसरी पोक्सो एक्ट की धारा 10 के तहत दर्ज की गई है।

आईपीसी की धारा 354ए के तहत आरोपों के लिए एक साल तक की सजा या जुमार्ना है, जबकि धारा 354डी के तहत पांच साल तक की सजा और जुमार्ना है। पोक्सो एक्ट की धारा 10 के मामले में अधिकतम सजा सात साल है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि कोई अभियुक्त जांच में सहयोग कर रहा है, तो गिरफ्तारी अनिवार्य नहीं है और गिरफ्तारी का निर्णय पुलिस के पास है। सिंह की गिरफ्तारी की मांग तीन गैर-जमानती और गंभीर अपराधों के कारण हुई है, कानूनी प्रावधान और सुप्रीम कोर्ट के फैसले मामले पर अधिक स्पष्टता प्रदान करते हैं। भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 41ए और शीर्ष अदालत के विभिन्न निर्णयों के अनुसार, यदि अपराध के लिए निर्धारित अधिकतम सजा सात साल से कम है तो आरोपी की गिरफ्तारी अनिवार्य नहीं है। सुप्रीम कोर्ट के वकील विनीत जिंदल ने कहा कि गिरफ्तारी का फैसला पूरी तरह से पुलिस अधिकारियों के पास है। हालाँकि, गंभीर अपराधों से जुड़े मामलों में, आमतौर पर गिरफ्तारी करने का मानदंड माना जाता है। जिंदल ने कहा, विशेष रूप से, पोक्सो अधिनियम के तहत अपराधों को गैर-जमानती के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसलिए, यदि वैध जांच की आवश्यकता है, तो परिणामी कार्रवाई के रूप में गिरफ्तारी की संभावना अधिक है। सुप्रीम कोर्ट के एक अन्य वकील रुद्र विक्रम सिंह ने कहा कि सिंह को गिरफ्तार करने में देरी मामले की प्राथमिक जांच के कारण हो सकती है। सिंह ने कहा, इसके अलावा, चूंकि पोक्सो अधिनियम और अन्य कृत्यों के तहत कथित रूप से किए गए अपराधों में सात साल तक की सजा होती है, इन परिस्थितियों में जांच अधिकारी सीआरपीसी की धारा 41 और धारा 41-ए के प्रावधानों का पालन कर सकता है। इस संबंध में अमरेश कुमार बनाम बिहार राज्य मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले की नजीर है। अगर आरोपी जांच अधिकारी (आईओ) के साथ सहयोग नहीं करता है, तो पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर सकती है। पिछले महीने सिंह का बयान दर्ज किया गया था और एक विशेष जांच टीम (एसआईटी) भी गठित की गई थी। दिल्ली पुलिस ने कहा था, पहलवानों की शिकायत पर, डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह का बयान दर्ज किया गया और कुछ दस्तावेजों की मांग की गई। बृजभूषण ने अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों से इनकार किया। चार महिला अधिकारियों सहित 10 पुलिस कर्मियों के साथ एक एसआईटी का गठन किया गया। 10 -सदस्यीय एक दल भी एक महिला डीसीपी की देखरेख में गठित किया गया था।

युद्ध के मैदान में हथियार भेजना बंद करें, चीन ने दूसरे देशों से की अपील

बीजिंग, एजेंसी।
चीनी राजदूत ली हुई ने शुक्रवार को अन्य सरकारों से अपील करते हुए कहा कि वे युद्ध के मैदान में हथियार भेजना बंद करने और शांति वार्ता करें। ली हुई ने यह अपील ऐसे समय में की है, जब वॉशिंगटन और उसके यूरोपीय सहयोगी रूस के कब्जे वाले क्षेत्र को फिर से हासिल करने की कोशिश कर रहे यूक्रेनी बलों को मिसाइलों और टैंकों की आपूर्ति बढ़ा रहे हैं। संवाददाताओं से कहा, चीन का मानना है कि अगर हम वास्तव में युद्ध को समाप्त करना चाहते हैं, जीवन को बचाने और शांति का एहसास करना चाहते हैं, तो हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम युद्ध के मैदान में हथियार भेजना बंद करें, वरना तनाव और बढ़ जाएगा।

चीन का कहना है कि वह न्यूट्रल है और एक मीडएिटर के रूप में काम करना चाहता है, लेकिन उसने राजनीतिक रूप से मॉस्को का समर्थन किया है। विदेशी विश्लेषकों ने ली हुई के देशों के दौरे से प्रगति की बहुत कम संभावना देखी, क्योंकि कोई भी पक्ष लड़ाई बंद करने के लिए तैयार नहीं है, लेकिन एक दूत भेजने से बीजिंग को अपनी वैश्विक राजनयिक भूमिका का विस्तार करने का अवसर मिला।

चीन एकमात्र सरकार है, जिसके रूस और यूक्रेन दोनों के साथ अच्छे संबंध हैं और दोनों के लिए सबसे बड़े निर्यात बाजारों में से एक के रूप में इसका लाभ है। एक दूत भेजने के शी जनिपगि के फैसले का यूक्रेनी सरकार ने स्वागत किया था, लेकिन फरवरी 2022 के हमले से पहले बीजिंग द्वारा क्रेमलिन के साथ कोई सीमा नहीं दोस्ती की घोषणा के बाद चीन के इरादों के बारे में सवाल उठाए। बीजिंग ने फरवरी में एक प्रस्तावित शांति योजना जारी की, लेकिन यूक्रेन के सहयोगियों ने जोर देकर कहा कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को पहले रूसी सेना को वापस लेना चाहिए। ली ने कहा, चीन का लक्ष्य शांति वार्ता और शत्रुता की समाप्ति को बढ़ावा देना है। ली ने सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान के लिए बीजिंग के आह्वान को दोहराया, लेकिन इस बात का कोई संकेत नहीं दिया कि चीन कब्जा किए गए क्षेत्र को वापस देने के लिए मास्को पर दबाव डाल रहा है। पुतिन की सेना ने मुख्य रूप से रूसी भाषी आबादी वाले क्रीमिया प्रायद्वीप और पूर्वी यूक्रेन के कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया है। ली ने कहा, चीन सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए एक संतुलित और न्यायपूर्ण तरीके की वकालत करता है।

रूस जल्द ही तैयार करेगा सुरक्षा संबंधी नई रूपरेखा, पुतिन बोले- मॉस्को को अस्थिर करने के मंसूबे होंगे नाकाम

मॉस्को, एजेंसी।
रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि कुछ मानसिक रूप से बीमार लोग रूस को अस्थिर करना चाहते हैं, लेकिन हमें उनके मंसूबों को कामयाब नहीं होने देना है। पुतिन ने अपने मंत्रिमंडल के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी परिस्थिति में हमें देश को कुचक्रों से बचाना है।

पूरी घटना पर सुरक्षा परिषद की नजर : पुतिन ने कहा कि जल्द ही सुरक्षा परिषद पूरे घटनाक्रम पर विचार करेगी और सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण फैसले लेगी। रूसी सेना ने शुक्रवार को फिर से यूक्रेन की राजधानी कीव पर हवाई हमला किया। यूक्रेन के एयर डिफेंस सिस्टम ने रूस की 30 क्रूज मिसाइलों और ड्रोन को मार गिराने का दावा किया है। बता दें कि कुछ मिसाइलों-ड्रोनों के लक्ष्य से टकराने और कुछ के मलबे से नुकसान की खबर है। यह बीते छह दिनों में कीव पर रूस का छठा हमला था। इस बीच रूस ने कहा है कि उसके सीमावर्ती बेलगोरोद इलाके में यूक्रेनी गोलाबारी में दो लोग मारे गए हैं और दो घायल हुए हैं। रूस के कब्जे वाले यूक्रेन के बंदरगाह शहर बर्दयांस्क पर यूक्रेनी सेना की गोलाबारी की खबर है। इस गोलाबारी में नौ लोग घायल हुए हैं, कुछ मकानों को भी नुकसान हुआ है।

यूक्रेन के लिए नियुक्त चीन के विशेष दूत ने पश्चिमी देशों से यूक्रेन में हथियार आपूर्ति रोकने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा है कि इससे यूक्रेन युद्ध भड़क रहा है और युद्धविराम की संभावना कमजोर पड़ रही है। विशेष दूत ली हुई ने अमेरिका और यूरोपीय देशों द्वारा टैंकों और मिसाइलों की आपूर्ति से रूस-यूक्रेन के बीच शांति वार्ता शुरू कराने में बाधा आने की आशंका है।

बता दें कि चीन ने अभी तक यूक्रेन पर रूस के हमले की निंदा नहीं की है, लेकिन उसने कहा है कि वह इस युद्ध में तटस्थ की भूमिका में है, इसीलिए वहां पर शांति के लिए प्रयास कर रहा है। ली हुई ने कहा कि यूक्रेन के अधिकारी शांति वार्ता के लिए तैयार हैं, रूस ने भी अनिच्छा जाहिर नहीं की है, लेकिन वार्ता कब शुरू होगी यह अभी निश्चित नहीं है।

इमरान खान के बेहद करीबी नेता ने राजनीति छोड़ी

क्वेटा, एजेंसी। पीटीआई के अध्यक्ष इमरान खान के बेहद करीबी माने जाने वाले पाकिस्तान पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री उस्मान बुजदार ने शुक्रवार को राजनीति छोड़ने का ऐलान किया। समा टीवी की रिपोर्ट के अनुसार, क्वेटा में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए उस्मान ने कहा, वह पिछले 14 महीनों से कई केस का सामना कर रहे हैं। मैं राजनीति को छोड़ रहा हूं।

बुजदार ने कहा कि ऐसा कोई नागरिक नहीं होगा जो 9 मई की इन घटनाओं की निंदा न करे। समा टीवी की रिपोर्ट के अनुसार, बुजदार ने कहा, मैं सेना के साथ खड़ा हूं और भविष्य में भी खड़ा रहूंगा। मैं राजनीति से संन्यास ले रहा हूं। इसके अलावा उन्होंने अपने संबोधन में कहा, निर्दोष लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उनके साथ नरमी बरती जानी चाहिए और उन्हें रिहा किया जाना चाहिए।

समा टीवी की रिपोर्ट के मुताबिक, बुजदार ने कहा कि मैंने अच्छे इरादों के साथ लोगों की सेवा की है और मैं पिछले 14 महीनों से राजनीति में सक्रिय नहीं हूं। जियो न्यूज के मुताबिक, बुजदार ने कहा वह हमेशा पाकिस्तान की सशस्त्र सेना के साथ खड़े थे और आगे भी खड़े रहेंगे। जियो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, कभी इमरान खान के करीबी माने जाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, मैं हमेशा अच्छी राजनीति के लिए प्रतिबद्ध रहा हूं, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों के कारण मैंने राजनीति छोड़ने का फैसला किया है।

इमरान पड़े अलग-थलग

पीटीआई से अपने प्रस्थान की घोषणा करने वाले नेताओं की सूची में पूर्व रक्षा मंत्री परवेज खट्टक और नेशनल असेंबली के पूर्व अध्यक्ष असद कैसर भी शामिल हैं। खैबर पख्तूनख्वा के पूर्व मुख्यमंत्री होने के साथ-साथ प्रांत में पार्टी के अध्यक्ष रहे खट्टक ने कहा, 9 मई को कुछ भी अच्छा नहीं हुआ, मैंने पहले भी इस घटना की निंदा की है, अल्लाह ऐसी घटना को दोबारा होने से रोके।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129